गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका अगस्त-2020 | अंक 1

Limited Access Copy

गुरुत्व ज्योतिष

जन्माष्टमी विशेष

NOT FOR SALE

Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR
For Premium User

गुरुत्व ज्योतिष
मासिक ई-पत्रिका
अगस्त-2020 | अंक 1

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

संपादकीय

रक्षाबंधन- रक्षाबंधन अर्थात्प्रेम का बंधन। रक्षाबंधन के दिन बहन भाई के हाथ पर राखी बाँधती हैं। रक्षाबंधन के साथ हि भाई को अपने निःस्वार्थ प्रेम से बाँधती है।

भारतीय संस्कृति में आज के भौतिकतावादी समाज में भोग और स्वार्थ में लिप्त विश्व में भी प्रायः सभी संबंधों में निःस्वार्थ और पवित्र होता हैं।

भारतीय संस्कृति समग्र मानव जीवन को महानता के दर्शन कराने वाली संस्कृति हैं। भारतीय संस्कृति में स्त्री को केवल मात्र भोगदासी न समझकर उसका पूजन करने वाली महान संस्कृति हैं।

किन्तु आजका पढा लिखा आधुनिक व्यक्ति अपने आपको सुधरा हुवा मानने वाले तथा पाश्चात्य संस्कृति का अंधा अनुकरण करके, स्त्री को समानता दिलाने वाली खोखली भाषा बोलने वालों को पेहल भारत की पारंपरिक संस्कृति को पूर्ण समझ लेना चाहि की पाश्चात्य संस्कृति से तो केवल समानता दिलाई हो परंतु भारतीय संस्कृति ने तो स्त्री का पूजन किया हैं।.

एसे हि नहीं कहाजाता हैं।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

भावार्थः जहाँ स्त्री पूजी जाती है, उसका सम्मान होता है, वहाँ देव रमते हैं- वहाँ देवों का निवास होता है।' ऐसा भगवान मनु का वचन है।

श्री कृष्णजन्माष्टमी को भगवान श्री कृष्ण के जनमोत्स्व के रुप में मनाया जाता है। भगवान श्रीकृष्ण के भगवद गीता में वर्णित उपदेश पुरातन काल से ही हिन्दु संस्कृति में आदर्श रहे हैं। जन्माष्टमी का त्यौहार पुरे विश्व में हर्षोल्लास एवं आस्था से मनाया जाता हैं।

श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मध्यरात्रि को मथुरा में कारागृह में हुवा। जैसे की इस जिन समग्र संसार के पालन कर्ता स्वयं अवतरित हुएं थे। अतः इस दिन को कृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाने की परंपरा सदियों से चली आरही हैं।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के लिए देश-दुनिया के विभिन्न कृष्ण मंदिरों को विशेष तौर पर सजाया जाता है। जन्माष्टमी के दिन व्रती बारह बजे तक व्रत रखते हैं। इस दिन मंदिरों में भगवान श्री कृष्ण की विभिन्न झांकीयां सजाई जाती है और रासलीला का आयोजन होता है। भगवान श्री कृष्ण की बाल स्वरुप प्रतिमा को विभिन्न शृंगार सामग्रीयों से सुसज्जित कर प्रतिमा को पालने में स्थापित कर कृष्ण मध्यरात्री को झूला झुलाया जाता हैं।

धर्मशास्त्रों के जानकारों ने श्रीकृष्णजन्माष्टमीका व्रत सनातन-धर्मावलंबियों के लिए विशेष महत्व पूर्ण बताया है। इस दिन उपवास रखने तथा अन्न का सेवन नहीं करने का विधान धर्मशास्त्रों में वर्णित हैं।

गौतमीतंत्रमें यह उल्लेख है-

उपवासः प्रकर्तव्योन भोक्तव्यंकदाचन।

कृष्णजन्मदिनेयस्तुभुड्क्तेसतुनराधमः।

निवसेन्नरकेघोरेयावदाभूतसम्प्लवम्॥

अर्थात: अमीर-गरीब सभी लोग यथाशक्ति-यथासंभव उपचारों से योगेश्वर कृष्ण का जन्मोत्सव मनाएं। जब तक उत्सव सम्पन्न न हो जाए तब तक भोजन बिल्कुल न करें। जो वैष्णव कृष्णाष्टमी के दिन भोजन करता है, वह निश्चय ही नराधम है। उसे प्रलय होने तक घोर नरक में रहना पडता है।

इसी लिए जन्माष्टमी के दिन भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा का विधि-विधान से पूजन इत्यादि करने का विशेष महत्व सनातन धर्म में रहा हैं। धर्मग्रंथों में जन्माष्टमी की रात्रि में जागरण का विधान भी बताया गया है। विद्वानों का मत हैं की कृष्णाष्टमी की रात में भगवान श्रीकृष्ण के नाम का संकीर्तन इत्यादि करने से भक्त को श्रीकृष्ण की विशेष कृपा प्राप्ति होती हैं। धर्मग्रंथों में जन्माष्टमी के व्रत में पूरे दिन उपवास रखने का नियम है, परंतु इसमें असमर्थ लोग फलाहार कर सकते हैं।

भविष्यपुराण में उल्लेख हैं

जिस राष्ट्र या प्रदेश में यह व्रत-उत्सव विधि-विधान से मनाया जाता है, वहां पर प्राकृतिक प्रकोप या महामारी इत्यादि नहीं होती। मेघ पर्याप्त वर्षा करते हैं तथा फसल खूब होती है। जनता सुख-समृद्धि प्राप्त करती है। इस व्रत के अनुष्ठान से सभी व्रतीयों को परम श्रेय की प्राप्ति होती है। व्रत कर्ता भगवत्कृपा का भागी बनकर इस लोक में सब सुख भोगता है और अन्त में वैकुंठ जाता है। कृष्णाष्टमी का व्रत करने वाले के सभी प्रकार क्लेश दूर हो जाते हैं। उसका दुख-दरिद्रता से उद्धार होता है।

इस मासिक ई-पत्रिका में संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों या अन्य जानकारी के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपको एवं आपके परिवार के सभी सदस्यों को गुरुत्व कार्यालय परिवार की और से हार्दिक शुभकामनाएं ..

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो भगवान श्रीकृष्ण की कृपा आपके परिवार पर बनी रहे। भगवान श्रीकृष्ण से यहीं प्राथना हैं...

जैन बंधु/बहनों कओ पर्यूषण महापर्व की अनेक-अनेक शुभकामनाएं।

गुरुत्व कार्यालय की और से सभी को "मिच्छामी दुक्कडम्"

चिंतन जोशी

***** मासिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा प्रकाशित किये गये सभी लेख, जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

अगस्त 2020 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	शनि	श्रावण	शुक्ल	त्रयोदशी	22:01	मूल	06:48	वैधृति	09:15	कौलव	10:24	धनु	-
2	रवि	श्रावण	शुक्ल	चतुर्दशी	21:32	पूर्वाषाढ़	06:52	विषकुंभ	07:46	गर	09:44	धनु	17:05
3	सोम	श्रावण	शुक्ल	पूर्णिमा	21:28	उत्तराषाढ़	07:18	प्रीति	06:36	विष्टि	09:27	मकर	-
4	मंगल	भाद्रपद	कृष्ण	प्रतिपदा	21:51	श्रवण	08:10	सौभाग्य	29:18	बालव	09:36	मकर	18:38
5	बुध	भाद्रपद	कृष्ण	द्वितीया	22:43	धनिष्ठा	09:30	शोभन	29:13	तैतिल	10:13	कुंभ	-
6	गुरु	भाद्रपद	कृष्ण	तृतीया	24:03	शतभिषा	11:17	अतिगंड	29:31	वणिज	11:19	कुंभ	-
7	शुक्र	भाद्रपद	कृष्ण	चतुर्थी	25:51	पूर्वाभाद्रपद	13:33	सुकर्मा	-	बव	12:54	कुंभ	20:29
8	शनि	भाद्रपद	कृष्ण	पंचमी	28:10	उत्तराभाद्रपद	16:11	सुकर्मा	06:07	कौलव	14:54	मीन	-
9	रवि	भाद्रपद	कृष्ण	षष्ठी	-	रेवति	19:05	धृति	06:59	गर	17:12	मीन	21:36
10	सोम	भाद्रपद	कृष्ण	षष्ठी	06:24	अश्विनी	22:05	शूल	07:57	वणिज	06:24	मेष	-
11	मंगल	भाद्रपद	कृष्ण	सप्तमी	08:47	भरणी	24:56	गंड	08:55	बव	08:47	मेष	-
12	बुध	भाद्रपद	कृष्ण	अष्टमी	10:57	कृतिका	27:26	वृद्धि	09:40	कौलव	10:57	मेष	23:26
13	गुरु	भाद्रपद	कृष्ण	नवमी	12:40	रोहिणि	29:21	ध्रुव	10:05	गर	12:40	वृष	-
14	शुक्र	भाद्रपद	कृष्ण	दशमी	13:46	मृगशिरा	-	व्याघात	09:59	विष्टि	13:46	वृष	00:09
15	शनि	भाद्रपद	कृष्ण	एकादशी	14:07	मृगशिरा	06:35	हर्षण	09:19	बालव	14:07	मिथुन	-

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

16	रवि	भाद्रपद	कृष्ण	द्वादशी	13:41	आद्रा	07:02	वज्र	08:00	तैतिल	13:41	मिथुन	01:51
17	सोम	भाद्रपद	कृष्ण	त्रयोदशी	12:29	पुनर्वसु	06:43	सिद्धि	06:04	वणिज	12:29	कर्क	-
18	मंगल	भाद्रपद	कृष्ण	चतुर्दशी	10:36	पुष्य-आश्लेषा	5:44-28:07	वरियान	24:35	शकुनि	10:36	कर्क	03:51
19	बुध	भाद्रपद	कृष्ण	अमावस्या - प्रतिपदा	08:11 - 29:22	मघा	26:6	परिघ	21:13	नाग	08:11	सिंह	-
20	गुरु	भाद्रपद	शुक्ल	द्वितीया	26:18	पूर्वाफाल्गुनी	23:50	शिव	17:37	बालव	15:51	सिंह	05:58
21	शुक्र	भाद्रपद	शुक्ल	तृतीया	23:11	उत्तराफाल्गुनी	21:28	सिद्धि	13:54	तैतिल	12:45	कन्या	-
22	शनि	भाद्रपद	शुक्ल	चतुर्थी	20:07	हस्त	19:10	साध्य	10:12	वणिज	09:38	कन्या	-
23	रवि	भाद्रपद	शुक्ल	पंचमी	17:17	चित्रा	17:05	शुभ	06:37	बव	06:40	कन्या	09:02
24	सोम	भाद्रपद	शुक्ल	षष्ठी	14:45	स्वाती	15:20	ब्रह्म	24:15	तैतिल	14:45	तुला	-
25	मंगल	भाद्रपद	शुक्ल	सप्तमी -	12:37	विशाखा	13:58	इन्द्र	21:35	वणिज	12:37	तुला	11:05
26	बुध	भाद्रपद	शुक्ल	अष्टमी	10:55	अनुराधा	13:03	वैधृति	19:18	बव	10:55	वृश्चिक	-
27	गुरु	भाद्रपद	शुक्ल	नवमी	09:40	जेष्ठा	12:36	विषकुंभ	17:23	कौलव	09:40	वृश्चिक	13:07
28	शुक्र	भाद्रपद	शुक्ल	दशमी	08:53	मूल	12:37	प्रीति	15:51	गर	08:53	धनु	-
29	शनि	भाद्रपद	शुक्ल	एकादशी	08:30	पूर्वाषाढ़	13:02	आयुष्मान	14:40	विष्टि	08:30	धनु	15:00
30	रवि	भाद्रपद	शुक्ल	द्वादशी	08:32	उत्तराषाढ़	13:51	सौभाग्य	13:48	बालव	08:32	मकर	-
31	सोम	भाद्रपद	शुक्ल	त्रयोदशी	08:56	श्रवण	15:03	शोभन	13:15	तैतिल	08:56	मकर	16:35

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

अगस्त 2020 मासिक व्रत–पर्व–त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	शनि	श्रावण	शुक्ल	त्रयोदशी	22:01	शनि प्रदोष व्रत, आखेटक त्रयोदशी (ओड़ी),
2	रवि	श्रावण	शुक्ल	चतुर्दशी	21:32	शिवपवित्रारोपण चतुर्दशी
3	सोम	श्रावण	शुक्ल	पूर्णिमा	21:28	स्नान-दान-व्रत हेतु उत्तम श्रावणी पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, रक्षाबंधन (राखी), वैदिक उपाकर्म (श्रावणी), संस्कृत दिवस, श्रीसत्यनारायण कथा-पूजा, बलभद्र पूजा, कुलधर्म-कृत्य, श्रीअमरनाथ विशेष दर्शन 2 दिन, झूलनयात्रा समापन, कोकिला व्रत पूर्ण, नारयली पूर्णिमा, लव-कुश जयंती, श्रीदाऊजी एवं रेवती माता का भव्य शृंगार (ब्रज), बृहस्पति महापूजा, गायत्री जयंती, गायत्री पुरश्चरण प्रारंभ
4	मंगल	भाद्रपद	कृष्ण	प्रतिपदा	21:51	भाद्रपद में चातुर्मास के व्रती हेतु दही वर्जित, श्रीमहालक्ष्मी व्रत-पूजा, अशून्यशयन व्रत, हिंडोला समाप्त,
5	बुध	भाद्रपद	कृष्ण	द्वितीया	22:43	विंध्याचली भीमचण्डी जयंती,
6	गुरु	भाद्रपद	कृष्ण	तृतीया	24:03	कज्जली (कजरी) तीज, तीजड़ी (सिन्धी), बूढी तीज, गोपूजा तृतीया, सातूड़ी तीज,
7	शुक्र	भाद्रपद	कृष्ण	चतुर्थी	25:51	संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (चं.उ.रा.9.37), बहुला चतुर्थी,
8	शनि	भाद्रपद	कृष्ण	पंचमी	28:10	श्रीमहाकाल सवारी (उज्जैन), नागपंचमी (गुज), गोगा पंचमी, रक्षापंचमी (उड़ी),
9	रवि	भाद्रपद	कृष्ण	षष्ठी	-	हलषष्ठी व्रत (ललही छठ), चम्पाषष्ठी, रांधण छठ (गुज), चंद्रषष्ठी व्रत,
10	सोम	भाद्रपद	कृष्ण	षष्ठी	06:24	शीतला सप्तमी, ठंडरी का पूजन,
11	मंगल	भाद्रपद	कृष्ण	सप्तमी	08:47	श्रीकृष्णावतार अष्टमी व्रत (स्मार्त), कालाष्टमी व्रत, मोहरात्रि,
12	बुध	भाद्रपद	कृष्ण	अष्टमी	10:57	श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव), गोकुलाष्टमी श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव, नन्दोत्सव दधि कांदौ, संत ज्ञानेश्वर जयंती
13	गुरु	भाद्रपद	कृष्ण	नवमी	12:40	गोगा नवमी
14	शुक्र	भाद्रपद	कृष्ण	दशमी	13:46	
15	शनि	भाद्रपद	कृष्ण	एकादशी	14:07	स्वतंत्रता दिवस, अजा (जया) एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी,
16	रवि	भाद्रपद	कृष्ण	द्वादशी	13:41	प्रदोष व्रत, कलियुगादि तिथि, सिंह-संक्रान्ति, संक्रान्ति का महापुण्य काल संध्या 04:48 से 06:59 रात बजे तक (2 घण्टे 11 मिनट), का पुण्य काल दोपहर 12:25 से 06:59 रात बजे तक (6 घण्टे 34 मिनट) , श्वेतांबर जैन पर्युषण पर्व प्रारंभ,
17	सोम	भाद्रपद	कृष्ण	त्रयोदशी	12:29	मासिक शिवरात्रि व्रत, अघोर चतुर्दशी,

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

18	मंगल	भाद्रपद	कृष्ण	चतुर्दशी	10:36	श्राद्ध हेतु उत्तम भाद्रपदी अमावस्या, कुशोत्पाटनी (कुशग्रहणी) अमावस, पिठौरी अमावस,
19	बुध	भाद्रपद	कृष्ण	अमावस्या - प्रतिपदा	08:11 - 29:22	स्नान-दान हेतु उत्तम भाद्रपदी अमावस्या,
20	गुरु	भाद्रपद	शुक्ल	द्वितीया	26:18	नवीन चंद्र-दर्शन,
21	शुक्र	भाद्रपद	शुक्ल	तृतीया	23:11	हरितालिका तीज व्रत, बड़ी तीज, वाराहावतार जयंती, गौरी तृतीया व्रत, केवड़ा तीज, गौरी तीज (ओड़ीसा), त्रिलोक तीज
22	शनि	भाद्रपद	शुक्ल	चतुर्थी	20:07	सिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत (चं.अ.रा. 8.41), श्रीगणेशोत्सव 11 दिन, श्रीकृष्ण-कलंकनी चतुर्थी, शास्त्रोक्त मत से आज के दिन चंद्रमा का दर्शन सर्वथा निषिद्ध, पत्थर (ढेला) चौथ, चौठ चंद्र (मिथि.), सौभाग्य चतुर्थी (प.बं), शिवा चतुर्थी, सरस्वती पूजा (ओड़ीसा), लक्ष्मी पूजा, जैन संवत्सरी (चतुर्थी पक्ष) (श्वेतांबर जैन), मूलसूत्रवांचन (श्वेतांबर जैन),
23	रवि	भाद्रपद	शुक्ल	पंचमी	17:17	ऋषिपंचमी-मध्याह्न में सप्तर्षि पूजन, गर्ग एवं अंगिरा ऋषि जयंती, आकाश पंचमी (जैन), जैन संवत्सरी (पंचमी पक्ष), गुरु पंचमी (ओड़ीसा), रक्षापंचमी (प.बं), भारतेंदु जयंती, दशलक्षण व्रत 10 दिन एवं पुष्पांजलि व्रत 5 दिन (दिगंबर जैन), आकाश पंचमी (जैन),
24	सोम	भाद्रपद	शुक्ल	षष्ठी	14:45	सूर्यषष्ठी व्रत, लोलार्क षष्ठी (काशी), बलदेव छठ-श्रीबलराम जयंती महोत्सव (ब्रज), ललिता षष्ठी, मंथन षष्ठी (प.बं), स्कन्द कुमार षष्ठी व्रत, सोमनाथ व्रत (ओड़ीसा), चंदनषष्ठी (जैन),
25	मंगल	भाद्रपद	शुक्ल	सप्तमी -	12:37	मुक्ताभरण सप्तमी व्रत, संतान सप्तमी व्रत, ललिता सप्तमी (प.बं-ओड़ीसा), नवाखाई, अपराजिता पूजा, ज्येष्ठानक्षत्र में ज्येष्ठागौरी का पूजन, महालक्ष्मी व्रत-अनुष्ठान प्रारंभ (चंद्रोदय कालीन अष्टमी में), सूर्य सायन तुलाराशि में रात्रि 8.19 बजे, शरद् सम्पात, महाविषुव दिवस, सूर्य दक्षिणी गोलाद्र्ध में, निर्दोष-शीलसप्तमी (दिगंबर जैन),
26	बुध	भाद्रपद	शुक्ल	अष्टमी	10:55	श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी व्रत, श्रीराधाष्टमी व्रतोत्सव (बरसाना-मथुरा), दधीचि जयंती, महारविवार व्रत, मूल नक्षत्र में ज्येष्ठागौरी का विसर्जन, नि:शल्य अष्टमी (दिग.जैन), दुबली आठम (श्वेत.जैन),
27	गुरु	भाद्रपद	शुक्ल	नवमी	09:40	श्रीमद्भागवत जयंती-सप्ताह प्रारंभ, नन्दानवमी, अदुख नवमी, श्रीचंद्र जयंती, तल नवमी (प.बं- ओड़ीसा),
28	शुक्र	भाद्रपद	शुक्ल	दशमी	08:53	दशावतार व्रत, तेजा दशमी, सुगन्ध दशमी (जैन), महारविवार व्रत
29	शनि	भाद्रपद	शुक्ल	एकादशी	08:30	जल झूलनी एकादशी, पद्मा एकादशी, पार्श्व परिवर्तनी एकादशी, परिवर्तिनी एकादशी, धर्मा-कर्मा एकादशी, डोल ग्यारस (म.प्रदेश),
30	रवि	भाद्रपद	शुक्ल	द्वादशी	08:32	द्वादशी व्रत, श्रीवामन अवतार जयंती, भुवनेश्वरी महाविद्या जयंती, श्यामबाबा द्वादशी, गोवत्स द्वादशी, बछवारस (राज.), श्रवण द्वादशी, इन्द्रपूजा प्रारंभ, वामन जयंती,
31	सोम	भाद्रपद	शुक्ल	त्रयोदशी	08:56	प्रदोष व्रत, गोत्रिरात्र व्रत प्रारंभ, रत्नत्रय व्रत 3 दिन (दिगंबर जैन)

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

अगस्त 2020 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
02	सुबह 06:52 से अगले दिन सुबह 05:44 तक	18	प्रात: 05:52 से अगले दिन प्रात: 04:08 तक
03	सुबह 07:19 से अगले दिन सुबह 05:44 तक	26	सुबह 05:56 से दोपहर 01:04 तक
09	रात 07:07 से अगले दिन प्रात: 05:48 तक	30	सुबह 05:58 से दोपहर 01:52 तक
12	रात 12:57 से अगले दिन प्रात: 05:49 तक	31	सुबह 05:59 से दोपहर 03:04 तक
17	प्रात: 06:44 से अगले दिन प्रात: 05:44 तक		
त्रिपुष्कर योग (तीन गुना फल दायक)			
16	सुबह 07:03 से दोपहर 01:50 तक	29	01:03 सेअगले दिन प्रात: 05:48 तक
25	सुबह 05:56 से दोपहर 12:22 तक	30	सुबह 05:58 से सुबह 08:21 तक
द्विपुष्कर योग (दोगुना फल दायक)			
04	रात 09:54 से अगले दिन प्रात:05:45 तक		
विघ्नकारक भद्रा			
02	रात 09:28 से अगले दिन सुबह 09:25 तक	17	दोपहर 12:35 से देर रात 11: 42 तक
06	दोपहर 11:29 से देर रात 12:14 तक	22	सुबह 09:28 से रात 07:57 तक
10	सुबह 06:42 से रात 07:55 तक	25	दोपहर 12:21 से देर रात 11:27 तक
14	देर रात 01:35 से दोपहर 02:01 तक,	28	रात 08:24 से अगले दिन सुबह 08:17 तक

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- अमृत सिद्धि योग अत्यंत शुभ योग में सभी प्रकार के शुभ कार्य किए जा सकते हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

भारतीय संस्कृति में राखी पूर्णिमा का महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

रक्षाबंधन- रक्षाबंधन अर्थात्प्रेम का बंधन। रक्षाबंधन के दिन बहन भाई के हाथ पर राखी बाँधती हैं। रक्षाबंधन के साथ हि भाई को अपने निःस्वार्थ प्रेम से बाँधती है।

भारतीय संस्कृति में आज के भौतिकतावादी समाज में भोग और स्वार्थ में लिप्त विश्व में भी प्रायः सभी संबंधों में निःस्वार्थ और पवित्र होता हैं।

भारतीय संस्कृति समग्र मानव जीवन को महानता के दर्शन कराने वाली संस्कृति हैं। भारतीय संस्कृति में स्त्री को केवल मात्र भोगदासी न समझकर उसका पूजन करने वाली महान संस्कृति हैं।

किन्तु आजका पढा लिखा आधुनिक व्यक्ति अपने आपको सुधरा हुवा मानने वाले तथा पाश्चात्य संस्कृति का अंधा अनुकरण करके, स्त्री को समानता दिलाने वाली खोखली भाषा बोलने वालों को पेहल भारत की पारंपरिक संस्कृति को पूर्ण समझ लेना चाहि की पाश्चात्य संस्कृति से तो केवल समानता दिलाई हो परंतु भारतीय संस्कृति ने तो स्त्री का पूजन किया हैं।

एसे हि नहीं कहाजाता हैं।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

भावार्थ: जहाँ स्त्री पूजी जाती है, उसका सम्मान होता है, वहाँ देव रमते हैं- वहाँ देवों का निवास होता है।' ऐसा भगवान मनु का वचन है।

भारतीय संस्कृति स्त्री की ओर भोग की दृष्टि से न देखकर पवित्र दृष्टि से, माँ की भावना से देखने का आदेश देने वाली सर्व श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति ही हैं।

हजारो वर्ष पूर्व हमारे पूर्वजो नें भारतीय संस्कृति में रक्षाबंधन का उत्सव शायद इस लिये शामिल किया क्योकि रक्षाबंधन के तौहार को दृष्टि परिवर्तन के उद्देश्य से बनाया गया हो?

बहन द्वारा राखी हाथ पर बंधते ही भाई की दृष्टि बदल जाए। राखी बाँधने वाली बहन की ओर वह विकृत दृष्टि न देखे, एवं अपनी बहन का रक्षण भी वह स्वयं करे। जिस्से बहन समाज में निर्भय होकर घूम सके। विकृत दृष्टि एवं मानसिकता वाले लोग उसका मजाक उड़ाकर नीच वृत्ति वाले लोगो को दंड देकर सबक सिखा सके हैं।

भाई को राखी बाँधने से पहले बहन उसके मस्तिष्क पर तिलक करती हैं। उस समय बहन भाई के मस्तिष्क की पूजा नहीं अपितु भाई के शुद्ध विचार और बुद्धि को निर्मल करने हेतु किया जाता हैं, तिलक लगाने से दृष्टि परिवर्तन की अद्भुत प्रक्रिया समाई हुई होती हैं।

भाई के हाथ पर राखी बाँधकर बहन उससे केवल अपना रक्षण ही नहीं चाहती, अपने साथ-साथ समस्त स्त्री जाति के रक्षण की कामना रखती हैं, इस के साथ हिं अपना भाई बाह्य शत्रुओं और अंतर्विकारों पर विजय प्राप्त करे और सभी संकटो से उससे सुरक्षित रहे, यह भावना भी उसमें छिपी होती हैं। वेदों में उल्लेख है कि देव और असुर संग्राम में देवों की विजय प्राप्ति कि कामना के निमित्त देवि इंद्राणी ने हिम्मत हारे हुए इंद्र के हाथ में हिम्मत बंधाने हेतु राखी बाँधी थी। एवं देवताओं की विजय से रक्षाबंधन का त्योहार शुरू हुआ। अभिमन्यु की रक्षा के निमित्त कुंतामाता ने उसे राखी बाँधी थी।

इसी संबंध में एक और किंवदंती प्रसिद्ध है कि देवताओं और असुरों के युद्ध में देवताओं की विजय को लेकर कुछ संदेह होने लगा। तब देवराज इंद्र ने इस युद्ध

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

में प्रमुखता से भाग लिया था। देवराज इंद्र की पत्नी इंद्राणी श्रावण पूर्णिमा के दिन गुरु बृहस्पति के पास गई थी तब उन्होंने विजय के लिए रक्षाबंधन बाँधने का सुझाव दिया था। जब देवराज इंद्र राक्षसों से युद्ध करने चले तब उनकी पत्नी इंद्राणी ने इंद्र के हाथ में रक्षाबंधन बाँधा था, जिससे इंद्र विजयी हुए थे।

अनेक पुराणों में श्रावणी पूर्णिमा को पुरोहितों द्वारा किया जाने वाला आशीर्वाद कर्म भी माना जाता है। ये ब्राह्मणों द्वारा यजमान के दाहिने हाथ में बाँधा जाता है।

पुराणों में ऐसी भी मान्यता है कि महर्षि दुर्वासा ने ग्रहों के प्रकोप से बचने हेतु रक्षाबंधन की व्यवस्था दी थी। महाभारत युग में भगवान श्रीकृष्ण ने भी ऋषियों को पूज्य मानकर उनसे रक्षा-सूत्र बँधवाने को आवश्यक माना था ताकि ऋषियों के तप बल से भक्तों की रक्षा की जा सके। ऐतिहासिक कारणों से मध्ययुगीन भारत में रक्षाबंधन का पर्व मनाया जाता था। शायद हमलावरों की वजह से महिलाओं के शील की रक्षा हेतु इस पर्व की महत्ता में इजाफा हुआ हो। तभी महिलाएँ सगे भाइयों या मुँहबोले भाइयों को रक्षासूत्र बाँधने लगीं। यह एक धर्म-बंधन था। रक्षाबंधन पर्व पुरोहितों द्वारा किया जाने वाला आशीर्वाद कर्म भी माना जाता है। ये ब्राह्मणों द्वारा यजमान के दाहिने हाथ में बाँधा जाता है।

रक्षाबंधन का एक मंत्र भी है, जो पंडित रक्षा-सूत्र बाँधते समय पढ़ते हैं :

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचलः॥

भविष्योत्तर पुराण में राजा बलि (श्रीरामचरित मानस के बालि नहीं) जिस रक्षाबंधन में बाँधे गए थे, उसकी कथा अक्सर उद्धृत की जाती है। बलि के संबंध में विष्णु के पाँचवें अवतार (पहला अवतार मानवों में राम थे) वामन की कथा है कि बलि से संकल्प लेकर उन्होंने तीन कदमों में तीनों लोकों में सबकुछ नाप लिया था। वस्तुतः दो ही कदमों में वामन रूपी विष्णु ने सबकुछ नाप लिया था और फिर तीसरे कदम,जो बलि के सिर पर रखा था, उससे उसे पाताल लोक पहुँचा दिया था। लगता है रक्षाबंधन की परंपरा तब से किसी न किसी रूप में विद्यमान थी।

ई- जन्म पत्रिका	E HOROSCOPE
अत्याधुनिक ज्योतिष पद्धति द्वारा उत्कृष्ट भविष्यवाणी के साथ १००+ पेज में प्रस्तुत	Create By Advanced Astrology Excellent Prediction 100+ Pages

हिंदी/ English में मूल्य मात्र 910/-

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

राखी पूर्णिमा से जुडि पौराणिक कथाएं

संकलन गुरुत्व कार्यालय

वामनावतार कथा

पोराणिक कथा के अनुशार एकबार सौ यज्ञ पूर्ण कर लेने पर दानवो के राजा बलि के मन में स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा प्रबल हो गई तो इन्द्र का सिंहासन डोलने लगा। इन्द्र आदि देवताओं ने भगवान विष्णु से रक्षा की प्रार्थना की। भगवान ने वामन अवतार लेकर ब्राह्मण का वेष धारण कर लिया और राजा बलि से भिक्षा मांगने पहुँच गए। भगवान विष्णुने बलि से तीन पग भूमि भिक्षा में मांग ली।

बलि के गुरु शुक्रदेवजी ने ब्राह्मण रुप धारण किए हुए श्री विष्णु को पहचान लिया और बलि को इस बारे में सावधान कर दिया किंतु बलि अपने वचन से न फिरे और तीन पग भूमि दान कर दी।

अब वामन रूप में भगवान विष्णु ने एक पग में स्वर्ग और दूसरे पग में पृथ्वी को नाप लिया। तीसरा पैर कहाँ रखें? बलि के सामने संकट उत्पन्न हो गया। यदि वह अपना वचन नहीं निभाता तो अधर्म होता। आखिरकार उसने अपना सिर भगवान के आगे कर दिया और कहा तीसरा पग आप मेरे सिर पर रख दीजिए। वामन भगवान ने वैसा ही किया। पैर रखते ही वह रसातल लोक में पहुँच गया।

जब बाली रसातल में चला गया तब बलि ने अपनी भक्ति के बल से भगवान को रात-दिन अपने सामने रहने का वचन ले लिया और भगवान विष्णु को उनका द्वारपाल बनना पड़ा। भगवान के रसातल निवास से परेशान कि यदि स्वामी रसातल में द्वारपाल बन कर निवास करेंगे तो बैकुंठ लोक का क्या होगा? इस समस्या के समाधान के लिए लक्ष्मी जी को नारद जी ने एक उपाय सुझाया। लक्ष्मी जी ने राजा बलि के पास जाकर उसे रक्षाबन्धन बांधकर अपना भाई बनाया और उपहार स्वरुप अपने पति भगवान विष्णु को अपने साथ ले आयीं। उस दिन श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि थी यथा रक्षा-बंधन मनाया जाने लगा।
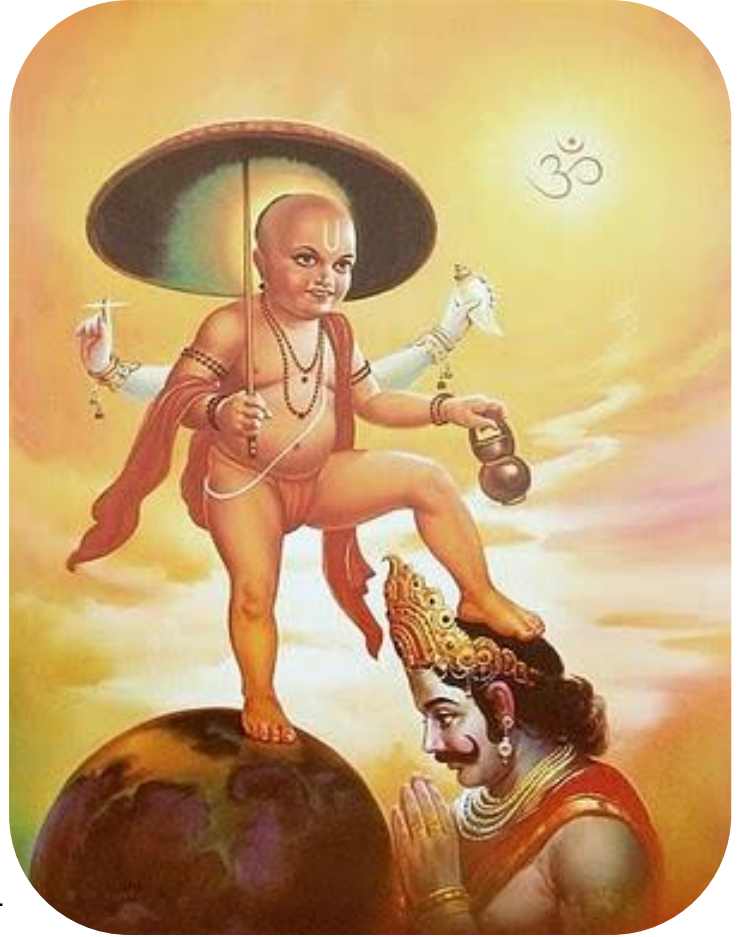
धन वृद्धि डिब्बी

धन वृद्धि डिब्बी को अपनी अलमारी, कैश बोक्स, पूजा स्थान में रखने से धन वृद्धि होती हैं जिसमें **काली हल्दी**, लाल- पीला-सफेद लक्ष्मी कारक हकीक (अकीक), लक्ष्मी कारक स्फटिक रत्न, 3 पीली कौडी, 3 सफेद कौडी, गोमती चक्र, सफेद गुंजा, रक्त गुंजा, काली गुंजा, माया जाल, इत्यादी दुर्लभ वस्तुओं को शुभ महुर्त में तेजस्वी मंत्र द्वारा अभिमंत्रित किय जाता हैं।

मूल्य मात्र **Rs-730 >>** Order Now

भविष्य पुराण की कथा

भविष्य पुराण की एक कथा के अनुसार एक बार देवता और दानवों में बारह वर्षों तक युद्ध हुआ परन्तु देवता विजयी नहीं हुए। इंद्र हार के भय से दु:खी होकर देवगुरु बृहस्पति के पास विमर्श हेतु गए। गुरु बृहस्पति के सुझाव पर इंद्र की पत्नी महारानी शची ने श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन विधि-विधान से व्रत करके रक्षासूत्र तैयार किए और स्वास्तिवाचन के साथ ब्राह्मण की उपस्थिति में इंद्राणी ने वह सूत्र इंद्र की दाहिनी कलाई में बांधा जिसके फलस्वरुप इन्द्र सहित समस्त देवताओं की दानवों पर विजय हुई। रक्षा विधान के समय निम्न जिस मंत्र का उच्चारण किया गया था उस मंत्र का आज भी विधिवत पालन किया जाता है:

"येन बद्धोबली राजा दानवेन्द्रो महाबल: ।
तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ।।"

इस मंत्र का भावार्थ है कि दानवों के महाबली राजा बलि जिससे बांधे गए थे, उसी से तुम्हें बांधता हूँ। हे रक्षे! (रक्षासूत्र) तुम चलायमान न हो, चलायमान न हो। यह रक्षा विधान श्रवण मास की पूर्णिमा को प्रातः काल संपन्न किया गया यथा रक्षा-बंधन अस्तित्व में आया और श्रवण मास की पूर्णिमा को मनाया जाने लगा।

महाभारत संबंधी कथा

महाभारत काल में द्रौपदी द्वारा श्री कृष्ण को तथा कुन्ती द्वारा अभिमन्यु को राखी बांधने के वृत्तांत मिलते हैं। महाभारत में ही रक्षाबंधन से संबंधित कृष्ण और द्रौपदी का एक और वृत्तांत मिलता है। जब कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध किया तब उनकी तर्जनी में चोट आ गई। द्रौपदी ने उस समय अपनी साड़ी फाड़कर उनकी उँगली पर पट्टी बाँध दी। यह श्रावण मास की पूर्णिमा का दिन था। श्रीकृष्ण ने बाद में द्रौपदी के चीर-हरण के समय उनकी लाज बचाकर भाई का धर्म निभाया था।

Kamiya Sindoor Available
in Natural Solid Rock Shape
7 Gram to 100 Gram Pack Available
*Powder Also Available
Kamiya Sindoor Use in Various Religious Pooja, Sadhana and Customize Wish Fulfillment
GURUTVA KARYALAY
Call Us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
or Shop Online @ www.gurutvakaryalay.com

भगवान श्रीविष्णु के आठवें अवतार श्रीकृष्ण

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्म में श्रीकृष्ण भगवान श्रीविष्णु के आठवें अवतार माने जाते हैं।

श्रीकृष्ण को गोपाल, कन्हैया, श्याम, केशव, द्वारकाधीश तथा वासुदेव इत्यादि विभिन्न नामों से जाना जाता हैं। हिन्दू धर्म में श्रीकृष्ण को एक आदर्श, निष्काम कर्मयोगी एवं विपुल दैवी संपदाओं से परिपूर्ण मान जाता हैं। श्रीकृष्ण का जन्म द्वापरयुग में हुआ था। श्रीकृष्ण को उस दौर के सर्वश्रेष्ठ पुरुष या युगपुरुष या युगावतार मान जाता हैं।

श्रीकृष्ण वसुदेव और देवकी की 8वीं संतान माना गया हैं। श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा के कारावास में हुआ था और गोकुल में यशोदा और नन्द उनका लालन-पालन किया था।

श्रीकृष्ण का बचपन गोकुल में ही व्यतित हुआ था। श्रीकृष्ण ने बाल्य अवस्था में ही बड़े से बड़े साहसी कार्य किये जिसे करना किसी साधारण मनुष्य के लिए असम्भव हैं। श्रीकृष्ण नें मथुरा में अपने मामा कंस का वध किया था। श्रीकृष्ण ने गुजरात के सौराष्ट्र में द्वारका नगरी में अपना राज्य बसाया।

महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित धर्मग्रंथ श्रीमद्भागवत और महाभारत में श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र का विस्तृत वर्णन किया गया है।

श्रीमद्भगवदगीता में श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवाद का वर्णन मिलता है, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया जिसमें मनुष्य जीवन की हर समस्या का हल छिपा है। गीता के 18 अध्याय और 700 श्लोक में धर्म, कर्म, कर्मफल, जन्म, मृत्यु, सत्य, असत्य आदि जीवन से जुड़े विभिन्न प्रश्नों के उत्तर मौजूद हैं।

श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता के श्लोक उस समय सुनाये जब महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन युद्ध करने से मना करते हैं तब श्री कृष्ण अर्जुन को गीता के श्लोक सुनाते हैं और कर्म एंव धर्म के सनातन ज्ञान से अवगत कराते हैं। श्रीकृष्ण के इन्हीं उपदेशों को भगवत गीता में संग्रहित किया गया है। कौरवों व पांडवों के बीच हुवे महाभारत के युद्ध के दौरान श्रीकृष्ण ने अर्जुन के सारथी की भूमिका निभाई और अर्जुन को भगवद्गीता का ज्ञान दिया। युद्ध में श्री कृष्ण ने अर्जुन को दिये गये परम दुर्लभ उपदेशों के कारण श्रीकृष्ण को जगतगुरु का सम्मान दिया जाता है।

श्रीमद्भगवदगीता को श्री कृष्ण की जीवन की सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है। श्रीकृष्ण नें पांडवों की समय-समय पर मदद की और उनकी विभिन्न आपत्तियों में सहायता कर उनकी रक्षा की। श्रीकृष्ण नें 124 वर्षों के अपने जीवनकाल में अनगिनत लीलाएं की पश्च्यात उन्होंने अपनी लीला समाप्त की।

Natural 2 Mukhi Rudraksha
1 Kg Seller Pack
or
100 Pcs Seller Pack
Size : Assorted 20 mm to 35 mm and above
GURUTVA KARYALAY
Call Us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
or Shop Online @ www.gurutvakaryalay.com

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

हिन्दू संस्कृति में कृष्ण जन्माष्टमी व्रत का महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्री कृष्णजन्माष्टमी को भगवान श्री कृष्ण के जनमोत्स्व के रुप में मनाया जाता है। भगवान श्रीकृष्ण के भगवद गीता में वर्णित उपदेश पुरातन काल से ही हिन्दु संस्कृति में आदर्श रहे हैं। जन्माष्टमी का त्यौहार पुरे विश्व में हर्षोल्लास एवं आस्था से मनाया जाता हैं। श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मध्यरात्रि को मथुरा में कारागृह में हुवा। जैसे की इस जिन समग्र संसार के पालन कर्ता स्वयं अवतरित हुएं थे। अत: इस दिन को कृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाने की परंपरा सदियों से चली आरही हैं।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के लिए देश-दुनिया के विभिन्न कृष्ण मंदिरों को विशेष तौर पर सजाया जाता है। जन्माष्टमी के दिन व्रती बारह बजे तक व्रत रखते हैं। इस दिन मंदिरों में भगवान श्री कृष्ण की विभिन्न झांकीयां सजाई जाती है और रासलीला का आयोजन होता है। भगवान श्री कृष्ण की बाल स्वरुप प्रतिमा को विभिन्न शृंगार सामग्रीयों से सुसज्जित कर प्रतिमा को पालने में स्थापित कर कृष्ण मध्यरात्री को झूला झुलाया जाता हैं।

धर्मशास्त्रों के जानकारों ने श्रीकृष्णजन्माष्टमीका व्रत सनातन-धर्मावलंबियों के लिए विशेष महत्व पूर्ण बताया है। इस दिन उपवास रखने तथा अन्न का सेवन नहीं करने का विधान धर्मशास्त्रों में वर्णित हैं।

गौतमीतंत्रमें यह उल्लेख है-

उपवासः प्रकर्तव्योन भोक्तव्यंकदाचन।
कृष्णजन्मदिनेयस्तुभुङ्क्तेसतुनराधमः।
निवसेन्नरकेघोरेयावदाभूतसम्प्लवम्॥

अर्थात: अमीर-गरीब सभी लोग यथाशक्ति-यथासंभव उपचारों से योगेश्वर कृष्ण का जन्मोत्सव मनाएं। जब तक उत्सव सम्पन्न न हो जाए तब तक भोजन बिल्कुल न करें। जो वैष्णव कृष्णाष्टमी के दिन भोजन करता है, वह निश्चय ही नराधम है। उसे प्रलय होने तक घोर नरक में रहना पडता है।

इसी लिए जन्माष्टमी के दिन भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा का विधि-विधान से पूजन इत्यादि करने का विशेष महत्व सनातन धर्म में रहा हैं।

धर्मग्रंथों में जन्माष्टमी की रात्रि में जागरण का विधान भी बताया गया है। विद्वानों का मत हैं की कृष्णाष्टमी की रात में भगवान श्रीकृष्ण के नाम का संकीर्तन इत्यादि करने से भक्त को श्रीकृष्ण की विशेष कृपा प्राप्ति होती हैं। धर्मग्रंथों में जन्माष्टमी के व्रत में पूरे दिन उपवास रखने का नियम है, परंतु इसमें असमर्थ लोग फलाहार कर सकते हैं।

भविष्यपुराण में उल्लेख हैं

जिस राष्ट्र या प्रदेश में यह व्रत-उत्सव विधि-विधान से मनाया जाता है, वहां पर प्राकृतिक प्रकोप या महामारी इत्यादि नहीं होती। मेघ पर्याप्त वर्षा करते हैं

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

तथा फसल खूब होती है। जनता सुख-समृद्धि प्राप्त करती है। इस व्रत के अनुष्ठान से सभी व्रतीयों को परम श्रेय की प्राप्ति होती है। व्रत कर्ता भगवत्कृपा का भागी बनकर इस लोक में सब सुख भोगता है और अन्त में वैकुंठ जाता है। कृष्णाष्टमी का व्रत करने वाले के सभी प्रकार क्लेश दूर हो जाते हैं। उसका दुख-दरिद्रता से उद्धार होता है।

स्कन्द पुराण में उल्लेख हैं कि जो भी व्यक्ति इस व्रत के महत्व को जानकर भी कृष्ण जन्माष्टमी व्रत को नहीं करता, वह मनुष्य जंगल में सर्प और व्याघ्र होता है।

भविष्य पुराण उल्लेख हैं, कि कृष्ण जन्माष्टमी व्रत को जो मनुष्य नहीं करता, वह क्रूर राक्षस होता है। केवल अष्टमी तिथि में ही उपवास करना कहा गया है। यदि वही तिथि रोहिणी नक्षत्र से युक्त हो तो उसे 'जयंती' नाम से संबोधित की जाएगी।

विभिन्न धर्मशास्त्रों में उल्लेख हैं, कि जो उत्तम मनुष्य है। वे निश्चित रूप से जन्माष्टमी व्रत को इस लोक में करते हैं। उनके पास सदैव स्थिर लक्ष्मी होती है। इस व्रत के करने के प्रभाव से उनके समस्त कार्य सिद्ध होते हैं।

यदि आधी रात के समय रोहिणी में जब कृष्णाष्टमी हो तो उसमें कृष्ण का अर्चन और पूजन करने से तीन जन्मों के पापों का नाश होता है। महर्षि भृगु ने कहा है- जन्माष्टमी, रोहिणी और शिवरात्रि ये पूर्वविद्धा ही करनी चाहिए तथा तिथि एवं नक्षत्र के अन्त में पारणा करें। इसमें केवल रोहिणी उपवास ही सिद्ध है।

शास्त्रकारों नें श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी की रात्रि को **मोहरात्रि** कहा है। इस रात में भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान, नाम अथवा मंत्र जपते हुए जागरण करने से संसार की मोह-माया से आसक्ति दूर होती है। जन्माष्टमी के व्रत को व्रतराज कहां गया है। क्योकि, इस व्रत को पूर्ण विधि-विधान से करने से मनुष्य को अनेक व्रतों से प्राप्त होने वाले महान पुण्य का फल केवल इस व्रत के करने से प्राप्त हो जाता है ।

अमोघ महामृत्युंजय कवच

अमोघ् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा **सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र** जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं।

अमोघ् महामृत्युंजय कवच
कवच बनवाने हेतु:
अपना नाम, पिता-माता का नाम,
गोत्र, एक नया फोटो भेजे

अमोघ् महामृत्युंजय कवच
दक्षिणा मात्र: 10900

कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। >> Order Now

GURUTVA KARYALAY
91+ 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Website: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |

श्रीकृष्ण की गुरूसेवा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

सहस्त्र मुखो से भी गुरु की महिमा बखाण ना संभव नहीं हैं। क्योकी गुरु की महिमा अपरंपार हैं। इसी लिये तो स्वयं भगवान को भी जगत के कल्याणा हेतु जब मानवरूप में अवतरित होना पडता हैं तो ज्ञान प्राप्ति हेतु गुरू की आवश्यक्ता होती हैं।

पौराणिक शास्त्रो के अनुशार द्वापर युग में जब भगवान श्रीकृष्ण जब भूलोक पर अवतरित हुएं। कालांतर में कंस का विनाश होने के पश्चयात भगवान श्रीकृष्ण ने शास्त्रोक्त विधि-विधान से अपने हाथ में समिधा लेकर अपने गुरू श्रीसांदीपनी के आश्रम में गये। गुरुआश्रम में श्रीकृष्ण भक्तिपूर्वक गुरू की सेवा करने लगे। गुरू आश्रम में सेवा करते हुए भगवान श्रीकृष्ण ने वेद-वेदांग, उपनिषद, मीमांसादि षड्दर्शन, अस्त्र-शस्त्रविद्या, धर्मशास्त्र और राजनीति आदि अनेको विद्याएं प्राप्त की। श्रीकृष्ण नें अपनी प्रखर बुद्धि के कारण गुरू के एक बारबताने मात्र से ही सब सीख लिया। विष्णुपुराण के अनुशार श्रीकृष्ण ने 64 कलाएँ केवल64 दिन में ही सीख लीं। जब विद्या अभ्यास पूर्ण हुआ, तब श्रीकृष्ण ने गुरूदेव से दक्षिणा हेतु अनुरोध किया। श्रीकृष्णः "गुरूदेव ! आज्ञा कीजिए, मैं आपकी क्या सेवा करूँ ?" गुरूः "कोई आवश्यकता नहीं है।" श्रीकृष्णः "गुरूदेव आपको तो कुछ नहीं चाहिए, किंतु हमें दिये बिना चैन नहीं पड़ेगा। कुछ तो आज्ञा करें !" गुरूः "अच्छा जाओ, अपनी गुरू माँ से पूछ लो।" श्रीकृष्ण गुरूपत्नी के पास गये और बोलेः "माँ ! कोई सेवा हो तो बताइये।"

गुरूपत्नी जानती थीं कि श्रीकृष्ण कोई साधारण मानव नहीं स्वयं भगवान हैं, अतः वे बोलीः "मेरा पुत्र प्रभास क्षेत्र में मर गया है। उसे लाकर दे दो ताकि मैं उसे पयः पान करा सकूँ।"

श्रीकृष्ण बोलेः "जो आज्ञा।"

श्रीकृष्ण रथ पर सवार होकर प्रभास क्षेत्र पहुँचे। समुद्र ने उन्हें देखकर उनकी यथायोग्य पूजा की। श्रीकृष्ण बोलेः "तुमने अपनी बड़ी बड़ी लहरों से हमारे गुरूपुत्र को हर लिया था। अब उसे शीघ्र लौटा दो।"

समुद्रः "मैंने बालक को नहीं हरा है, मेरे भीतर शंखरूप से पंचजन नामक एक बड़ा दैत्य रहता है, निसंदेह उसी ने आपके गुरूपुत्र का हरण किया है।"

श्रीकृष्ण ने उसीक्षण जल के भीतर घुसकर पंचजन नामक दैत्य को मार डाला, पर उसके पेट में गुरूपुत्र नहीं मिला। तब उसके शरीर का पांचजन्य शंख लेकर श्रीकृष्ण जल से बाहर निकल कर यमराज की यमनी पुरी में गये। वहाँ भगवान ने उस शंख को बजाया। कथा कहती हैं कि शंख ध्वनि को सुनकर नारकीय जीवों के पाप नष्ट हो गये और वे सभी जीव वैकुंठ पहुँच गये।

यमराज ने श्रीकृष्ण को देखकर उनकी बड़ी भक्ति के साथ पूजा की और प्रार्थना करते हुए कहाः "हे पुरूषोत्तम ! मैं आपकी क्या सेवा करूँ ?"

श्रीकृष्णः "तुम्हारे दूत कर्मबंधन के अनुसार हमारे गुरूपुत्र को यहाँ ले आये हैं। उसे मेरी आज्ञा से वापस दे दो।"
'जो आज्ञा' कहकर यमराज उस बालक को ले आये।
श्रीकृष्ण ने गुरूपुत्र को, जिस रुप में वह मरा था उसी रुपमें पूनः उसका शरीर बनाकर, रत्नादि के साथ गुरूचरणों में अर्पित कर दिया।
श्रीकृष्ण ने कहाः"गुरूदेव ! और जो कुछ भी आप चाहें, आज्ञा करें।"
गुरूदेवः "वत्स ! तुमने अपनी गुरूदक्षिणा भली प्रकार से संपन्न कर दी। तुम्हारे जैसे शिष्य से गुरू की कौन-सी कामना अवशेष रह सकती है?
वत्स ! अब तुम अपने घर जाओ।

गुरूदेव ने श्रीकृष्ण को आशिर्वाद देते हुवे कहां वत्स ! तुम्हारी कीर्ति श्रोताओं को पवित्र करने वाली होगी और तुम्हारे द्वारा **अर्जित ज्ञान व विद्या हर समय उपस्थित और नवीन बनी रहकर सभीलोक में तुम्हारे अभीष्ट फल को देने में समर्थ हों।"**

कनकधारा यंत्र

आज के भौतिक युग में हर व्यक्ति अतिशीघ्र समृद्ध बनना चाहता हैं। कनकधारा यंत्र कि पूजा अर्चना करने से व्यक्ति के जन्मों जन्म के ऋण और दरिद्रता से शीघ्र मुक्ति मिलती हैं। यंत्र के प्रभाव से व्यापार में उन्नति होती हैं, बेरोजगार को रोजगार प्राप्ति होती हैं। कनकधारा यंत्र अत्यंत दुर्लभ यंत्रो में से एक यंत्र हैं जिसे मां लक्ष्मी कि प्राप्ति हेतु अचूक प्रभावा शाली माना गया हैं। कनकधारा यंत्र को विद्वानो ने स्वयंसिद्ध तथा सभी प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करने में समर्थ माना हैं। आज के युग में हर व्यक्ति अतिशीघ्र समृद्ध बनना चाहता हैं। धन प्राप्ति हेतु प्राण-प्रतिष्ठित कनकधारा यंत्र के सामने बैठकर कनकधारा स्तोत्र का पाठ करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। इस कनकधारा यंत्र कि पूजा अर्चना करने से ऋण और दरिद्रता से शीघ्र मुक्ति मिलती हैं। व्यापार में उन्नति होती हैं, बेरोजगार को रोजगार प्राप्ति होती हैं। जैसे श्री आदि शंकराचार्य द्वारा कनकधारा स्तोत्र कि रचना कुछ इस प्रकार की गई हैं, कि जिसके श्रवण एवं पठन करने से आस-पास के वायुमंडल में विशेष अलौकिक दिव्य उर्जा उत्पन्न होती हैं। ठिक उसी प्रकार से कनकधारा यंत्र अत्यंत दुर्लभ यंत्रो में से एक यंत्र हैं जिसे मां लक्ष्मी कि प्राप्ति हेतु अचूक प्रभावा शाली माना गया हैं। कनकधारा यंत्र को विद्वानो ने स्वयंसिद्ध तथा सभी प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करने में समर्थ माना हैं। जगद्गुरु शंकराचार्य ने दरिद्र ब्राह्मण के घर कनकधारा स्तोत्र के पाठ से स्वर्ण वर्षा कराने का उल्लेख ग्रंथ शंकर दिग्विजय में मिलता हैं। कनकधारा मंत्र:- ॐ वं श्रीं वं ऐं ह्रीं-श्रीं क्लीं कनक धारयै स्वाहा' >> Order Now

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

कृष्ण जन्माष्टमी व्रत की पौराणिक कथा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक बार इंद्र ने नारद जी से कहा "हे मुनियों में सर्वश्रेष्ठ, सभी शास्त्रों के ज्ञाता, हे देव, व्रतों में उत्तम उस व्रत को बताएँ, जिस व्रत के करने से मनुष्यों को मुक्ति, लाभ प्राप्त हो तथा उस व्रत से प्राणियों को भोग व मोक्ष दोनो की प्राप्ति हो जाए।"
देवराज इंद्र के वचनों को सुनकर नारद जी ने कहा "त्रेता युग के अंत में और द्वापर युग के प्रारंभ समय में धृणित कर्म को करने वाला कंस नाम का एक अत्यंत पापी दैत्य हुआ। उस दुष्ट व दुराचारी कंस की देवकी नाम की एक सुंदर व सुशील बहन थी। उस देवकी के गर्भ से उत्पन्न आठवाँ पुत्र कंस का वध करेगा।"
नारद जी की बातें सुनकर इंद्र ने कहा हे प्रभो "उस दुराचारी कंस की कथा का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए। क्या देवकी के गर्भ से उत्पन्न आठवाँ पुत्र अपने मामा कंस की हत्या करेगा! यह संभव है।" इंद्र की सन्देह भरी बातों को सुनकर नारदजी ने कहा हे अदिति पुत्र इंद्र! एक समय की बात है। उस दुष्ट कंस ने एक ज्योतिषी से पूछा "मेरी मृत्यु किस प्रकार और किसके द्वारा होगी।" ज्योतिषी बोले "हे दानवों में श्रेष्ठ कंस! "वसुदेव की पत्नी देवकी है और आपकी बहन भी है। उसी के गर्भ से उत्पन्न उसका आठवां पुत्र जो कि शत्रुओं को पराजित कर इस संसार में "कृष्ण" के नाम से विख्यात होगा, वही एक समय सूर्योदय काल में आपका वध करेगा।" ज्योतिषी की बातों को सुनकर कंस ने कहा "हे दैवज, अब आप यह बताएं कि देवकी का आठवां पुत्र किस मास में किस दिन मेरा वध करेगा।" ज्योतिषी बोले "हे महाराज! माघ मास की शुक्ल पक्ष की तिथि को सोलह कलाओं से पूर्ण श्रीकृष्ण से आपका युद्ध होगा। उसी युद्ध में वे आपका वध करेंगे। इसलिए हे महाराज! आप अपनी रक्षा यत्नपूर्वक करें।"

इतना बताने के पश्चात नारद जी ने इंद्र से कहा "ज्योतिषी द्वारा बताए गए समय पर ही कंस की मृत्यु कृष्ण के हाथ निःसंदेह होगी।" तब इंद्र ने कहा "हे मुनि! उस दुराचारी कंस की कथा का वर्णन कीजिए, और बताइए कि कृष्ण का जन्म कैसे होगा तथा कंस की मृत्यु कृष्ण द्वारा किस प्रकार होगी।"

इंद्र की बातों को सुनकर नारदजी ने पुनः कहना प्रारंभ किया "उस दुराचारी कंस ने अपने एक द्वारपाल से कहा मेरी इस प्राणों से प्रिय बहन देवकी की पूर्ण सुरक्षा करना।" द्वारपाल ने कहा "ऐसा ही होगा महाराज।" कंस के जाने के पश्चात उसकी छोटी बहन देवकी दुःखित होते हुए जल लेने के बहाने घड़ा लेकर तालाब पर गई। उस तालाब के किनारे एक वृक्ष के नीचे बैठकर देवकी रोने लगी। उसी समय एक सुंदर स्त्री, जिसका नाम यशोदा था, उसने आकर देवकी से प्रिय वाणी में कहा "हे देवी! इस प्रकार तुम क्यों विलाप कर रही हो। अपने रोने का कारण मुझसे बताओ।" तब दुखी देवकी ने यशोदा से कहा "हे बहन! नीच कर्मों में आसक्त दुराचारी मेरा ज्येष्ठ भ्राता कंस है।

उस दुष्ट भ्राता ने मेरे कई पुत्रों का वध कर दिया। इस समय मेरे गर्भ में आठवाँ पुत्र है। वह इसका भी वध कर डालेगा, क्योंकि मेरे ज्येष्ठ भ्राता को यह भय है कि मेरे अष्टम पुत्र से उसकी मृत्यु अवश्य होगी।"

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY
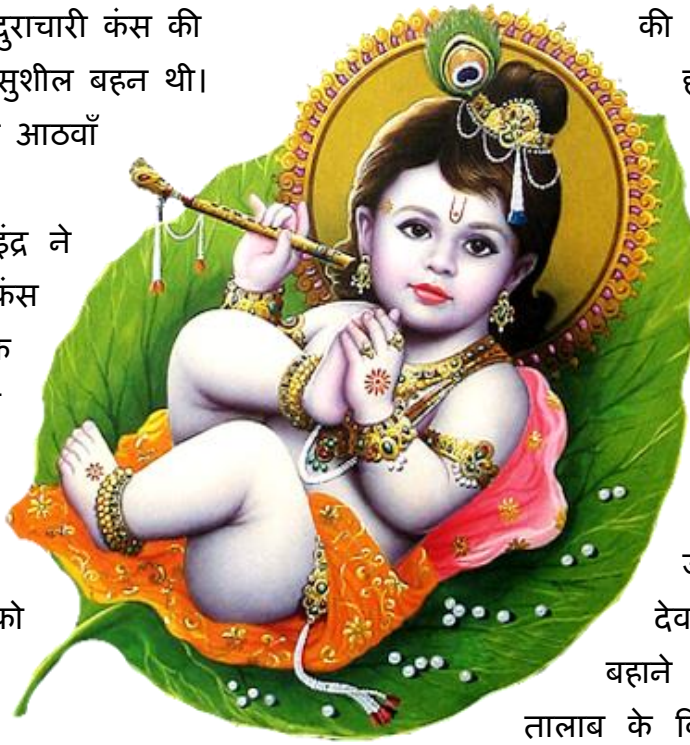
देवकी की बातें सुनकर यशोदा ने कहा "हे बहन! विलाप मत करो। मैं भी गर्भवती हूँ। यदि मुझे कन्या हुई तो तुम अपने पुत्र के बदले उस कन्या को ले लेना। इस प्रकार तुम्हारा पुत्र कंस के हाथों मारा नहीं जाएगा।"

कंस ने वापस आकर अपने द्वारपाल से पूछा "देवकी कहाँ है? इस समय वह दिखाई नहीं दे रही है।" तब द्वारपाल ने कंस से नम्रवाणी में कहा "हे महाराज! आपकी बहन जल लेने तालाब पर गई हुई हैं।" यह सुनते ही कंस क्रोधित हो उठा और उसने द्वारपाल को उसी स्थान पर जाने को कहा जहां वह गई हुई है। द्वारपाल की दृष्टि तालाब के पास देवकी पर पड़ी। तब उसने कहा कि "आप किस कारण से यहाँ आई हैं।" उसकी बातें सुनकर देवकी ने कहा कि "मेरे घर में जल नहीं था, मैं जल लेने जलाशय पर आई हूँ।" इसके पश्चात देवकी अपने घर की ओर चली गई।

कंस ने पुनः द्वारपाल से कहा कि इस घर में मेरी बहन की तुम पूर्णतः रक्षा करो। अब कंस को इतना भय लगने लगा कि घर के भीतर दरवाजों में विशाल ताले बंद करवा दिए जैसे कोई कारागार हो और दरवाज़े के बाहर दैत्यों और राक्षसों को पहरेदारी के लिए नियुक्त कर दिया। कंस हर प्रकार से अपने प्राणों को बचाने के प्रयास कर रहा था। तब सभी प्रकार के शुभ मुहूर्त में श्री कृष्ण का जन्म हुआ और श्रीकृष्ण के प्रभाव से ही उसी क्षण बन्दीगृह के दरवाज़े स्वयं खुल गए। द्वार पर पहरा देने वाले पहरेदार राक्षस सभी मूर्च्छित हो गए। देवकी ने उसी क्षण अपने पति वसुदेव से कहा "हे स्वामी! आप निद्रा का त्याग करें और मेरे इस पुत्र को गोकुल में ले जाएँ, वहाँ इस पुत्र को नंद गोप की धर्मपत्नी यशोदा को दे दें। उस समय यमुनाजी पूर्णरूप से बाढ़ग्रस्त थीं, किन्तु जब वसुदेवजी बालक कृष्ण को सूप में लेकर यमुनाजी को पार करने के लिए उतरे उसी क्षण बालक के चरणों का स्पर्श होते ही यमुनाजी अपने पूर्व स्थिर रूप में आ गईं। किसी प्रकार वसुदेवजी गोकुल पहुँचे और नंद के घर में प्रवेश कर उन्होंने अपना पुत्र तत्काल उन्हें दे दिया और उसके बदले में उनकी कन्या ले ली। वे तत्काल वहां से वापस आकर कंस के बंदी गृह में पहुँच गए।

प्रातःकाल जब सभी राक्षस पहरेदार निद्रा से जागे तो कंस ने द्वारपाल से पूछा कि अब देवकी के गर्भ से क्या हुआ? इस बात का पता लगाकर मुझे बताओ। द्वारपालों ने महाराज की आज्ञा को मानते हुए कारागार में जाकर देखा तो वहाँ देवकी की गोद में एक कन्या थी। जिसे देखकर द्वारपालों ने कंस को सूचित किया, किन्तु कंस को तो उस कन्या से भय होने लगा। अतः वह स्वयं कारागार में गया और उसने देवकी की गोद से कन्या को झपट लिया और उसे एक पत्थर की चट्टान पर पटक दिया किन्तु वह कन्या विष्णु की माया से आकाश की ओर चली गई और अंतरिक्ष में जाकर विद्युत के रूप में परिणित हो गई।

भगवान विष्णु ने आकाशवाणी कर कंस से कहा कि "हे दुष्ट! तुझे मारने वाला गोकुल में नंद के घर में उत्पन्न हो चुका है और उसी से तेरी मृत्यु सुनिश्चित है। मेरा नाम तो वैष्णवी है, मैं संसार के कर्ता भगवान विष्णु की माया से उत्पन्न हुई हूँ।" इतना कहकर वह स्वर्ग की ओर चली गई। उस आकाशवाणी को सुनकर कंस क्रोधित हो उठा। उसने नंद के घर में पूतना, केशी नामक दैत्य, काल्याख्य इत्यादि बलवान राक्षसों की मृत्यु के आघात से कंस अत्यधिक भयभीत हो गया। उसने द्वारपालों को आज्ञा दी कि नंद को तत्काल मेरे समक्ष उपस्थित करो। द्वारपाल नंद को लेकर जब उपस्थित हुए तब कंस ने नंद से कहा कि यदि तुम्हें अपने प्राणों को बचाना है तो पारिजात के पुष्प ले लाओ। यदि तुम नहीं ला पाए तो तुम्हारा वध निश्चित है।

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

मृत्यु के पश्चात उनका मल्लयुद्ध केशी के साथ हुआ। इस युद्ध में श्रीकृष्ण और बलदेव ने असंख्य दैत्यों का वध किया। बलरामजी ने अपने आयुध शस्त्र हल से और कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से माघ मास की शुक्ल पक्ष की सप्तमी को विशाल दैत्यों के समूह का सर्वनाश किया। जब अन्त में केवल दुराचारी कंस ही बच गया तो कृष्ण ने कहा- हे दुष्ट, अधर्मी, दुराचारी अब मैं इस महायुद्ध स्थल पर तुझसे युद्ध कर तथा तेरा वध कर इस संसार को तुझसे मुक्त कराऊँगा। यह कहते हुए श्रीकृष्ण ने उसके केशों को पकड़ लिया और कंस को घुमाकर पृथ्वी पर पटक दिया, जिससे वह मृत्यु को प्राप्त हुआ। कंस के मरने पर देवताओं ने शंखघोष व पुष्पवृष्टि की। वहां उपस्थित समुदाय श्रीकृष्ण की जय-जयकार कर रहा था। कंस की मृत्यु पर नंद, देवकी, वसुदेव, यशोदा और इस संसार के सभी प्राणियों ने हर्ष पर्व मनाया।

इस कथा को सुनने के पश्चात इंद्र ने नारदजी से कहा हे ऋषि इस कृष्ण जन्माष्टमी का पूर्ण विधान बताएं एवं इसके करने से क्या पुण्य प्राप्त होता है, इसके करने की क्या विधि है?

नारदजी ने कहा हे इंद्र! भाद्रपद मास की कृष्णजन्माष्टमी को इस व्रत को करना चाहिए। उस दिन ब्रह्मचर्य आदि नियमों का पालन करते हुए श्रीकृष्ण का स्थापन करना चाहिए। सर्वप्रथम श्रीकृष्ण की मूर्ति स्वर्ण कलश के ऊपर स्थापित कर चंदन, धूप, पुष्प, कमलपुष्प आदि से श्रीकृष्ण प्रतिमा को वस्त्र इत्यादि से सुसज्जित कर विधिपूर्वक पूजन-अर्चन करना चाहिए। उपवास की पूर्व रात्रि को हल्का भोजन करें और ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

श्रापित योग निवारण कवच

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के योगों का वर्णन मिलता हैं। इन योगों में एक योग "श्रापित योग" हैं इसे "शापित दोष" भी कहा जाता हैं। इस योग के संबंध में कहां जाता हैं की जिस व्यक्ति की कुण्डली में श्रापित योग होता है, उनकी कुण्डली में मौजूद अन्य शुभ योगों का प्रभाव कम हो जाता है जिससे व्यक्ति को जीवन में विभिन्न कठिनाईयों एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कुछ जानकार कुण्डली में मौजूद श्रापित योग का कारण भी पूर्व जन्म के कर्मों का फल मानते हैं। कुछ ज्योतिषी का मानना हैं की श्रापित योग अत्यंत अशुभ फलदायी हैं। श्रापित योग का फल व्यक्ति को अपने कर्मों के अनुसार भोगना पड़ता हैं। कैसे जाने जन्म कुंडली में श्रापित योग हैं या नहीं? रतीय ज्योतिषशास्त्र में सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु को अशुभ ग्रहों माना गया है। इन अशुभ ग्रहों में जब शानि और राहु की एक राशि में मौजूद हो तो श्रापित योग का निर्माण होता है। शनि और राहु दोनों ही ग्रह अशुभ फल देते हैं इसलिए इन दोनों ग्रहों के संयोग से बनने वाले योग को शापित योग या श्रापित योग कहा जाता है। कुछ ज्योतिष के जानकार यह मानते हैं कि शनि की राहु पर दृष्टि होने से भी इस योग का निर्माण होता हैं। साधारण भाषा में समझे तो शाप का अर्थ शुभ फलों नाश होना माना जाता है। उसी प्रकार शापित योग का अर्थ हैं, शुभ योगों को नाश करने वाला योग। जिस किसी की कुण्डली में यह योग का निर्माण होता है उसे इसी प्रकार का फल मिलता है अर्थात उनकी कुण्डली में जितने भी शुभ योग होते हैं वे इस योग के कारण प्रभावहीन हो जाते हैं! आमतौर पर ऐसा माना जाता हैं की शापित योग से पीड़ित व्यक्ति को अपने कार्यों में विभिन्न प्रकार की कठिन चुनौतियों एवं मुश्किलों का सामना करना होता हैं। लेकिन कुछ ज्योतिषी इससे सहमत नहीं हैं, उनका मानना हैं की शापित योग से संबंधित यह धारण पूरी तरह गलत है, जिस व्यक्ति की कुण्डली में शापित योग बनता है, उन व्यक्ति की कुण्डली में अन्य योगों की अपेक्षा शापित योग अधिक प्रभावशाली होकर व्यक्ति को शुभ फल देता हैं! जिस प्रकार ज्योतिषशास्त्र के अनुशार जब दो मित्र ग्रहों की युति किसी राशि में बनती है तो उनका अशुभ प्रभाव समाप्त हो जाता है और दोनों मित्रग्रह मिलकर व्यक्ति को शुभ फल देते हैं। उसी प्रकार से वह शनि एवं राहु के योग से निर्मित होने वाले शापित योग को अशुभ नहीं मानते हैं। लेकिन यह एक वैचारिक मतभेद का मुद्दा हैं, यदि आपकी जन्म कुंडली में श्रापित योग का निर्माण हो रहा हो, और आपको इससे संबंधित कष्ट प्राप्त हो रहे हो तो आप श्रापित योग निवारण कवच को धारण करके धारण कर्ता को विशेष लाभ प्राप्त कर अपनी परेशानियों को दूर कर सकते हैं। इस कवच के प्रभाव से श्रापित योग के प्रभावों में न्यूनता आती हैं। **मूल्य Rs.1900**

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

>> **Shop Online** | **Order Now**

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

कृष्ण के मुख में ब्रह्मांड दर्शन

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक बार बलराम सहित ग्वाल बाल खेल रहें थे खेलते-खेलते यशोदा के पास पहुँचे और यशोदाजी से कहा माँ! कृष्ण ने आज मिट्टी खाई हैं। यशोदा ने कृष्ण के हाथों को पकड़ लिया और धमकाने लगी कि तुमने मिट्टी क्यों खाई! यशोदा को यह भय था कि कहीं मिट्टी खाने से कृष्ण कोई रोग न लग जाए। माँ कि डांट से कृष्ण तो इतने भयभीत हो गए थे कि वे माँ की ओर आँख भी नहीं उठा पा रहे थे। तब यशोदा ने कहा तूने एकान्त में मिट्टी क्यों खाई! मिट्टी खाते हुए तुजे बलराम सहित और भी ग्वाल ने देखा हैं। कृष्ण ने कहा- मिट्टी मैंने नहीं खाई हैं। ये सभी लोग झुठ बोल रहे हैं। यदि आपको लगता हैं मैंने मिट्टी खाई हैं, तो स्वयं मेरा मुख देख ले। माँ ने कहा यदि ऐसा है तो तू अपना मुख खोल। लीला करने के लिए बाल कृष्ण ने अपना मुख माँ के समक्ष खोल दिया। यशोदा ने जब मुख के अंदर देखते हि उसमें संपूर्ण विश्व दिखाई पड़ने लगा। अंतरिक्ष, दिशाएँ, द्वीप, पर्वत, समुद्र, पृथ्वी,वायु, विद्युत, तारा सहित स्वर्गलोक, जल, अग्नि, वायु, आकाश इत्यादि विचित्र संपूर्ण विश्व एक ही काल में दिख पड़ा। इतना ही नहीं, यशोदा ने उनके मुख में ब्रज के साथ स्वयं अपने आपको भी देखा।

इन बातों से यशोदा को तरह-तरह के तर्क-वितर्क होने लगे। क्या मैं स्वप्न देख रही हूँ! या देवताओं की कोई माया हैं या मेरी बुद्धि ही व्यामोह हैं या इस मेरे कृष्ण का ही कोई स्वाभाविक प्रभावपूर्ण चमत्कार हैं। अन्त में उन्होंने यही दृढ निश्चय किया कि अवश्य ही इसी का चमत्कार है और निश्चय ही ईश्वर इसके रूप में अवतरित हुएं हैं। तब उन्होंने कृष्ण की स्तुति की उस शक्ति स्वरुप परब्रह्म को मैं नमस्कार करती हूँ। कृष्ण ने जब देखा कि माता यशोदा ने मेरा तत्व पूर्णतः समझ लिया हैं तब उन्होंने तुरंत पुत्र स्नेहमयी अपनी शक्ति रूप माया बिखेर दी जिससे यशोदा क्षण में ही सबकुछ भूल गई। उन्होंने कृष्ण को उठाकर अपनी गोद में उठा लिया।

श्री महालक्ष्मी यंत्र

धन कि देवी लक्ष्मी हैं जो मनुष्य को धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। अर्थ(धन) के बिना मनुष्य जीवन दुःख, दरिद्रता, रोग, अभावों से पीडित होता हैं, और अर्थ(धन) से युक्त मनुष्य जीवन में समस्त सुख-सुविधाएं भोगता हैं। श्री महालक्ष्मी यंत्र के पूजन से मनुष्य की जन्मों जन्म की दरिद्रता का नाश होकर, धन प्राप्ति के प्रबल योग बनने लगते हैं, उसे धन-धान्य और लक्ष्मी की वृद्धि होती हैं। श्री महालक्ष्मी यंत्र के नियमित पूजन एवं दर्शन से धन की प्राप्ति होती है और यंत्र जी नियमित उपासना से देवी लक्ष्मी का स्थाई निवास होता है। श्री महालक्ष्मी यंत्र मनुष्य कि सभी भौतिक कामनाओं को पूर्ण कर धन ऐश्वर्य प्रदान करने में समर्थ हैं। अक्षय तृतीया, धनतेरस, दीवावली, गुरु पुष्यामृत योग रविपुष्य इत्यादि शुभ मुहूर्त में यंत्र की स्थापना एवं पूजन का विशेष महत्व हैं।

>> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

कृष्ण स्मरण का आध्यात्मिक महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्री शुकदेवजी राजा परीक्षित् से कहते हैं-

सकृन्मनः कृष्णापदारविन्दयोर्निवेशितं तद्गुणरागि यैरिह।
न ते यमं पाशभृतश्च तद्भटान् स्वप्नेऽपि पश्यन्ति हि चीर्णनिष्कृताः॥

भावार्थ: जो मनुष्य केवल एक बार श्रीकृष्ण के गुणों में प्रेम करने वाले अपने चित्त को श्रीकृष्ण के चरण कमलों में लगा देते हैं, वे पापों से छूट जाते हैं, फिर उन्हें पाश हाथ में लिए हुए यमदूतों के दर्शन स्वप्न में भी नहीं हो सकते।

अविस्मृतिः कृष्णपदारविन्दयोः
क्षिणोत्यभद्रणि शमं तनोति च।
सत्वस्य शुद्धिं परमात्मभक्तिं
ज्ञानं च विज्ञानविरागयुक्तम्॥

भावार्थ: श्रीकृष्ण के चरण कमलों का स्मरण सदा बना रहे तो उसी से पापों का नाश, कल्याण की प्राप्ति, अन्तः करण की शुद्धि, परमात्मा की भक्ति और वैराग्ययुक्त ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति अपने आप ही हो जाती हैं।

पुंसां कलिकृतान्दोषान्द्रव्यदेशात्मसंभवान्।
सर्वान्हरित चितस्थो भगवान्पुरुषोतमः॥

भावार्थ: भगवान पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण जब चित्त में विराजते हैं, तब उनके प्रभाव से कलियुग के सारे पाप और द्रव्य, देश तथा आत्मा के दोष नष्ट हो जाते हैं।

शय्यासनाटनालाप्रीडास्नानादिकर्मसु।
न विदुः सन्तमात्मानं वृष्णयः कृष्णचेतसः॥

भावार्थ: श्रीकृष्ण को अपना सर्वस्व समझने वाले भक्त श्रीकृष्ण में इतने तन्मय रहते थे कि सोते, बैठते, घूमते, फिरते, बातचीत करते, खेलते, स्नान करते और भोजन आदि करते समय उन्हें अपनी सुधि ही नहीं रहती थी।

वैरेण यं नृपतयः शिशुपालपौण्ड्र-
शाल्वादयो गतिविलासविलोकनाद्यैः।
ध्यायन्त आकृतधियः शयनासनादौ
तत्साम्यमापुरनुरक्तधियां पुनः किम्॥

भावार्थ: जब शिशुपाल, शाल्व और पौण्ड्रक आदि राजा वैरभाव से ही खाते, पीते, सोते, उठते, बैठते हर वक्त श्री हरि की चाल, उनकी चितवन आदि का चिन्तन करने के कारण मुक्त हो गए, तो फिर जिनका चित्त श्री कृष्ण में अनन्य भाव से लग रहा है, उन विरक्त भक्तों के मुक्त होने में तो संदेह ही क्या हैं?

एनः पूर्वकृतं यत्तद्राजानः कृष्णवैरिणः।
जहुस्त्वन्ते तदात्मानः कीटः पेशस्कृतो यथा॥

भावार्थ: श्रीकृष्ण से द्वेष करने वाले समस्त नरपतिगण अन्त में श्री भगवान के स्मरण के प्रभाव से पूर्व संचित पापों को नष्ट कर वैसे ही भगवद्रूप हो जाते हैं, जैसे पेशस्कृत के ध्यान से कीड़ा तद्रूप हो जाता है, अतएव श्रीकृष्ण का स्मरण सदा करते रहना चाहिए।

हमारे विशेषज्ञ ज्योतिषी से पूछें अपने प्रश्न

सम्पूर्ण ज्योतिष परामर्श, जन्म कुण्डली निर्माण, प्रश्न कुण्डली, गुण मिलान, मुहूर्त, रत्न और रुद्राक्ष परामर्श, वास्तु परामर्श एवं अन्य किसी भी समस्या का समाधान ज्योतिष, यंत्र, मंत्र एवं अन्य सरल घरेलु उपायो द्वारा निदान हेतु संपर्क करे। हमारी सेवाएं न्यूनतम शुल्क पर उप्लब्ध है।

GURUTVA KARYALAY

Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Our Website : www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvakaryalay.in

अजा (जया) एकादशी व्रत की पौराणिक कथा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

भाद्रपद मास कृष्णपक्ष की एकादशी

एक बार युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछते हैं, हे भगवान! भाद्रपद कृष्ण एकादशी का क्या नाम है? इसमें किस देवता की पूजा की जाती है और इसका व्रत करने से क्या फल मिलता है? " व्रत करने की विधि तथा इसका माहात्म्य कृपा करके कहिए। भगवान श्रीकृष्ण कहने लगे कि इस एकादशी का नाम **अजा एकादशी** है। अब आप शांतिपूर्वक इस व्रतकी कथा सुनिए। अजा एकादशी व्रत समस्त प्रकार के पापों का नाश करने वाली हैं। जो मनुष्य इस दिन भगवान ऋषिकेश की पूजा करता है उसको वैकुंठ की प्राप्ति अवश्य होती है। अब आप इसकी कथा सुनिए।

प्राचीनकाल में आयोध्या नगरी में हरिशचंद्र नामक एक चक्रवर्ती राजा राज्य करता था। हरिशचंद्र अत्यन्त वीर, प्रतापी तथा सत्यवादी था। एक बार दैवयोग से उसने अपना राज्य स्वप्न में किसी ऋषि को दान कर दिया और परिस्थितिवश के वशीभूत होकर अपना सारा राज्य व धन त्याग दिया, साथ ही अपनी स्त्री, पुत्र तथा स्वयं को भी बेच दिया।

उसने उस चाण्डाल के यहां मृतकों के वस्त्र लेने का काम किया । मगर किसी प्रकार से सत्य से विचलित नहीं हुआ। जब इसी प्रकार उसे कई वर्ष बीत गये तो उसे अपने इस कर्म पर बड़ा दुःख हुआ और वह इससे मुक्त होने का उपाय खोजने लगा । कई बार राजा चिंता में डूबकर अपने मन में विचार करने लगता कि मैं कहाँ जाऊँ, क्या करूँ, जिससे मेरा उद्धार हो।

इस प्रकार राजा को कई वर्ष बीत गए। एक दिन राजा इसी चिंता में बैठा हुआ था कि बहाँ गौतम ऋषि आ गए। राजा ने उन्हें देखकर प्रणाम किया और अपनी सारी दुःखभरी कहानी कह सुनाई। यह बात सुनकर गौतम ऋषि कहने लगे कि राजन तुम्हारे भाग्य से आज से सात दिन बाद भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अजा नाम की एकादशी आएगी, तुम विधिपूर्वक व्रत करो तथा रात्रि को जागरण करो।

गौतम ऋषि ने कहा कि इस व्रत के पुण्य प्रभाव से तुम्हारे समस्त पाप नष्ट हो जाएँगे। इस प्रकार राजा से कहकर गौतम ऋषि उसी समय अंतर्ध्यान हो गए। राजा ने उनके कथनानुसार एकादशी आने पर विधिपूर्वक व्रत व जागरण किया। उस व्रत के प्रभाव से राजा के समस्त पाप नष्ट हो गए। स्वर्ग से बाजे-नगाड़े बजने लगे और पुष्पों की वर्षा होने लगी। उसने अपने सामने ब्रह्मा, विष्णु, महादेवजी तथा इन्द्र आदि देवताओं को खड़ा पाया । उसने अपने मृतक पुत्र को जीवित और अपनी स्त्री को वस्त्र तथा आभूषणों से युक्त देखा। वास्तव में एक ऋषि ने राजा की परीक्षा लेने के लिए यह सब कौतुक किया था । किन्तु अजा एकादशी के व्रत के प्रभाव से सारा षड्यंत्र समाप्त हो गया और व्रत के प्रभाव से राजा को पुनः राज्य मिल गया। अंत में वह अपने परिवार सहित स्वर्ग को गया।

हे राजन! यह सब अजा एकादशी के प्रभाव से ही हुआ। अतः जो मनुष्य यत्न के साथ विधिपूर्वक इस व्रत को करते हुए रात्रि जागरण करते हैं, उनके समस्त पाप नष्ट होकर अंत में वे स्वर्गलोक को प्राप्त होते हैं। इस एकादशी की कथा के श्रवणमात्र से अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

कथा का उद्देश्य : हमें को ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था एवं निष्ठा रखनी चाहिए । विपरित परिस्थितियों में भी हमें सत्य का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए।

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

परिवर्तिनी (पद्मा)एकादशी

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

भाद्रपद मास शुक्लपक्ष की एकादशी

एक बार युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछते हैं, हे केशव ! कृपया यह बताइये कि भाद्रपद शुक्लपक्ष में जो एकादशी होती है, उस का क्या नाम है? इसमें किस देवता की पूजा की जाती है और इसका व्रत करने से क्या फल मिलता है? " व्रत करने की विधि तथा इसका माहात्म्य कृपा करके कहिए। भगवान श्रीकृष्ण कहने लगे कि इस एकादशी का नाम पद्मा या परिवर्तिनी एकादशी या वामन एकादशी है। अब आप शांतिपूर्वक इस व्रतकी कथा सुनिए। जिसे ब्रह्माजी ने देवर्षि नारद से कही थी।

परिवर्तिनी एकादशी व्रत समस्त प्रकार के पुण्य, स्वर्ग और मोक्ष को देने वाली तथा सब पापों का नाश करने वाली, इसका यज्ञ करने से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है। पापियों के पाप नाश करने के लिए इससे उत्तम कोई उपाय नहीं। जो मनुष्य इस दिन भगवान के वामन रूप की पूजा करता है वह मनुष्य तीनों लोक में पूज्य होते हैं। अत: मोक्ष की इच्छा करने वाले मनुष्य को इस व्रत को अवश्य करना चाहिए।

अब मैं उत्तम परिवर्तिनी एकादशी का माहात्म्य मैं तुमसे कहता हूं तुम ध्यानपूर्वक सुनो। जो भगवान का कमल से पूजन करते हैं, वे अवश्य भगवान के समीप होते हैं।

जिस मनुष्य ने भाद्रपद शुक्ल एकादशी को विधि-विधान से व्रत और पूजन अवश्य करना चाहिए। इस दिन भगवान श्रीहरि करवट लेते हैं, इसलिए इसे परिवर्तिनी एकादशी भी कहते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण के वचन सुनकर युधिष्ठिर बोले हे भगवान! मुझे अति कुतूहल हो रहा है कि आप किस प्रकार सोते और करवट लेते हैं तथा किस तरह राजा बलि को बांधक बनाया और वामन रूप धारण कर क्या-क्या लीलाएं कीं? इस व्रत की क्या विधि है तथा आपके शयन करने पर मनुष्य का क्या कर्तव्य है। यह सब आप मुझसे विस्तार से बताइए।

भगवान श्रीकृष्ण कहने लगे कि हे राजन! त्रेतायुग में बलि नामक एक दैत्य था। जो मेरा परम भक्त था। विविध प्रकार से मेरा पूजन किया करता था और नित्य ही ब्राह्मणों का पूजन तथा यज्ञ का आयोजन करता था। लेकिन उसका इंद्र से द्वेष था जिस कारण उसने इंद्रलोक तथा सभी देवताओं को जीत लिया था।

एक बार सभी देवता एकत्र होकर सोच-विचारकर भगवान के पास गए। बृहस्पति सहित इंद्र आदिक देवता प्रभु के निकट आकर और नतमस्तक होकर भगवान का पूजन और स्तुति करने लगे। देवताओं ने बलि से देवलोक वापस लेने का अनुरोध किया। देवताओं के अनुग्रह पर मैंने पांचवां अवतार वामन रूप धारण कर लिया और फिर अत्यंत तेजस्वी रूप धारण कर राजा बलि को जीत लिया।

इतनी कथा सुनकर राजा युधिष्ठिर बोले कि हे जनार्दन! आपने वामन रूप धारण करके उस महाबली दैत्य को किस प्रकार जीता?

श्रीकृष्ण कहने लगे मैंने वामन रूपधारण कर बलि से तीन पग भूमि की याचना करते हुए कहा हे राजन यह तुमको अवश्य ही देनी होगी।

राजा बलि ने इसे तुच्छ याचना समझकर तीन पग भूमि का संकल्प मुझे दे दिया और मैंने अपने त्रि-विक्रम रूप को बढ़ाकर यहां तक कि भूलोक में पद, भुवर्लोक में जंघा, स्वर्गलोक में कमर, आनन्दलोक में पेट, जनलोक में हृदय, यमलोक में कंठ की स्थापना कर सत्यलोक में मुख, उसके ऊपर मस्तक स्थापित किया।

सूर्य, चंद्रमा आदि सब ग्रह गण, योग, नक्षत्र, इंद्रादिक देवता और शेष आदि सब नागगणों ने विविध प्रकार से से प्रार्थना की। तब मैंने राजा बलि का हाथ पकड़कर कहा कि हे राजन! एक पद से पृथ्वी, दूसरे से स्वर्गलोक पूर्ण हो गए। अब तीसरा पग कहां रखूं?

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

तब बलि ने अपना सिर झुका लिया और मैंने अपना पैर उसके मस्तक पर रख दिया जिससे मेरा वह भक्त पाताल को चला गया। फिर उसकी विनती और नम्रता को देखकर मैंने कहा कि हे बलि! मैं सदैव तुम्हारे निकट ही रहूंगा। विरोचन के पुत्र बलि के अनुरोध पर भाद्रपद शुक्ल एकादशी के दिन बलि के आश्रम पर मेरी मूर्ति स्थापित हुई।

इसी प्रकार दूसरी क्षीरसागर में शेषनाग के पृष्ठ पर हुई! हे राजन! इस एकादशी को भगवान शयन करते हुए करवट लेते हैं, इसलिए तीनों लोकों के स्वामी भगवान विष्णु का उस दिन पूजन करना चाहिए। परिवर्तिनी एकादशी के दिन तांबा, चांदी, चावल और दही का दान करना उचित है। रात्रि को जागरण अवश्य करना चाहिए।

जो विधिपूर्वक परिवर्तिनी एकादशी का व्रत करते हैं, वे सब पापों से मुक्त होकर स्वर्ग में जाकर चंद्रमा के समान प्रकाशित होकर यश पाते हैं। जो पापनाशक इस कथा को पढ़ते या सुनते हैं, उनको हजार अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

***

Are you Astrologer, Pandit-Purohit, Sadhak or Gemstone Seller?

We are Gemstone Wholesaler and Supplier, We are Deal in All Type of Precious, Semi-Precious Stones, Astrology products, Crystal Items, Vastu Items, 1 to 14 Mukhi Rudraksh, All Type Yantra, Kavach, Pendant, Ring, All Type of Mala & other Items...

Across The World Only Reliable Store for

All Real Gemstone, Rudraksha and Energized Products

Join Us Today and Get Benefits of

- 100% Premium Support serve by our Team
- Minimum investment Online & offline selling support.
- Multiple Premium Blog, Website and E-commerce Site

GURUTVA KARYALAY

BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Check Our Products Online : www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvakaryalay.in

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

श्री कृष्ण का नामकरण संस्कार

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

वसुदेवजी की प्रार्थना पर यदुओं के पुरोहित महातपस्वी गर्गाचार्यजी ब्रज नगरी पहुँचे। उन्हें देखकर नंदबाबा अत्यधिक प्रसन्न हुए। उन्होंने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और उन्हें विष्णु तुल्य मानकर उनकी विधिवत पूजा की। इसके पश्चात नंदजी ने उनसे कहा आप कृप्या मेरे इन दोनों बच्चों का नामकरण संस्कार कर दीजिए।

इस पर गर्गाचार्यजी ने कहा कि ऐसा करने में कुछ अड़चनें हैं। मैं यदुवंशियों का पुरोहित हूँ, यदि मैं तुम्हारे इन पुत्रों का नामकरण संस्कार कर दूँ तो लोग इन्हें देवकी का ही पुत्र मानने लगेंगे, क्योंकि कंस तो पहले से हि पापमय बुद्धि वाला हैं। वह सर्वदा निरर्थक बातें ही सोचता है। दूसरी ओर तुम्हारी व वसुदेव की मैत्री है।

अब मुख्य बात यह हैं कि देवकी की आठवीं संतान लड़की नहीं हो सकती क्योंकि योगमाया ने कंस से यही कहा था अरे पापी मुझे मारने से क्या फायदा है? वह सदैव यही सोचता है कि कहीं न कहीं मुझे मारने वाला अवश्य उत्पन्न हो चुका हैं। यदि मैं नामकरण संस्कार करवा दूँगा तो मुझे पूर्ण आशा हैं कि वह मेरे बच्चों को मार डालेगा और हम लोगों का अत्यधिक अनिष्ट करेगा।

नंदजी ने गर्गाचार्यजी से कहा यदि ऐसी बात है तो किसी एकान्त स्थान में चलकर विधि पूर्वक इनके द्विजाति संस्कार करवा दीजिए। इस विषय में मेरे अपने आदमी भी न जान सकेंगे। नंद की इन बातों को सुनकर गर्गाचार्य ने एकान्त में छिपकर बच्चे का नामकरण करवा दिया। नामकरण करना तो उन्हें अभीष्ट ही था, इसीलिए वे आए थे।

गर्गाचार्यजी ने वसुदेव से कहा रोहिणी का यह पुत्र गुणों से अपने लोगों के मन को प्रसन्न करेगा। अतः इसका नाम राम होगा। इसी नाम से यह पुकारा जाएगा। इसमें बल की अधिकता अधिक होगी। इसलिए इसे लोग बल भी कहेंगे। यदुवंशियों की आपसी फूट मिटाकर उनमें एकता को यह स्थापित करेगा, अतः लोग इसे संकर्षण भी कहेंगे। अतः इसका नाम बलराम होगा।

अब उन्होंने यशोदा और नंद को लक्ष्य करके कहा- यह तुम्हारा पुत्र प्रत्येक युग में अवतार ग्रहण करता रहता हैं। कभी इसका वर्ण श्वेत, कभी लाल, कभी पीला होता है। पूर्व के प्रत्येक युगों में शरीर धारण करते हुए इसके तीन वर्ण हो चुके हैं। इस बार कृष्णवर्ण का हुआ है, अतः इसका नाम कृष्ण होगा। तुम्हारा यह पुत्र पहले वसुदेव के यहाँ जन्मा हैं, अतः श्रीमान वासुदेव नाम से विद्वान लोग पुकारेंगे।

तुम्हारे पुत्र के नाम और रूप तो गिनती के परे हैं, उनमें से गुण और कर्म अनुरूप कुछ को मैं जानता हूँ। दूसरे लोग यह नहीं जान सकते। यह तुम्हारे गोप गौ एवं गोकुल को आनंदित करता हुआ तुम्हारा कल्याण करेगा। इसके द्वारा तुम भारी विपत्तियों से भी मुक्त रहोगे। इस पृथ्वी पर जो भगवान मानकर इसकी भक्ति करेंगे उन्हें शत्रु भी पराजित नहीं कर सकेंगे। जिस तरह विष्णु के भजने वालों को असुर नहीं पराजित कर सकते। यह तुम्हारा पुत्र सौंदर्य, कीर्ति, प्रभाव आदि में विष्णु के सदृश होगा। अतः इसका पालन-पोषण पूर्ण सावधानी से करना। इस प्रकार कृष्ण के विषय में आदेश देकर गर्गाचार्य अपने आश्रम को चले गए।

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

॥ श्रीकृष्ण चालीसा ॥

दोहा

बंशी शोभित कर मधुर, नील जलद तन श्याम।
अरुणअधरजनु बिम्बफल, नयनकमलअभिराम॥
पूर्ण इन्द्र, अरविन्द मुख, पीताम्बर शुभ साज।
जय मनमोहन मदन छवि, कृष्णचन्द्र महाराज॥

जय यदुनंदन जय जगवंदन। जय वसुदेव देवकी नन्दन॥
जय यशुदा सुत नन्द दुलारे। जय प्रभु भक्तन के दृग तारे॥
जय नट-नागर, नाग नथइया॥ कृष्ण कन्हइया धेनु चरइया॥
पुनि नख पर प्रभु गिरिवर धारो। आओ दीनन कष्ट निवारो॥
वंशी मधुर अधर धरि टेरौ। होवे पूर्ण विनय यह मेरौ॥
आओ हरि पुनि माखन चाखो। आज लाज भारत की राखो॥
गोल कपोल, चिबुक अरुणारे। मृदु मुस्कान मोहिनी डारे॥
राजित राजिव नयन विशाला। मोर मुकुट वैजन्तीमाला॥
कुंडल श्रवण, पीत पट आछे। कटि किंकिणी काछनी काछे॥
नील जलज सुन्दरतनु सोहे। छबिलखि, सुरनर मुनिमन मोहे॥
मस्तक तिलक, अलक घुँघराले। आओ कृष्ण बांसुरी वाले॥
करि पय पान, पूतनहि तार्‌यो। अका बका कागासुर मार्‌यो॥
मधुवन जलतअगिन जबज्वाला। भैशीतललखतहिं नंदलाला॥
सुरपति जब ब्रज चढ़्यो रिसाई। मूसर धार वारि वर्षाई॥
लगत लगत व्रज चहन बहायो। गोवर्धन नख धारि बचायो॥
लखि यसुदा मनभ्रम अधिकाई। मुखमंह चौदह भुवन दिखाई॥
दुष्ट कंस अति उधम मचायो। कोटि कमल जब फूल मंगायो॥
नाथि कालियहिं तब तुम लीन्हें। चरण चिह्न दै निर्भय कीन्हें॥
करि गोपिन संग रास विलासा। सबकी पूरण करी अभिलाषा॥
केतिक महा असुर संहार्‌यो। कंसहि केस पकड़ि दै मार्‌यो॥
मात-पिता की बन्दि छुड़ाई। उग्रसेन कहँ राज दिलाई॥
महि से मृतक छहों सुत लायो। मातु देवकी शोक मिटायो॥
भौमासुर मुर दैत्य संहारी। लाये षट दश सहसकुमारी॥
दै भीमहिं तृण चीर सहारा। जरासिंधु राक्षस कहँ मारा॥
असुर बकासुर आदिक मार्‌यो। भक्तन के तब कष्ट निवार्‌यो॥
दीन सुदामा के दुःख टार्‌यो। तंदुल तीन मूंठ मुख डार्‌यो॥
प्रेम के साग विदुर घर माँगे। दुर्योधन के मेवा त्यागे॥
लखी प्रेम की महिमा भारी। ऐसे श्याम दीन हितकारी॥
भारत के पारथ रथ हाँके। लिये चक्र कर नहिं बल थाके॥
निज गीता के ज्ञान सुनाए। भक्तन हृदय सुधा वर्षाए॥
मीरा थी ऐसी मतवाली। विष पी गई बजाकर ताली॥
राना भेजा साँप पिटारी। शालीग्राम बने बनवारी॥
निजमाया तुम विधिहिं दिखायो। उर ते संशय सकल मिटायो॥
तब शत निन्दा करि तत्काला। जीवन मुक्त भयो शिशुपाला॥
जबहिं द्रौपदी टेर लगाई। दीनानाथ लाज अब जाई॥
तुरतहि वसन बने नंदलाला। बढ़े चीर भै अरि मुँह काला॥
अस अनाथ के नाथ कन्हइया। डूबत भंवर बचावइ नइया॥
'सुन्दरदास' आस उर धारी। दया दृष्टि कीजै बनवारी॥
नाथ सकल मम कुमति निवारो। क्षमहु बेगि अपराध हमारो॥
खोलो पट अब दर्शनदीजै। बोलो कृष्ण कन्हइया की जै॥

दोहा

यह चालीसा कृष्ण का, पाठ करै उर धारि।
अष्ट सिद्धि नवनिधि फल, लहै पदारथ चारि ॥

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारण करने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं। गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक से अधिक >> Order Now

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

॥ श्रीकृष्णस्तवराज ॥

श्रीमहादेव उवाच ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्तोत्रम् परमदुर्लभम् ।
यज्ज्ञात्वा न पुनर्गच्छेन्नरो निरययातनाम् ॥१॥

नारदाय च यत्प्रोक्तम् ब्रह्मपुत्रेण धीमता ।
सनत्कुमारेण पुरा योगीन्द्रगुरुवर्त्मना ॥२॥

श्रीनारद उवाच ।
प्रसीद भगवन्मह्यमज्ञानात्कुण्ठितात्मने ।
तवांघ्रिपङ्कजरजोरागिणीं भक्तिमुत्तमाम् ॥३॥

अज प्रसीद भगवन्नमितद्युतिपञ्जर ।
अप्रमेयं प्रसीदास्मद्दुःखहन्पुरुषोत्तम ॥४॥

स्वसंवेद्य प्रसीदास्मदानन्दात्मन्ननामय ।
अचिन्त्यसार विश्वात्मन्प्रसीद परमेश्वर ॥५॥

प्रसीद तुङ्गतुङ्गानां प्रसीद शिवशोभन ।
प्रसीद गुणगम्भीर गम्भीराणां महाद्युते ॥६॥

प्रसीद व्यक्तं विस्तीर्णं विस्तीर्णानामगोचर ।
प्रसीदार्द्रार्द्रजातीनां प्रसीदान्तान्तदायिनाम् ॥७॥

गुरोर्गरीयः सर्वेश प्रसीदानन्त देहिनाम् ।
जय माधव मायात्मन् जय शाश्वतशङ्खभृत् ॥८॥

जय शङ्खधर श्रीमन् जय नन्दकनन्दन ।
जय चक्रगदापाणे जय देव जनार्दन ॥९॥

जय रत्नवराबद्धकिरीटाकान्तमस्तक ।
जय पक्षिपतिच्छायानिरुद्धार्ककरारुण ॥१०॥

नमस्ते नरकाराते नमस्ते मधुसूदन ।
नमस्ते ललितापाङ्ग नमस्ते नरकान्तक ॥११॥

नमः पापहरेशान नमः सर्पभवापह ।
नमः सम्भूतसर्वात्मन्नमः सम्भृतकौस्तुभ ॥१२॥

नमस्ते नयनातीत नमस्ते भयहारक ।
नमो विभिन्नवेषाय नमः श्रुतिपथातिग ॥१३॥

नमश्चिन्मूर्तिभेदेन सर्गस्थित्यन्तहेतवे ।
विष्णवे त्रिदशारातिजिष्णवे परमात्मने ॥१४॥

चक्रभिन्नारिचक्राय चक्रिणे चक्रवल्लभ ।
विश्वाय विश्ववन्द्याय विश्वभूतानुवर्तिने ॥१५॥

नमोऽस्तु योगिध्येयात्मन्नमोऽस्त्वध्यात्मिरूपिणे ।
भक्तिप्रदाय भक्तानां नमस्ते मुक्तिदायिने ॥१६॥

पूजनं हवनं चेज्या ध्यानम् पश्चान्नमस्क्रिया ।
देवेश कर्म सर्वं मे भवेदाराधनम् तव ॥१७॥

इति हवनजपार्चाभेदतो विष्णुपूजा नियतहृदयकर्मा यस्तु मन्त्री चिराय । स खलु सकलकामान् प्राप्य कृष्णान्तरात्मा जननमृतिविमुक्तोऽत्युत्तमां भक्तिमेति ॥१८॥

गोगोपगोपिकावीतम् गोपालम् गोषु गोप्रदम् ।
गोपैरीड्यं गोसहस्रैर्नौमि गोकुलनायकम् ॥१९॥

प्रीणयेदनया स्तुत्या जगन्नाथं जगन्मयम् ।
धर्मार्थकाममोक्षाणामाप्तये पुरुषोत्तमः ॥२०॥

॥ इति श्रीनारदपञ्चरात्रे श्रीकृष्णस्तवराजः सम्पूर्णः ॥

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

श्रीकृष्णस्तवराजः

कृष्णदासविरचितः

अनन्तकन्दर्पकलाविलासं किशोरचन्द्रं रसिकेन्द्रशेखरम् ।
श्यामं महासुन्दरतानिधानं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥१॥

अनन्तविद्युद्युतिचारुपीतं कौशेयसंवीतनितम्बबिम्बम् ।
अनन्तमेघच्छविदिव्यमूर्तिं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥२॥

महेन्द्रचापच्छविपिच्छचूढं कस्तूरिकाचित्रकशोभिमालम् ।
मन्दादरोद्घूर्णविशालनेत्रं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥३॥

भ्राजिष्णुगल्लं मकराङ्कितेन विचित्ररत्नोज्ज्वलकुण्डलेन ।
कोटीन्दुलावण्यमुखारविन्दं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥४॥

वृन्दाटवीमञ्जुलकुञ्जवाद्यं श्रीराधया सार्धमुदारकेलिम् ।
आनन्दपुञ्जं ललितादिदृश्यं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥५॥

महार्हकेयूरककङ्कणश्रीग्रैवेयहारावलिमुद्रिकाभिः ।
विभूषितं किङ्किणिनूपुराभ्यां श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥६॥

विचित्ररत्नोज्ज्वलदिव्यवासाप्रगीतरामागुणरूपलीलम् ।
मुहुर्मुहुः प्रोदितरोमहर्षं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥७॥

श्रीराधिकेयाधरसेवनेन माद्यन्तमुच्चै रतिकेलिलोलम् ।
स्मरोन्मदान्धं रसिकेन्द्रमौलिं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥८॥

अङ्के निधाय प्रणयेन राधां मुहुर्मुहुश्चुम्बिततन्मुखेन्दुम् ।
विचित्रवेषैः कृततद्विभूषणं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥९॥

॥इति कृष्णदासविरचितः श्रीकृष्णस्तवराजः सम्पूर्णः॥

॥ एकाक्षरकृष्णमन्त्रम् ॥

ॐ पूर्णज्ञानात्मने हृदयाय नमः ।

ॐ पूर्णैश्वर्यात्मने शिरसे स्वाहा ।

ॐ पूर्णपरमात्मने शिखायै वषट् ।

ॐ पूर्णानन्दात्मने कवचाय हुं ।

ॐ पूर्णतेजात्मने नेत्राभ्यां वौषट् ।

ॐ पूर्णशक्त्यात्मने अस्त्राय फट् ।

इति दिग्बन्धः

॥ एकाक्षर श्रीकृष्णमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः
निचृत् गायत्री छन्दः श्रीकृष्णो देवता
श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ध्यानम्

ध्यायेद्धरिं मणिनिभं जगदेकवन्द्यं

सौन्दर्यसारमरिशङ्खवराभयानि ।

दोर्भिर्दधानमजितं सरसं सभैष्मी

सत्यासमेतमखिलप्रदमिन्दिरेशम् ॥

मूलमन्त्रं ॐ क्लीं ॐ

इति एकाक्षरकृष्णमन्त्रं सम्पूर्णम् ।

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

प्राणेश्वर श्रीकृष्ण मंत्र

संकलन गुरुत्व कार्यालय

मंत्र:-

"ॐ ऐं श्रीं क्लीं प्राण वल्लभाय सौः सौभाग्यदाय श्रीकृष्णाय स्वाहा।"

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीप्राणेश्वर श्रीकृष्ण मंन्त्रस्य भगवान् श्रीवेदव्यास ऋषिः,

गायत्री छंदः-, श्रीकृष्ण-परमात्मा देवता, क्लीं बीजं, श्रीं शक्तिः, ऐं कीलकं, ॐ व्यापकः, मम समस्त-क्लेश-परिहार्थं, चतुर्वर्ग-प्राप्तये, सौभाग्य वृद्धयर्थं च जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- श्रीवेदव्यास ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छंदसे नमः मुखे, श्रीकृष्ण परमात्मा देवतायै नमः हृदि, क्लीं बीजाय नमः गुह्ये, श्रीं शक्तये नमः नाभौ, ऐं कीलकाय नमः पादयो, ॐ व्यापकाय नमः सर्वाङ्गे, मम समस्त क्लेश परिहार्थं, चतुर्वर्ग प्राप्तये, सौभाग्य वृद्धयर्थं च जपे विनियोगाय नमः अंजलौ।

कर-न्यासः- ॐ ऐं श्रीं क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः प्राणवल्लभाय तर्जनीभ्यां स्वाहा, सौः मध्यमाभ्यां वषट्, सौभाग्यदाय अनामिकाभ्यां हुं श्रीकृष्णाय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

अंग-न्यासः- ॐ ऐं श्रीं क्लीं हृदयाय नमः, प्राण वल्लभाय शिरसे स्वाहा, सौः शिखायै वषट्, सौभाग्यदाय शिखायै कवचाय हुं, श्रीकृष्णाय नेत्र-त्रयाय वौषट्, स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानः- "कृष्णं जगन्मपहन-रुप-वर्णं, विलोक्य लज्जाऽऽकुलितां स्मराढ्याम्। मधूक-माला-युत-कृष्ण-देहं, विलोक्य चालिंग्य हरिं स्मरन्तीम्।।"

भावार्थः संसार को मुग्ध करने वाले भगवान् कृष्ण के रुप-रंग को देखकर प्रेम पूर्ण होकर गोपियाँ लज्जापूर्वक व्याकुल होती हैं और मन-ही-मन हरि को स्मरण करती हुई भगवान् कृष्ण की मधूक-पुष्पों की माला से विभुषित देह का आलिंगन करती हैं।

इस मंत्र का विधि-विधान से १,००,००० जाप करने का विधान हैं।

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- भाग्योदय यंत्र
- मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- गृहस्थ सुख यंत्र
- शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- रोग निवृत्ति यंत्र
- साधना सिद्धि यंत्र
- शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785, Shop Online : www.gurutvakaryalay.com

॥सन्तानगोपाल स्तोत्र॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

सन्तानगोपालस्तोत्रं

श्रीशं कमलपत्राक्षं देवकीनन्दनं हरिम् ।
सुतसंप्राप्तये कृष्णं नमामि मधुसूदनम् ॥१॥
नमाम्यहं वासुदेवं सुतसंप्राप्तये हरिम् ।
यशोदाङ्कगतं बालं गोपालं नन्दनन्दनम् ॥२॥
अस्माकं पुत्रलाभाय गोविन्दं मुनिवन्दितम् ।
नमाम्यहं वासुदेवं देवकीनन्दनं सदा ॥३॥
गोपालं डिम्भकं वन्दे कमलापतिमच्युतम् ।
पुत्रसंप्राप्तये कृष्णं नमामि यदुपुङ्गवम् ॥४॥
पुत्रकामेष्टिफलदं कञ्जाक्षं कमलापतिम् ।
देवकीनन्दनं वन्दे सुतसम्प्राप्तये मम ॥५॥
पद्मापते पद्मनेत्रे पद्मनाभ जनार्दन ।
देहि मे तनयं श्रीश वासुदेव जगत्पते ॥६॥
यशोदाङ्कगतं बालं गोविन्दं मुनिवन्दितम् ।
अस्माकं पुत्र लाभाय नमामि श्रीशमच्युतम् ॥७॥
श्रीपते देवदेवेश दीनार्तिर्हरणाच्युत ।
गोविन्द मे सुतं देहि नमामि त्वां जनार्दन ॥८॥
भक्तकामद गोविन्द भक्तं रक्ष शुभप्रद ।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥९॥
रुक्मिणीनाथ सर्वेश देहि मे तनयं सदा ।
भक्तमन्दार पद्माक्ष त्वामहं शरणं गतः ॥१०॥
देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥११॥
वासुदेव जगद्वन्द्य श्रीपते पुरुषोत्तम ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥१२॥
कञ्जाक्ष कमलानाथ परकारुणिकोत्तम ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥१३॥
लक्ष्मीपते पद्मनाभ मुकुन्द मुनिवन्दित ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥१४॥
कार्यकारणरूपाय वासुदेवाय ते सदा ।
नमामि पुत्रलाभार्थ सुखदाय बुधाय ते ॥१५॥
राजीवनेत्र श्रीराम रावणारे हरे कवे ।
तुभ्यं नमामि देवेश तनयं देहि मे हरे ॥१६॥
अस्माकं पुत्रलाभाय भजामि त्वां जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव रमापते ॥१७॥
श्रीमानिनीमानचोर गोपीवस्त्रापहारक ।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते ॥१८॥
अस्माकं पुत्रसंप्राप्तिं कुरुष्व यदुनन्दन ।
रमापते वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित ॥१९॥
वासुदेव सुतं देहि तनयं देहि माधव ।
पुत्रं मे देहि श्रीकृष्ण वत्सं देहि महाप्रभो॥२०॥
डिम्भकं देहि श्रीकृष्ण आत्मजं देहि राघव ।
भक्तमन्दार मे देहि तनयं नन्दनन्दन ॥२१॥
नन्दनं देहि मे कृष्ण वासुदेव जगत्पते ।
कमलनाथ गोविन्द मुकुन्द मुनिवन्दित ॥२२॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
सुतं देहि श्रियं देहि श्रियं पुत्रं प्रदेहि मे ॥२३॥
यशोदास्तन्यपानज्ञं पिबन्तं यदुनन्दनम् ।
वन्देऽहं पुत्रलाभार्थं कपिलाक्षं हरिं सदा ॥२४॥
नन्दनन्दन देवेश नन्दनं देहि मे प्रभो ।
रमापते वासुदेव श्रियं पुत्रं जगत्पते ॥२५॥
पुत्रं श्रियं श्रियं पुत्रं पुत्रं मे देहि माधव ।
अस्माकं दीनवाक्यस्य अवधारय श्रीपते ॥२६॥
गोपाल डिम्भ गोविन्द वासुदेव रमापते ।
अस्माकं डिम्भकं देहि श्रियं देहि जगत्पते ॥२७॥
मद्वाञ्छितफलं देहि देवकीनन्दनाच्युत ।
मम पुत्रार्थितं धन्यं कुरुष्व यदुनन्दन ॥२८॥
याचेऽहं त्वां श्रियं पुत्रं देहि मे पुत्रसंपदम्।
भक्तचिन्तामणे राम कल्पवृक्ष महाप्रभो ॥२९॥
आत्मजं नन्दनं पुत्रं कुमारं डिम्भकं सुतम् ।
अर्भकं तनयं देहि सदा मे रघुनन्दन ॥३०॥
वन्दे सन्तानगोपालं माधवं भक्तकामदम् ।

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

अस्माकं पुत्रसंप्राप्त्यै सदा गोविन्दमच्युतम् ॥३१॥
ॐकारयुक्तं गोपालं श्रीयुक्तं यदुनन्दनम् ।
क्लींयुक्तं देवकीपुत्रं नमामि यदुनायकम् ॥३२॥
वासुदेव मुकुन्देश गोविन्द माधवाच्युत ।
देहि मे तनयं कृष्ण रमानाथ महाप्रभो ॥३३॥
राजीवनेत्र गोविन्द कपिलाक्ष हरे प्रभो ।
समस्तकाम्यवरद देहि मे तनयं सदा ॥३४॥
अब्जपद्मनिभं पद्मवृन्दरूप जगत्पते ।
देहि मे वरसत्पुत्रं रमानायक माधव ॥३५॥
नन्दपाल धरापाल गोविन्द यदुनन्दन ।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥३६॥
दासमन्दार गोविन्द मुकुन्द माधवाच्युत ।
गोपाल पुण्डरीकाक्ष देहि मे तनयं श्रियम् ॥३७॥
यदुनायक पद्मेश नन्दगोपवधूसुत ।
देहि मे तनयं कृष्ण श्रीधर प्राणनायक ॥३८॥
अस्माकं वाञ्छितं देहि देहि पुत्रं रमापते ।
भगवन् कृष्ण सर्वेश वासुदेव जगत्पते ॥३९॥
रमाहृदयसंभारसत्यभामामनः प्रिय ।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥४०॥
चन्द्रसूर्याक्ष गोविन्द पुण्डरीकाक्ष माधव ।
अस्माकं भाग्यसत्पुत्रं देहि देव जगत्पते ॥४१॥
कारुण्यरूप पद्माक्ष पद्मनाभसमर्चित ।
देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनन्दनन्दन ॥४२॥
देवकीसुत श्रीनाथ वासुदेव जगत्पते ।
समस्तकामफलद देहि मे तनयं सदा ॥४३॥
भक्तमन्दार गम्भीर शङ्कराच्युत माधव ।
देहि मे तनयं गोपबालवत्सल श्रीपते ॥४४॥
श्रीपते वासुदेवेश देवकीप्रियनन्दन ।
भक्तमन्दार मे देहि तनयं जगतां प्रभो॥४५॥
जगन्नाथ रमानाथ भूमिनाथ दयानिधे ।
वासुदेवेश सर्वेश देहि मे तनयं प्रभो ॥४६॥
श्रीनाथ कमलपत्राक्ष वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥४७॥
दासमन्दार गोविन्द भक्तचिन्तामणे प्रभो ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥४८॥
गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रमानाथ महाप्रभो ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥४९॥
श्रीनाथ कमलपत्राक्ष गोविन्द मधुसूदन ।
मत्पुत्रफलसिद्ध्यर्थं भजामि त्वां जनार्दन ॥५०॥
स्तन्यं पिबन्तं जननीमुखांबुजं विलोक्य
मन्दस्मितमुज्ज्वलाङ्गम् ।
स्पृशन्तमन्यस्तनमङ्गुलीभिर्वन्दे
यशोदाङ्कगतं मुकुन्दम् ॥५१॥
याचेऽहं पुत्रसन्तानं भवन्तं पद्मलोचन ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥५२॥
अस्माकं पुत्रसम्पत्तेश्चिन्तयामि जगत्पते ।
शीघ्रं मे देहि दातव्यं भवता मुनिवन्दित ॥५३॥
वासुदेव जगन्नाथ श्रीपते पुरुषोत्तम ।
कुरु मां पुत्रदत्तं च कृष्ण देवेन्द्रपूजित ॥५४॥
कुरु मां पुत्रदत्तं च यशोदाप्रियनन्दनम् ।
मह्यं च पुत्रसन्तानं दातव्यंभवता हरे ॥५५॥
वासुदेव जगन्नाथ गोविन्द देवकीसुत ।
देहि मे तनयं राम कौशल्याप्रियनन्दन ॥५६॥
पद्मपत्राक्ष गोविन्द विष्णो वामन माधव ।
देहि मे तनयं सीताप्राणनायक राघव ॥५७॥
कञ्जाक्ष कृष्ण देवेन्द्रमण्डित मुनिवन्दित ।
लक्ष्मणाग्रज श्रीराम देहि मे तनयं सदा ॥५८॥
देहि मे तनयं राम दशरथप्रियनन्दन ।
सीतानायक कञ्जाक्ष मुचुकुन्दवरप्रद ॥५९॥
विभीषणस्य या लङ्का प्रदत्ता भवता पुरा ।
अस्माकं तत्प्रकारेण तनयं देहि माधव ॥६०॥
भवदीयपदांभोजे चिन्तयामि निरन्तरम् ।
देहि मे तनयं सीताप्राणवल्लभ राघव ॥६१॥
राम मत्काम्यवरद पुत्रोत्पत्तिफलप्रद ।
देहि मे तनयं श्रीश कमलासनवन्दित ॥६२॥
राम राघव सीतेश लक्ष्मणानुज देहि मे ।
भाग्यवत्पुत्रसन्तानं दशरथप्रियनन्दन ।
देहि मे तनयं राम कृष्ण गोपाल माधव ॥६४॥
कृष्ण माधव गोविन्द वामनाच्युत शङ्कर ।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥६५॥

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

गोपबाल महाधन्य गोविन्दाच्युत माधव ।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते ॥६६॥
दिशतु दिशतु पुत्रं देवकीनन्दनोऽयम्
दिशतु दिशतु शीघ्रं भाग्यवत्पुत्रलाभम् ।
दिशतु दिशतु शीघ्रं श्रीशो राघवो रामचन्द्रो
दिशतु दिशतु पुत्रं वंश विस्तारहेतोः ॥६७॥
दीयतां वासुदेवेन तनयोमत्प्रियः सुतः ।
कुमारो नन्दनः सीतानायकेन सदा मम ॥६८॥
राम राघव गोविन्द देवकीसुत माधव ।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥६९॥
वंशविस्तारकं पुत्रं देहि मे मधुसूदन ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥७०॥
ममाभीष्टसुतं देहि कंसारे माधवाच्युत ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः॥७१॥
चन्द्रार्ककल्पपर्यन्तं तनयं देहि माधव ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः॥७२॥
विद्यावन्तं बुद्धिमन्तं श्रीमन्तं तनयं सदा ।
देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनन्दन प्रभो ॥७३॥
नमामि त्वां पद्मनेत्र सुतलाभाय कामदम् ।
मुकुन्दं पुण्डरीकाक्षं गोविन्दं मधुसूदनम् ॥७४॥
भगवन् कृष्ण गोविन्द सर्वकामफलप्रद ।
देहि मे तनयं स्वामिंस्त्वामहं शरणं गतः ॥७५॥
स्वामिंस्त्वं भगवन् राम कृष्न माधव कामद ।
देहि मे तनयं नित्यं त्वामहं शरणं गतः ॥७६॥
तनयं देहिओ गोविन्द कञ्जाक्ष कमलापते ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः॥७७॥
पद्मापते पद्मनेत्र प्रद्युम्न जनक प्रभो ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥७८॥
शङ्खचक्रगदाखड्गशाङ्गर्पाणे रमापते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥७९॥
नारायण रमानाथ राजीवपत्रलोचन ।
सुतं मे देहि देवेश पद्मपद्मानुवन्दित ॥८०॥
राम राघव गोविन्द देवकीवरनन्दन ।
रुक्मिणीनाथ सर्वेश नारदादिसुरार्चित ॥८१॥
देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥८२॥
मुनिवन्दित गोविन्द रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥८३॥

गोपिकार्जितपङ्केजमरन्दासक्तमानस ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥८४॥
रमाहृदयपङ्केजलोल माधव कामद ।
ममाभीष्टसुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥८५॥
वासुदेव रमानाथ दासानां मङ्गलप्रद ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥८६॥
कल्याणप्रद गोविन्द मुरारे मुनिवन्दित ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥८७॥
पुत्रप्रद मुकुन्देश रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥८८॥
पुण्डरीकाक्ष गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥८९॥
दयानिधे वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥९०॥
पुत्रसम्पत्प्रदातारं गोविन्दं देवपूजितम् ।
वन्दामहे सदा कृष्णं पुत्र लाभ प्रदायिनम् ॥९१॥
कारुण्यनिधये गोपीवल्लभाय मुरारये ।
नमस्ते पुत्रलाभाय देहि मे तनयं विभो ॥९२॥
नमस्तस्मै रमेशाय रुमिणीवल्लभाय ते ।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥९३॥
नमस्ते वासुदेवाय नित्यश्रीकामुकाय च ।
पुत्रदाय च सर्पेन्द्रशायिने रङ्गशायिने ॥९४॥
रङ्गशायिन् रमानाथ मङ्गलप्रद माधव ।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥९५॥
दासस्य मे सुतं देहि दीनमन्दार राघव ।
सुतं देहि सुतं देहि पुत्रं देहि रमापते ॥९६॥
यशोदातनयाभीष्टपुत्रदानरतः सदा ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥९७॥
मदिष्टदेव गोविन्द वासुदेव जनार्दन ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥९८॥
नीतिमान् धनवान् पुत्रो विद्यावांश्च प्रजापते ।
भगवंस्त्वत्कृपायाश्च वासुदेवेन्द्रपूजित ॥९९॥
यःपठेत् पुत्रशतकं सोऽपि सत्पुत्रवान् भवेत ।
श्रीवासुदेवकथितं स्तोत्ररत्नं सुखाय च ॥१००॥
जपकाले पठेन्नित्यं पुत्रलाभं धनं श्रियम् ।
ऐश्वर्यं राजसम्मानं सद्यो याति न संशयः ॥१०१॥

॥इति श्रीसंतानगोपाल-स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

॥ श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

अस्य श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य श्रीशेष ऋषि । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीकृष्णो देवता । श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे श्रीकृष्णाष्टोतरशतनामजपे विनियोगः ॥ शेष उवाच ।

श्रीकृष्णः कमलानाथो वासुदेवः सनातनः । वासुदेवात्मजः पुण्यो लीलामानुषविग्रहः ॥१॥

श्रीवत्सकौस्तुभधरो यशोदावत्सलो हरिः । चतुर्भुजात्तचक्रसिगदाशंखाद्युदायुधः ॥२॥

देवकीनंदनः श्रीशो नंदगोपप्रियात्मजः । यमुनावेगसंहारी बलभद्रप्रियानुजः ॥३॥

पूतनाजीवितहरः शकटासुरभंजनः । नंदव्रजजनानंदी सच्चिदानंदविग्रहः ॥४॥

नवनीतनवाहारी मुचुकंदप्रसादकः । षोडशस्त्रीसहस्त्रेशस्त्रिभंगी मधुराकृतिः ॥५॥

शुकवागमृताब्धींदुर्गोविंदो गोविंदां पतिः । वत्सपालनसंचारी धेनुकासुरभंजनः ॥६॥

तृणीकृततृणावर्तो यमलार्जुनभंजनः । उत्तालतालभेत्ता च तमालश्यामलाकृतिः ॥७॥

गोपगोपीश्वरो योगी सूर्यकोटिसमप्रभः । इलापतिः परं ज्योतिर्यादवेंद्रो यदूद्वहः ॥८॥

वनमाली पीतवासाः पारिजातापहारकः । गोवर्धनाचलोद्धर्ता गोपालः सर्वपालकः ॥९॥

अजो निरंजनः कामजनकः कञ्जलोचनः । मधुहामथुरानाथो द्वारकानायको बली ॥१०॥

वृन्दावनांतःसंचारी तुलसीदामभूषणः । स्यमंतकमणेर्हर्ता नरनारायणात्मकः ॥११॥

कुब्जाकृष्णांबरधरो मायी परमपूरषः । मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्धविशारदः ॥१२॥

संसारवैरी कंसारिर्मुररिर्नरकांतकः । अनादिर्ब्रह्मचारी च कृष्णाव्यसनकर्षकः ॥१३॥

शिशुपालशिरश्छेत्ता दुर्योधनकुलांतकृत् । विदुराक्रूरवरदो विश्वरूपप्रदर्शकः ॥१४॥

सत्यवाक् सत्यसंकल्पः सत्यभामारतो जयी । सुभद्रापूर्वजो विष्णुर्भीष्ममुक्तिप्रदायकः ॥१५॥

जगद्गुरुर्जगन्नाथो वेणुवाद्यविशारदः । वृषभासुरविध्वंसी बाणासुरबलांतकृत् ॥१६॥

युधिष्ठिरप्रतिष्ठाता बर्हिबर्हावतंसकः । पार्थसारथिरव्यक्तो गीतामृतमहोदधिः ॥१७॥

कालीयफणिमाणिक्यरंजितश्रीपदांबुजः । दामोदर यज्ञभोक्ता दानवेन्द्राविनाशनः ॥१८॥

नारायणः परब्रह्म पन्नगाशनवाहनः । जलक्रिडासमासक्तगोपीवस्त्रापहारकः ॥१९॥

पुण्यश्लोकस्तीर्थकरो वेदवेद्यो दयानिधिः । सर्वतीर्थात्मकः सर्वग्रहरूपः परात्परः ॥२०॥

इत्येवं कृष्णदेवस्य नाम्नमष्टोत्तरं शतम् । कृष्णेन कृष्णभक्तेन श्रुत्वा गीतामृतं पुरा ॥२१॥

स्तोत्रं कृष्णप्रियकरं कृतं तस्मान्मया पुरा । कृष्णनामामृतं नाम परमानंददायकम् ॥२२॥

अत्युपद्रवदुःखघ्नं परमायुष्यवर्धनम् । दानं श्रुतं तपस्तीर्थं यत्कृतं त्विह जन्मनि ॥२३॥

पठतां श्रृण्वतां चैव कोटिकोटिगुणं भवेत् पुत्रप्रदमपुत्राणामगतीनं गतिप्रदम् ॥२४॥

धनावहं दरिद्राणां जयेच्छूनां जयावहम् । शिशूनां गोकुलानां च पुष्टिदंपुष्टिवर्धनम् ॥२५॥

वातग्रहज्वरदीनां शमनं शांतिमुक्तिदम् । समस्तकामदं सद्यः कोतिजन्माघनाशनम् ॥२६॥

अन्ते कृष्णस्मरणदं भवताभयापहम्। कृष्णाय यादवेंद्राय ज्ञानमुद्राय योगिने। नाथाय रुक्मिणीशाय नमो वेदांतवेदिने॥२७॥

इम मन्त्रं महादेव जपन्नेव दिवानिशम् । सर्वग्रहानुग्रहभाक् सर्वप्रियतमो भवेत् ॥२८॥

पुत्रपौत्रैः परिवृतः सर्वसिद्धिसमृद्धिमान् । निर्विश्य भोगानंतेऽपि कृष्णसायुज्यमाप्नुयात् ॥२९॥

॥इति श्रीनारदपचरात्रे ज्ञानामृतसारे उमामहेश्वरसंवादान्तर्गतधरणीशेषसंवादे श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं संपूर्णम्॥

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

॥श्री कृष्ण कृपा कटाक्ष स्त्रोत्र ॥

भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं, स्वभक्तचित्तरंजनं सदैव नन्दनन्दनम्।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं, अनंगरंगसागरं नमामि कृष्णनागरम्॥१॥
मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनं, विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम्।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं, महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णावारणम्॥२॥

कदम्बसूनकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलं, व्रजांगनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम्।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया, युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम्॥३॥
सदैव पादपंकजं मदीय मानसे निजं, दधानमुक्तमालकं नमामि नन्दबालकम्।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं, समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम्॥४॥

भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं, यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम्।
दृगन्तकान्तभंगिनं सदा सदालिसंगिनं, दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम्॥५॥
गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं, सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम्।
नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटं, नमामि मेघसुन्दरं तडित्प्रभालसत्पटम्॥६॥

समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोदनं, नमामि कुंजमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम्।
निकामकामदायकं दृगन्तचारुसायकं, रसालवेणुगायकं नमामि कुंजनायकम्॥७॥
विदग्धगोपिकामनोमनोज्ञतल्पशायिनं, नमामि कुंजकानने प्रव्रद्धवन्हिपायिनम्।
किशोरकान्तिरंजितं दृअगंजनं सुशोभितं, गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम्॥८॥

यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा, मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम्।
प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान, भवेत्स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान॥९॥

मधुरास्टकम

अधरम मधुरम वदनम मधुरमनयनम मधुरम हसितम मधुरम
हृदयम मधुरम गमनम मधुरममधुराधिपतेर अखिलम मधुरम॥१॥
वचनं मधुरं, चरितं मधुरं, वसनं मधुरं, वलितं मधुरम् ।
चलितं मधुरं, भ्रमितं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ २॥
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः, पाणिर्मधुरः, पादौ मधुरौ ।
नृत्यं मधुरं, सख्यं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ३॥
गीतं मधुरं, पीतं मधुरं, भुक्तं मधुरं, सुप्तं मधुरम् ।
रूपं मधुरं, तिलकं मधुरं, मधुरधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ४॥
करणं मधुरं, तरणं मधुरं, हरणं मधुरं, रमणं मधुरम् ।
वमितं मधुरं, शमितं मधुरं, मधुरधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ५॥
गुन्जा मधुरा, माला मधुरा, यमुना मधुरा, वीची मधुरा ।
सलिलं मधुरं, कमलं मधुरं, मधुरधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ६॥
गोपी मधुरा, लीला मधुरा, युक्तं मधुरं, मुक्तं मधुरम् ।
दृष्टं मधुरं, शिष्टं मधुरं, मधुरधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ७॥
गोपा मधुरा, गावो मधुरा, यष्टिर्मधुरा, सृष्टिर्मधुरा ।
दलितं मधुरं, फलितं मधुरं, मधुरधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ८॥

॥ इति श्रीमद् वल्लभाचार्यविरचितं मधुराष्टकं सम्पूर्णम् ॥

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

॥ गोपी गीत ॥

कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्षः स्थले कौस्तुभं।
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणं॥

सर्वांगे हरि चन्दनं सुललितं कंठे च मुक्तावली।
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपाल चूडामणिः॥

जयति तेऽधिकं जन्मना ब्रजः श्रयत इन्दिरा
शश्वदत्र हि। दयित दृश्यतां दिक्षु तावका
स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते॥१॥

शरदुदाशये साधुजातसत् सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा।
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका वरद निघ्नतो नेह किं वधः॥२॥

विषजलाप्ययाद्व्यालराक्षसाद्वर्षमारुताद्वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद्विश्वतोभया दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः॥३॥

न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान् सात्वतां कुले॥४॥

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते चरणमीयुषां संसृतेर्भयात्।
करसरोरुहं कान्त कामदं शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम्॥५॥

व्रजजनार्तिहन्वीर योषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित।
भज सखे भवत्किंकरीः स्म नो जलरुहाननं चारु दर्शय॥६॥

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम्।
फणिफणार्पितं ते पदांबुजं कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम्॥७॥

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यतीरधरसीधुनाऽऽप्यायस्व नः॥८॥

तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः॥९॥

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम्।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक
नो मनः क्षोभयन्ति हि॥१०॥

चलसि यद्व्रजाच्चारयन्पशून् नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम्।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त
गच्छति॥११॥

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलैर्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम्।
घनरजस्वलं दर्शयन्मुहुर्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि॥१२॥

प्रणतकामदं पद्मजार्चितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि।
चरणपङ्कजं शंतमं च ते रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन्॥१३॥

सुरतवर्धनं शोकनाशनं स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम्।
इतररागविस्मारणं नृणां वितर वीर नस्तेऽधरामृतम्॥१४॥

अटति यद्भवानह्नि काननं त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम्।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते जड उदीक्षतां
पक्ष्मकृद्दृशाम्॥१५॥

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवानतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः कितव योषितः
कस्त्यजेन्निशि॥१६॥

रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम्।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते
मनः॥१७॥

व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम्।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां
यन्निषूदनम्॥१८॥

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रिय दधीमहि
कर्कशेषु।
तेनाटवीमटसि तद्व्यथते न किंस्वित् कूर्पादिभिर्भ्रमति
धीर्भवदायुषां नः॥ १९ ॥

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

श्रीकृष्ण की फोटो से समयाओं का समाधान

संकलन गुरुत्व कार्यालय

जिस प्रकार भगवान श्री कृष्ण के नाम का स्मरण,चिंतन अनंत पापों का नाश करने वाला हैं।

सकृन्मनः कृष्णापदारविन्दयोर्निवेशितं तद्गुणरागि यैरिह।

न ते यमं पाशभृतश्च तद्भटान् स्वप्नेऽपि पश्यन्ति हि चीर्णनिष्कृताः॥

भावार्थ: जो मनुष्य केवल एक बार श्रीकृष्ण के गुणों में प्रेम करने वाले अपने चित्त को श्रीकृष्ण के चरण कमलों में लगा देते हैं, वे पापों से छूट जाते हैं, फिर उन्हें पाश हाथ में लिए हुए यमदूतों के दर्शन स्वप्न में भी नहीं हो सकते।

अविस्मृतिः कृष्णपदारविन्दयोः क्षिणोत्यभद्राणि शमं तनोति च।

सत्वस्य शुद्धिं परमात्मभक्तिं ज्ञानं च विज्ञानविरागयुक्तम्॥

भावार्थ: श्रीकृष्ण के चरण कमलों का स्मरण सदा बना रहे तो उसी से पापों का नाश, कल्याण की प्राप्ति, अन्तः करण की शुद्धि, परमात्मा की भक्ति और वैराग्ययुक्त ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति अपने आप ही हो जाती हैं।

Dear Reader…

You have reached a Limit that is available for Free viewing !

Now it's unavailable to Unauthorised or Unregistered User.
We hope Enjoyed the preview?

Now time to Get A GK Premium Membership For Full Access ..
>> See details for this Membership in the our Store.

(GK Premium Membership available for any 1 Edition or All Adition.)

त्रैलोक्यमंगल श्रीकृष्ण कवचम्

त्रैलोक्यमंगलकवचम्
कुञ्चिताधरपुटेन पूरयन् वंशिकाप्रचलदंगुलीततिः ।
मोहयन्सुरभिवामलोचनाः पातु कोऽपि नवनीरदच्छविः॥
गणेशाय नमः । नारद उवाच ।
भगवन्सर्वधर्मज्ञ कवचं यत्प्रकाशितम् ।
त्रैलोक्यमंगलं नाम कृपया कथय प्रभो ॥१॥
सनत्कुमार उवाच ।
श्रृणु वक्ष्यामि विपेन्द्र कवचं परमाद्भुतम् ।
नारायणेन कथितं कृपया ब्रह्मणे पुरा ॥२॥
ब्रह्मणा कथितं मह्यं परं स्नेहाद्वदामि वै ।
अतिगुह्यतरं तत्त्वं ब्रह्ममंत्रौघविग्रहम् ॥३॥
यद्धृत्वा पठनाद्ब्रह्मा सृष्टिं वितनुते ध्रुवम् ।
यद्धृत्वा पठनात्पाति महालक्ष्मीर्जगत्रयम् ॥४॥
पठनाद्धारणाच्छंभुः संहर्ता सर्वमंत्रवित् ।
त्रैलोक्यजननी दुर्गा महिषादिमहासुरान् ॥५॥
वरदृप्तान् जघानैव पठनाद्धारणाद्यतः ।
एवमिन्द्रादयः सर्वे सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥६॥
इदं कवचमत्यंतगुप्तं कुत्रापि नो वदेत् ।
शिष्याय भक्तियुक्ताय साधकाय प्रकाशयेत् ॥७॥
शठाय परशिष्याय दत्वा मृत्युमवप्नुयात् ।
त्रैलोक्यमंगस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः ॥८॥
ऋषिश्छंदश्च गायत्री देवो नारायणः स्वयम् ।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥९॥
प्रणवो मे शिरः पातु नमो नारायणाय च ।
भालं मे नेत्रयुगलमष्टार्णो भुक्तिमुक्तिदः ॥१०॥
क्लीं पायाच्छ्रत्रियुग्मं चैकाक्षरः सर्वमोहनः ।
क्लीं कृष्णाय सदा घ्राणं गोविंदायेति जिह्विकाम् ॥११॥
गोपीजनपदवल्लभाय स्वाहाननं मम ।
अष्टादशाक्षरो मंत्रः कण्ठं पातु दशाक्षरः ॥१२॥
गोपीजनपदवल्लभाय स्वाहा भुजद्वयम् ।
क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलाङ्गाय नमः स्कंधौ दशाक्षरः॥१३॥
क्लीं कृष्णः क्लीं करौ पायात् क्लीं कृष्णो मां गतोऽवतु।
हृदयं भुवनेशानः क्लीं कृष्णः क्लीं स्तनौ मम ॥१४॥
गोपालायाग्निजायान्तं कुक्षियुग्मं सदाऽवतु ।
क्लीं कृष्णाय सदा पातु पार्श्वयुग्ममनुत्तमः ॥१५॥
कृष्णगोविंदकौ पातां स्मराद्यौ ङेयुतौ मनुः ।
अष्टाक्षरः पातु नाभिं कृष्णेति द्वयक्षरोऽवतु ॥१६॥
पृष्ठं क्लीं कृष्णकं गल्लं क्लीं कृष्णाय द्विठान्तकः ।
सक्थिनी सततं पातु श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णठद्वयम् ॥१७॥
ऊरू सप्ताक्षरः पायात्रयोदशाक्षरोऽवतु ।
श्री ह्रीं क्लीं पदतो गोपीजनवल्लभपदं ततः ॥१८॥
भाय स्वाहेति पायुं वै क्लीं ह्रीं श्रीं स दशार्णकः ।
जानुनी च सदा पातु ह्रीं श्रीं क्लीं च दशाक्षरः ॥१९॥
त्रयोदशाक्षरः पातु जम्घे चक्रायुदायुधः ।
अष्टादशाक्षरः ह्रीं श्रीं पूर्वको विंशदर्णकः ॥२०॥
सर्वांगं मे सदा पातु द्वारकानायको बली ।
नमो भगवते पश्चाद्वासुदेवाय तत्परम् ॥२१॥
ताराद्यो द्वादशार्णोऽयं प्राच्यां मां सर्वदाऽवतु ।
श्रीं ह्रीं क्लीं च दशार्णस्तु ह्रीं क्लीं श्रीं षोडशार्णकः ॥२२॥
गदाद्युदायुधो विष्णुर्मामग्नेर्दिशि रक्षतु ।
ह्रीं श्रीं दशाक्षरो मंत्रो दक्षिणे मां सदाऽवतु ॥२३॥
तारो नमो भगवते रुक्मिणीवल्लभाय च ।
स्वाहेति षोडशार्णोऽयं नैऋत्यां दिशि रक्षतु ॥२४॥
क्लीं हृषीकेशाय पदं नमो मां वारुणेऽवतु ।
अष्तादशार्णः कामान्तो वायव्ये मां सदाऽवतु ॥२५॥
श्रीं मायाकामकृष्णाय गोविंदाय द्विठो मनुः ॥
द्वादशार्णात्मको विष्णुरुत्तरे मां सदाऽवतु ॥२६॥
वाग्भयं कामकृष्णायं ह्रीं गोविंदाय तत्परम् ।
श्रीं गोपीजनवल्लभान्ताय स्वाहा करौ ततः ॥२७॥
द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रो मामैशान्ये सदाऽवतु ।
कालियस्य फणामध्ये दिव्यं नृत्यं करोति तम् ॥२८॥
नमामि देवकीपुत्रं नृत्यराजानमच्युतम् ।
द्वात्रिंशदक्षरो मंत्रोऽप्यधो मां सर्वदाऽवतु ॥२९॥
कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि ।

गुरुत्व कार्यालय द्वारा रत्न-रुद्राक्ष परामर्श Book **Now** @**RS:- ~~910~~ 550***
>> Order Now | Email US | Customer Care: 91+ 9338213418, 91+ 9238328785

तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयादेषां मां पातु चोर्ध्वतः ॥३०॥
इति ते कथितं विप्र ब्रह्म मंत्रौघविग्रहम् ।
त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं ब्रह्मरूपकम् ॥३१॥
ब्रह्मणा कथितं पूर्वं नारायणमुखाच्छ्रतम् ।
तव स्नेहान्मयाऽऽख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ॥३२॥
गुरुं प्रणम्य विधिवत्कवचं प्रपठेत्ततः ।
सकृद् द्विस्त्रिर्यथाज्ञानं स हि सर्वतपोमयः ॥३३॥
मंत्रेषु सकलेष्वेव देशिको नात्र संशयः ।
शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्यविधिः स्मृतः ॥३४॥
हवनादिन्दशांशेन कृत्वा तत्साधयेद् ध्रुवम् ।
यदि स्यात्सिद्धकवचो विष्णुरेव भवेत्स्वयम् ॥३५॥
मंत्रसिद्धिर्भवेत्तस्य पुरुश्चर्याविधानतः ।
स्पर्धामुद्धूय सततं लक्ष्मीर्वाणी वसेत्ततः ॥३६॥
पुष्पांजल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत्सकृत् ।
दशवर्षसहस्त्राणी पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥३७॥
भूर्जे विलिख्यांगुलिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ।
कंठे वा दक्षिणे बाहौ सोऽपि विष्णुर्न संशयः ॥३८॥
अश्वमेधसहस्त्राणि वाजपेयशतानि च ।
महादानानि यान्येव प्रादक्षिण्यं भुवस्तथा ॥३९॥
कलां नार्हन्ति तान्येव सकृदुच्चारणात्ततः ।
कवचस्य प्रसादेन जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥४०॥
त्रैलोक्यम् क्षोभयत्येव त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।
इदम् कवचमज्ञात्व यजेद्यः पुरुशोत्तमम् ।
शतलक्षं प्रजप्तोऽपि न मन्त्रस्तस्य सिध्यति ॥४१॥
इति श्रीनारदपंचरात्रे ज्ञानामृतसारे त्रैलोक्यमंगलकवचं संपूर्णम् ।

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है।

>> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

ब्रह्मा रचित कृष्णस्तोत्र

ब्रह्मोवाच :

रक्ष रक्ष हरे मां च निमग्नं कामसागरे।
दुष्कीर्तिजलपूर्णे च दुष्पारे बहुसंकटे ॥१॥

भक्तिविस्मृतिबीजे च विपत्सोपानदुस्तरे।
अतीव निर्मलज्ञानचक्षुः-प्रच्छन्नकारणे ॥२॥

जन्मोर्मि-संगसहिते योषिन्नक्राघसंकुले।
रतिस्रोतःसमायुक्ते गम्भीरे घोर एव च ॥३॥

प्रथमासृतरूपे च परिणामविषालये।
यमालयप्रवेशाय मुक्तिद्वारातिविस्तृतौ ॥४॥

बुद्ध्या तरण्या विज्ञानैरुद्धरास्मानतः स्वयम्।
स्वयं च त्व कर्णधारः प्रसीद मधुसूदन ॥५॥

मद्विधाः कतिचिन्नाथ नियोज्या भवकर्मणि।
सन्ति विश्वेश विधयो हे विश्वेश्वर माधव ॥६॥

न कर्मक्षेत्रमेवेद ब्रह्मलोकोऽयमीप्सितः।
तथाऽपि न स्पृहा कामे त्वद्भक्तिव्यवधायके ॥७॥

हे नाथ करुणासिन्धो दीनबन्धो कृपां कुरु।
त्वं महेश महाज्ञाता दुःस्वप्नं मां न दर्शय ॥८॥

इत्युक्त्वा जगतां धाता विरराम सनातनः।
ध्यायं ध्यायं मत्पदाब्जं शश्वत्सस्मार मामिति ॥९॥

ब्रह्मणा च कृतं स्तोत्रं भक्तियुक्तश्च यः पठेत्।
स चैवाकर्मविषये न निमग्नो भवेद् ध्रुवम् ॥१०॥

मम मायां विनिर्जित्य स ज्ञानं लभते ध्रुवम्।
इह लोके भक्तियुक्तो मद्भक्तप्रवरो भवेत् ॥११॥

॥ इति श्रीब्रह्मदेवकृतं कृष्णस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❖क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?

❖क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?

❖क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com www.gurutvajyotish.com and gurutvakaryalay.blogspot.com

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

श्रीकृष्णाष्टकम्

पार्वत्युवाच-

कैलासशिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शंकरम्।
ब्रह्माण्डाखिलनाथस्त्वं सृष्टिसंहारकारकः॥१॥
त्वमेव पूज्यसेलौकै ब्रह्मविष्णुसुरादिभिः।
नित्यं पठसि देवेश कस्य स्तोत्रं महेश्वरः॥२॥
आश्चर्यमिदमत्यन्तं जायते मम शंकर।
तत्प्राणेश महाप्राज्ञ संशयं छिन्धि शंकर॥३॥
श्री महादेव उवाच-
धन्यासि कृतपुण्यासि पार्वति प्राणवल्लभे।
रहस्यातिरहस्यं च यत्पृच्छसि वरानने॥४॥
स्त्रीस्वभावान्महादेवि पुनस्त्वं परिपृच्छसि।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः॥५॥
दत्ते च सिद्धिहानिः स्यात्तस्माद्यत्नेन गोपयेत्।
इदं रहस्यं परमं पुरुषार्थप्रदायकम्॥६॥
धनरत्नौघमाणिक्यं तुरंगं गजादिकम्।
ददाति स्मरणादेव महामोक्षप्रदायकम्॥७॥
तत्तेऽहं संप्रवक्ष्यामि श्रृणुष्वावहिता प्रिये।
योऽसौ निरंजनो देवश्चित्स्वरूपी जनार्दनः॥८॥
संसारसागरोत्तारकारणाय सदा नृणाम्।
श्रीरंगादिकरूपेण त्रैलोक्यं व्याप्य तिष्ठति॥९॥
ततो लोका महामूढा विष्णुभक्तिविवर्जिताः।
निश्चयं नाधिगच्छन्ति पुनर्नारायणो हरिः॥१०॥
निरंजनो निराकारो भक्तानां प्रीतिकामदः।
वृदावनविहाराय गोपालं रूपमुद्वहन्॥११॥
मुरलीवादनाधारी राधायै प्रीतिमावहन्।
अंशांशेभ्यः समुन्मील्य पूर्णरूपकलायुतः॥१२॥
श्रीकृष्णचन्द्रो भगवान्नन्दगोपवरोद्यतः।
धरिणीरूपिणी माता यशोदानन्ददायिनी॥१३॥
द्वाभ्यां प्रायाचितो नाथो देवक्यां वसुदेवतः।
ब्रह्मणाऽभ्यर्थितो देवो देवैरपि सुरेश्वरि॥१४॥
जातोऽवन्यां मुकुन्दोऽपि मुरलीवेदरेचिका।
तयासार्द्धं वचःकृत्वा ततो जातो महीतले॥१५॥
संसारसारसर्वस्वं श्यामलं महदुज्ज्वलम्।
एतज्ज्योतिरहं वेद्यं चिन्तयामि सनातनम्॥१६॥
गौरतेजो बिना यस्तु श्यामतैजः समर्चयेत्।
जपेद्वा ध्यायते वापि स भवेत्पातकी शिवे॥१७॥
स ब्रह्महासुरापी च स्वर्णस्तेयी च पंचमः।
एतैर्दोषैर्विलिप्ये तेजोभेदान्महेश्वरि।१८॥
तस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधा राधामाधवरूपकम्।
तस्मादिदं महादेवि गोपालेनैव भाषितम्॥१९॥
दुर्वाससो मुनेर्मोहे कार्तिक्यां रासमण्डले।
ततः पृष्टवती राधा सन्देहं भेदमात्मनः॥२०॥
निरंजनात्समुत्पन्नं मयाऽधीतं जगन्मयि।
श्रीकृष्णेन ततः प्रोक्तं राधायै नारदाय च॥२१॥
ततो नारदतः सर्व विरला वैष्णवास्तथा।
कलौ जानन्ति देवेशि गोपनीयं प्रयत्नतः॥२२॥
शठाय कृपणायाथ दाम्भिकाय सुरेश्वरि।
ब्रह्महत्यामवाप्नोति तस्माद्यत्नेन गोपयेत्॥२३॥

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

श्रीमद्भगवदगीता के 18 अध्याय का महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्रीमद्भगवदगीता में श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवाद का वर्णन मिलता है, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया जिसमें मनुष्य जीवन की हर समस्या का हल छिपा है। गीता के 18 अध्याय और 700 श्लोक में धर्म, कर्म, कर्मफल, जन्म, मृत्यु, सत्य, असत्य आदि जीवन से जुडे विभिन्न प्रश्नों के उत्तर मौजूद हैं।

श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता के श्लोक उस समय सुनाये जब महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन युद्ध करने से मना करते हैं तब श्री कृष्ण अर्जुन को गीता के श्लोक सुनाते हैं और कर्म एंव धर्म के सनातन ज्ञान से अवगत कराते हैं। श्रीकृष्ण के इन्हीं उपदेशों को भगवत गीता में संग्रहित किया गया है। कौरवों व पांडवों के बीच हुवे महाभारत के युद्ध के दौरान श्रीकृष्ण ने अर्जुन के सारथी की भूमिका निभाई और अर्जुन को भगवद्गीता का ज्ञान दिया। युद्ध में श्री कृष्ण ने अर्जुन को दिये गये परम दुर्लभ उपदेशों के कारण श्रीकृष्ण को जगतगुरु का सम्मान दिया जाता है। श्रीमद्भगवदगीता को श्री कृष्ण की जीवन की सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है।

प्रथम अध्याय का महत्व

प्रथम अध्याय को अर्जुनविषादयोग नाम दिया गाया है। इसके 46 श्लोकों में अर्जुन के मन की स्थिति का वर्णन किया गया है।

प्रथम अध्याय श्रीकृष्ण के उपदेश का अद्वितीय वर्णन किया गया हैं।

जिसमें श्रीकृष्ण अर्जुन को जीवन की अति गंभीर समस्या के समाधान के लिये उपदेश देते हैं।

श्रीकृष्ण अर्जुन को दोनों सेनाओं के शूरवीर एवं उनकी क्षमताओं से अवगत रकवाते हैं।

दोनों सेनाओं की शंख-ध्वनि का वर्णन किया गया है।

अर्जुन द्वारा सेना-निरीक्षण का वर्णन किया गया है।

अर्जुन अर्जुन के कायरता, स्नेह और शोकयुक्त वचन)

लेकिन अर्जुन अपने स्वजन-सगे-संबंधियों से मोह से व्याप्त हुए। युद्ध करने से डरते हैं। श्रीकृष्ण ने अर्जुन की एसी स्थिति देखकर जान लिया कि अर्जुन का शरीर ठीक है, किंतु युद्ध आरंभ होने से पहले ही उस भीतर के क्षत्रिय का मनोबल टूट रहा है। युद्ध भूमि में बिना मन के यह शरीर लड़ नहीं सकता। इस लिए भगवान श्रीकृष्ण किस तरह अर्जुन को समझाते हैं उसका वर्णन हैं।

दूसरे अध्याय का महत्व

दूसरे अध्याय को सांख्य योग नाम दिया गाया है। इसके 72 श्लोकों में श्रीकृष्ण अर्जुन को कर्मयोग, ज्ञानयोग, सांख्ययोग, बुद्धि योग और आत्म का ज्ञान देते हैं।

दूसरे अध्याय में अर्जुन की कायरता का वर्णन हैं।

इसी में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया सांख्य योग के उपदेश का वर्णन हैं।

श्रीकृष्ण अर्जुन से उसके क्षत्रिय धर्म का पालन करने का उपदेश देकर उसे धर्म के अनुसार अपने कर्तव्य का पालन एवं युद्ध का प्रतिनिधित्व करने को कहते हैं।

Energized Tortoise Shree Yantra
4.8" Inch Only Rs.1099

श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को निष्काम कर्म योग के उपदेश का वर्णन हैं।

श्रीकृष्ण अर्जुन को स्थित प्रज्ञ पुरुष के लक्षण बताते हैं।

दूसरा अध्याय (सांख्य योग) वास्तव में संपूर्ण गीता का सारांश है। जिसे अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

तीसरे अध्याय का महत्व

तीसरे अध्याय को कर्म योग नाम दिया गाया है।

इसके 43 श्लोकों में श्रीकृष्ण अर्जुन को परिणाम की चिंता किए बिना अपना कर्म करते रहने का ज्ञान देते हैं।

श्रीकृष्ण अर्जुन को यज्ञादि कर्मों की आवश्यकता का ज्ञान देते हैं।

श्रीकृष्ण अर्जुन से ज्ञानी और भगवान के लिए भी लोक संग्रह के लिये किये जाने वाले कर्मों की आवश्यकता का वर्णन हैं।

श्रीकृष्ण अर्जुन को अज्ञानी एवं ज्ञानी के लक्षण तथा राग, द्वेष से उपर उठ कर कर्म करने के लिए प्रेरणा देते हैं।

आगे श्रीकृष्ण अर्जुन को काम एवं कामरुप का विरोध समझाते हैं और बताते हैं की किस प्रकार विषय काम द्वारा ज्ञानी का ज्ञान ढँका रहता है।

चतुर्थ अध्याय का महत्व

चतुर्थ अध्याय को ज्ञानकर्म संन्यास योग नाम दिया गाया है।

इसके 42 श्लोकों में श्रीकृष्ण अर्जुन को धर्मपारायण के संरक्षण और अधर्मी के विनाश में लिए गुरु के महत्व को समझाते हैं।

सद्गुण, ज्ञान एवं ईश्वर का प्रभाव और निष्काम कर्मयोग का वर्णन किया गया हैं।

योगी महापुरुषों के आचरण एवंर उनकी महिमा का वर्णन किया गया हैं।

विभिन्न यज्ञों का फल कथन किया गया हैं।

आगे श्रीकृष्ण अर्जुन को तत्व ज्ञान की महिमा समझाते हैं।

पांचवें अध्याय का महत्व

पांचवें अध्याय को कर्म संन्यास योग नाम दिया गाया है।

इसके 29 श्लोकों में अर्जुन श्रीकृष्ण से पूछते हैं कर्मयोग और सांख्य योग दोनों में से उनके लिए कौन-सा योग उत्तम है। उत्तम में श्रीकृष्ण कहते दोनों का लक्ष्य एक है लेकिन दोनों में कर्म योग उत्तम है।

सांख्ययोगी और निष्काम कर्मयोगी के लक्षण और उनकी महिमा का वर्णन किया गया हैं।

ज्ञानयोग से संबंधित विस्तृत वर्णन किया गया हैं।

भक्ति एवं ध्यान का वर्णन किया गया हैं।

छठे अध्याय का महत्व

छठे अध्याय को आत्मसंयम योग नाम दिया गाया है।

इसके 47 श्लोकों में श्रीकृष्ण अर्जुन को अष्टांग योग के बारे में बताते हैं कि किस प्रकार मन की दुविधा को दूर किया जा सकता है।

श्रीकृष्ण अर्जुन को निष्काम कर्म योग में संलग्न पुरुष के लक्षण बताते है।

इसमें आत्म-उद्धार की प्रेरणा और परमात्मा को प्राप्त पुरुष के लक्षण एवं महत्व का वर्णन किया गया हैं।

विस्तार से ध्यान योग की विधि, उसके फल, नियम, ध्यानयोग भक्ति एवं सांख्य योग प्राप्त पुरुष के लक्षण का वर्णन किया गया हैं। मन को वश में करने के महत्व का विस्तृत वर्णन किया गया हैं।

11 Pcs x 4 Colour Only Rs.370
21 Pcs x 4 Colour Only Rs.505
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

इसमें योगभ्रष्ट पुरुष की गति और योगी पुरुष की महिमा का वर्णन किया गया हैं।

सातवें अध्याय का महत्व

सातवें अध्याय को ज्ञान विज्ञान योग नाम दिया गाया है। इसके 30 श्लोकों में श्रीकृष्ण निरपेक्ष भाव से वास्तविकता और अन्य भ्रामक शक्ति एवं माया से अर्जुन को अवगत कराते हैं।

ज्ञान विज्ञान योग का वर्णन किया गया हैं।

समस्त पदार्थों में भगवान की व्यापकता का वर्णन किया गया हैं।

आसुरी स्वभाव वालें लोगों की निंदा और भगवान के भक्तों की प्रशंसा का वर्णन किया गया हैं।

देवताओं की उपासना का वर्णन किया गया हैं।

भगवान के प्रभाव और स्वरूप को जानने वालों की महिमा एवं नहीं जानने वालों का वर्णन किया गया हैं।

आठवें अध्याय का महत्व

आठवें अध्याय को अक्षरब्रह्म योग नाम दिया गाया है। इसके 28 श्लोकों में श्रीकृष्ण अर्जुन को स्वर्ग और नरक के सिद्धांत से अवगत कराते हैं। श्रीकृष्ण बताते हैं कैसे मृत्यु से पहले व्यक्ति के विचार एवं आध्यात्मिक संसार तथा नरक और स्वर्ग को जाने की स्थिती का वर्णन करते हैं।

इसमें अर्जुन ब्रह्म, अध्यात्म और कर्मादि के संबंध में सात प्रश्न करते हैं जिसका उत्तर श्रीकृष्ण देते हैं।

इसमें परम पुरुष की प्राप्ति एवं भक्ति योग का वर्णन किया गया हैं।

इसमें श्रीकृष्ण अर्जुन को शुक्ल मार्ग और कृष्ण मार्ग से अवगत कराते हैं।

नौवें अध्याय का महत्व

नौवें अध्याय को राजविद्याराजगुह्य योग नाम दिया गाया है। इसके 34 श्लोकों में श्रीकृष्ण अर्जुन को बताते हैं, कैसे आंतरिक ऊर्जा का सृजन करती है, सृष्टि मे व्याप्त होती है और पूरे ब्रह्मांड को नष्ट कर देती है।

इसमें विज्ञान के प्रभावसहित ज्ञान की महत्ता का वर्णन किया गया हैं।

श्रीकृष्ण अर्जुन से इस जगत की उत्पत्ति का वर्णन करते हैं।

भगवान का तिरस्कार करने वाले, आसुरी प्रकृति के लोग एवं दैवी प्रकृति वाले भक्त भजन का प्रकार का वर्णन किया गया हैं।

इसमें सर्वव्याप्त भगवान के स्वरूप का वर्णन किया गया हैं।

इसमें सकाम और निष्काम विचारों का वर्णन, उपासना से फल कि प्राप्ति का उल्लेख किया गया हैं।

इसमें भगवान की निष्काम भक्ति का फल एवं महिमा का वर्णन किया गया हैं।

दसवें अध्याय का महत्व

दसवें अध्याय को विभूति योग नाम दिया गाया है। इसके 42 श्लोकों में श्रीकृष्ण अर्जुन को बताते हैं किस प्रकार सभी प्रकार के तत्व और आध्यात्मिक अस्तित्व के अंत का कारण बन जाते हैं।

श्रीकृष्ण बताते हैं किस प्रकार उन्हों ने अपने भाव, संकल्प एवं अपनी योगशक्ति से सात महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र, कण्व, भारद्वाज, अत्रि, वामदेव और शौनक तथा चार उनसे भी पूर्व में उत्पन्न होने वाले सनक, सनन्दन, सनातन व सनत्कुमार तथा तथा स्वायम्भुव, स्वरोचिष,

उत्तम (औत्तम), तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देव सावर्णि, इन्द्रसावर्णि इस सभी चौदह मनु को भी अपनी योगशक्ति से उत्पन्न किया है। चर और अचररूप व्याप्त सभी प्रजा इस सब के द्वारा समग्र संसार में उत्पन्न हुई हैं।

भक्तियोग का फल और प्रभाव सहित कथन का वर्णन किया गया है।

अर्जुन द्वारा भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति तथा विभूति और योगशक्ति को जानने का वर्णन किया गया है।

इस में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अपनी विभूतियों और योगशक्ति का वर्ण करते है।

ग्यारहवें अध्याय का महत्व

ग्यारहवें अध्याय को विश्वस्वरूपदर्शन योग नाम दिया गाया है।

इसके 55 श्लोकों में अर्जुन के निवेदन पर श्रीकृष्ण अपना विश्वरूप धारण कर लेते हैं।

संजय द्वारा धृतराष्ट्र को श्रीकृष्ण के विश्वरूप की महिमा का वर्णन करते है।

अर्जुन ने जब भगवान के विश्वरूप का देखा, तो विश्वरूप की स्तुति की, भगवान का सामर्थ्य एवं प्रभाव को जाना, तीनों सेनाओं के सभी योद्धाओं को भगवान के विराट मुख में प्रवेश होने का वर्णन हैं।

इसमें भगवान द्वारा अपने दिव्य प्रभाव का वर्णन और अर्जुन को युद्ध के लिए उत्साहित करने का वर्णन मिलता हैं।

भयभीत होकर अर्जुन भगवान की स्तुति करते हैं और भगवान को चतुर्भुज रूप में दर्शन देने के लिए प्रार्थना करते हैं।

भगवान द्वारा अपने विश्वरूप के दर्शन की महिमा का वर्णन तथा चतुर्भुज में दर्शन कराकर वापस अपने सौम्य रूप आने का प्रसंग वर्णित हैं।

इसमें भगवान द्वारा चतुर्भुज रूप के दर्शन की दुर्लभता एवं उसका प्रभाव फल के बारे में उल्लेख किया गया हैं।

बारहवें अध्याय का महत्व

बारहवें अध्याय को भक्ति योग नाम दिया गाया है।

इसके 20 श्लोकों में श्रीकृष्ण अर्जुन को अध्याय में भगवान भक्ति के मार्ग की महिमा बताते हैं एवं भक्ति योग का वर्णन समझाते हैं।

इसमें साकार और निराकार के उपासकों की श्रेष्ठता, कठिनता, ध्यान, कर्म तथा त्याग के निर्णय और भगवत्प्राप्ति के उपाय का वर्णन किया गया हैं।

इसमें भक्त के लक्षण एवं उनकी महिमा का वर्णन किया गया है।

तेरहवें अध्याय का महत्व

तेरहवें अध्याय को क्षेत्र क्षेत्रज्ञ योग नाम दिया गाया है।

इसके 35 श्लोकों में श्रीकृष्ण अर्जुन को क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के ज्ञान के बारे में बताते है तथा सत्व, रज और तम गुणों द्वारा उत्तम शरीर में जन्म लेने का उपाय बताते हैं।

इस में क्षेत्र एवं क्षेत्रज्ञ का लक्षण एवं स्वरुप, विकार, गुण, वैराग्य, ज्ञान-अज्ञान इत्यादि का वर्णन किया गया है।

प्रकृति द्वारा उत्पन्न विभिन्न विकार गणों की उत्पत्ति विभिन्न देहों की प्राप्ति, ध्यान योग, ज्ञान योग एवं कर्म योग से क्षेत्र की प्राप्ति एवं क्षेत्रज्ञ में भेद आदि का वर्णन किया गया है।

चौदहवें अध्याय का महत्व

चौदहवें अध्याय को गुणत्रय विभाग योग नाम दिया

तंत्र रक्षा कवच

तंत्र रक्षा कवच को धारण करने से व्यक्ति के उपर किगई समस्त तांत्रिक बाधाएं दूर होती हैं, उसी के साथ ही धारण कर्ता व्यक्ति पर किसी भी प्रकार कि नकारत्मन शक्तियो का कुप्रभाव नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले सभी लोगो द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षाहोती हैं।

मूल्य मात्र: Rs.910

मनोकामना पूर्ति हेतु विभिन्न कृष्ण मंत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

मूल मंत्र :

कृं कृष्णाय नमः

यह भगवान कृष्ण का मूलमंत्र हैं। इस मूल मंत्र के नियमित जाप करने से व्यक्ति को जीवन में सभी बाधाओं एवं कष्टों से मुक्ति मिलती हैं एवं सुख कि प्राप्ति होती हैं।

सप्तदशाक्षर मंत्रः

ॐ श्रीं नमः श्रीकृष्णाय परिपूर्णतमाय स्वाहा

यह भगवान कृष्ण का सत्तरा अक्षर का हैं। इस मूल मंत्र के नियमित जाप करने से व्यक्ति को मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चयात उसे जीवन में सबकुछ प्राप्त होता हैं।

तेईस अक्षर मंत्रः

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीकृष्णाय गोविंदाय

गोपीजन वल्लभाय श्रीं श्रीं श्री

यह तेईस अक्षर मंत्र के नियमित जाप करने से व्यक्ति कि सभी बाधाएँ स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

अट्ठाईस अक्षर मंत्रः

ॐ नमो भगवते नन्दपुत्राय

आनन्दवपुषे गोपीजनवल्लभाय स्वाहा

यह अट्ठाईस अक्षर मंत्र के नियमित जाप करने से व्यक्ति को समस्त अभिष्ट वस्तुओं कि प्राप्ति होती हैं।

Dear Reader…
You have reached a Limit that is available for Free viewing !

Now it's unavailable to Unauthorised or Unregistered User.
We hope Enjoyed the preview?

Now time to Get A GK Premium Membership For Full Access ..
>> See details for this Membership in the our Store.

(GK Premium Membership available for any 1 Edition or All Adition.)

कृष्ण मंत्र

भगवान श्री कृष्ण से संबंधी मंत्र तो शास्त्रों में भरे पडे हैं। लेकिन जन साधारण में कुछ खास मंत्रों का ही प्रचलन और अत्याधिक महत्व हैं।

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतः क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः॥

इस मंत्र को नियमित स्नान इत्यादि से निवृत होकर स्वच्छ कपडे पहन कर 108 बार जाप करने से व्यक्ति के जीवन में किसी भी प्रकार के संकट नहीं आते।

ॐ नमः भगवते वासुदेवाय कृष्णाय
क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः।

इस मंत्र को नियमित स्नान इत्यादि से निवृत होकर स्वच्छ कपडे पहन कर 108 बार जाप करने से आकस्मिक संकट से मुक्ति मिलति हैं।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम, राम-राम हरे हरे।

इस मंत्र को नियमित स्नान इत्यादि से निवृत होकर स्वच्छ कपडे पहन कर 108 बार जाप करने से व्यक्ति को जीवन मे समस्त भौतिक सुखो एवं मोक्ष प्राप्ति होती हैं।

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीकः 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफलः 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशरः 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA),
Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

पर्यूषण का महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

जैन धर्म के अनुयायी पर्यूषण पर्व को जीव की आत्म शुद्धि का मार्ग बताते हैं। जैन मुनिजनो के अनुसार पर्यूषण पर्व इष्ट आराधना और क्षमा का पर्व भी हैं। पर्यूषण को मुख्यत: मनुष्य के पुनर्निर्माण का द्योतक मानाजाता हैं। पर्यूषण में मनुष्य अपने भितर की विकृतियों का त्याग करता हैं।

पर्यूषण के दिनों में श्रावक-श्राविकाएं ब्रह्मचर्य का पालन, रात्रि भोज त्याग, सचित्त का त्याग रखते हैं। व्रत-उपवास, सामयिक-प्रतिक्रमण, प्रवचन-श्रवण आदि के माध्यम से इन दिनों अघिक से अघिक समय धर्म ध्यान में व्यतीत किया जाता हैं।

पर्यूषण के दिन श्रावक-श्राविकाएं उपवास रखते हैं और स्वयं के पापों की आलोचना करते हुए भविष्य में उनसे बचने की प्रतिज्ञा करते हैं। इसके साथ ही वे चौरासी लाख योनियों में विचरण कर रहे, समस्त जीवों से क्षमा माँगते हुए यह सूचित करते हैं कि उनका किसी से कोई बैर नहीं है।

श्रावक-श्राविकाएं परोक्ष रूप से वे यह संकल्प करते हैं कि वे प्रकृति में कोई हस्तक्षेप नहीं करेंगे। मन, वचन और काया से जानते या अजानते वे किसी भी हिंसा की गतिविधि में भाग न तो स्वयं लेंगे, न दूसरों को लेने को कहेंगे और न लेने वालों का अनुमोदन करेंगे। यह आश्वासन देने के लिए कि उनका किसी से कोई बैर नहीं है, वे यह भी घोषित करते हैं कि उन्होंने विश्व के समस्त जीवों को क्षमा कर दिया है और उन जीवों को क्षमा माँगने वाले से डरने की जरूरत नहीं है।

क्षमा देने से मनुष्य अन्य समस्त जीवों को अभयदान देते हैं और उनकी रक्षा करने का संकल्प लेते हैं। तब व्यक्ति संयम और विवेक का अनुसरण करेंगे, आत्मिक शांति अनुभव करेंगे और सभी जीवों और पदार्थों के प्रति मैत्री भाव रखेंगे। आत्मा तभी शुद्ध रह सकती है जब वह अपने सेबाहर हस्तक्षेप न करे और बाहरी तत्व से विचलित न हो। क्षमा-भाव जैन धर्म का मूलमंत्र है।

जैन धर्म में श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परम्परा में आठ दिनों तक "कल्पसूत्र" पढ़ा व सुना जाता हैं। जबकि जैन धर्म में स्थानकवासी परम्परा में आठ दिनों तक "अन्तकद्दशा सूत्र" का वाचन किया जाता हैं।

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

श्री नवकार मंत्र (नमस्कार महामंत्र)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवकार मंत्र समस्त जैन धर्मावलंबियो का मुख्य मंत्र है।

नमो अरिहंताणं

नमो सिद्धाणं

नमो आयरियाणं

नमो उवज्झायाणं

नमो लोएसव्वसाहूणं

एसो पंच नमुक्कारो

सव्व पावप्पणासणो

मंगलाणं च सव्वेसिं

पढमं हवई मंगलं

अर्थः

मैं अरिहंत भगवंतों को नमन करता हूं।
मैं सिद्ध भगवंतों को नमन करता हूं।
मैं आचार्य भगवंतों को नमन करता हूं।
मैं उपाध्याय भगवंतों को नमन करता हूं।
मैं लोक में रहे हुए सभी साधु भगवंतों को नमन करता हूं।
इन पांचों को किया हुआ नमस्कार
सभी पापों को नष्ट करता हैं।
एवं सभी मंगलों में भी
प्रथम (श्रेष्ठ) मंगल हैं।

जैन मुनियों के मत से नवकार महामंत्र जैन धर्म का सिद्ध एवं अत्यंत प्रभावशाली मंत्र हैं। इस मंत्र में समस्त रिद्धियाँ और सिद्धियाँ विद्यमान हैं। हर जैन धर्म के अनुयायी नवकार मंत्र का जप करता हैं।

नवकार महामंत्र अथवा नमस्कार महामंत्र में जिस परमेष्ठी भगवन्तों की आराधना की जाती है उन भगवन्तों में तप, त्याग, संयम, वैराग्य इत्यादि सात्विक गुण होते हैं। नवकार मंत्र के माध्यम से अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु, इन पाँच भगवंतों को परम इष्ट माना हैं। इसलिये इनको नमन करने की विधि को नवकार महामंत्र अथवा नमस्कार महामंत्र कहा जाता है। वैसे तो हर मंत्र अपने आप में रहस्य लिये होता है, परंतु नवकार महामंत्र तो परम रहस्यमय हैं।

नवकार महामंत्र के अति दिव्य प्रताप से साधक के समस्त दुःख सुख में बदल जाता हैं।

जैन विद्वानो के मत से नवकार मंत्र के स्मरण, चिन्तन, मनन और उच्चारण से ही मनुष्य के जन्म-जन्मांतरों के पापों से मुक्त हो कर उसे शाश्वत सुख प्राप्त होता हैं।

नवकार मंत्र जप के लाभ

- जब कोई व्यक्ति श्रद्धा पूर्ण भाव से नवकार मंत्र का केवल एक अक्षर उच्चरण करता हैं, तो उसके 7 सागरोपम जितने पापो का नाश होता हैं।
- जब कोई व्यक्ति "नमो अरिहंताणं" का उच्चरण करता हैं, तो उसके 50 सागरोपम जितने पाप नष्ट होते हैं।

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

- ❖ जब कोई व्यक्ति पूरा नवकार मंत्र जपता हैं, तो उसके 500 सागरोपम जितने पाप नष्ट होते हैं।
- ❖ यदि कोई व्यक्ति प्रातः काल उठकर 8 नवकार मंत्र जपता हैं, तो उसके 4000 सागरोपम जितने पाप नष्ट होते हैं।
- ❖ संपूर्ण नवकार मंत्र की 1 माला गिनने से 54000 सागरोपम जितने पाप नष्ट होते हैं।
- ❖ (सागरोपम अर्थात् जिसे गिनने में कठिनाई हो इतने अरबों वर्ष।)
- ❖ गर्भवती स्त्रियों के लिए इस मंत्र का जाप करना बच्चे के लिये अति उत्तम हैं।
- ❖ जन्म के समय यदि बालक के कान में यह मंत्र सुनाया जाये तो उसे जीवन में सुख-समृद्धि प्राप्त होती हैं।
- ❖ यदि किसी जीव को मृत्यु के समय नवकार मंत्र सुनाया जाये तो उसे सदगति प्राप्त होती हैं।
- ❖ नवकार मंत्र की महिमा अनंत व अपार हैं इसी लिये नवकार मंत्र को शक्तिदायक, विध्नविनाशक, अत्यंत प्रभावशाली व चमत्कारी हैं।

देवदर्शन स्तोत्रम्

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम्।1।

दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम्।2।

वीतरागमुखं द्रष्ट्वा, पद्मरागसमप्रभं।
जन्म-जन्मकृतं पापं दर्शनेन विनश्यति।3।

दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसार-ध्वान्त-नाशनं।
बोधनं चित्त-पद्मस्य, समस्तार्थ-प्रकाशनम्।4।

दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्मामृत-वर्षणम्।
जन्म-दाह-विनाशाय, वर्द्धनं सुख-वारिधेः।5।

जीवादि तत्त्व प्रतिपादकाय, सम्यक्त्व-मुख्याष्ट-गुणार्णवाय।
प्रशांत-रुपाय दिगम्बराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय ।6।

चिदानन्दैक-रुपाय, जिनाय परमात्मने।
परमात्म-प्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः।7।

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्य-भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर।8।

न हि त्राता न हि त्राता, न हि त्राता जगत्त्रये।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति ।9।

जिनेर्भक्तिः जिनेर्भक्तिः जिनेर्भक्तिः दिने दिने।
सदा मेऽस्तु, सदा मेऽस्तु, सदा मेऽस्तु भवे भवे।10।

जिनधर्म - विनिर्मुक्तो, मा भवेच्चक्रवर्त्यपि।
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासितः।11।

जन्म-जन्मकृतं पापं, जन्म-कोटिमुपार्जितम्।
जन्म-मृत्यु-जरा-रोगं, हन्यते जिन-दर्शनात्।12।

अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य,
देव ! त्वदीय चरणाम्बुज वीक्षणेन।
अद्य त्रिलोक-तिलकं ! प्रतिभासते मे,
संसार-वारिधिरयं चुलुक-प्रमाणम्।13।

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

भगवान महावीर की माता त्रिशला के 16 अद्भुत स्वप्न

संकलन गुरुत्व कार्यालय

जैन धर्म के 24वे तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्म से पूर्व आषाढ़ शुक्ल षष्ठी के दिन उनकी माता त्रिशला नगर में हो रही अद्भुत घटना के बारे में सोच रही थीं। माता त्रिशला उसी बारे में सोचते-सोचते गहरी नींद में सो गई। उसी रात्रि के अंतिम प्रहर में माता त्रिशला ने सोलह शुभ एवं मंगलकारी स्वप्न देखे। नींद से जागने पर रानी त्रिशला ने महाराज सिद्धार्थ से अपने सोहल स्वप्न के विषय में चर्चा की और उसका फल जानने की इच्छा प्रकट की। तब महाराजा सिद्धार्थ ने महारानी त्रिशला द्वारा देखे गए सपनों की विस्तृत जानकारी ज्योतिष विद्वानोकों दी, तब विद्वानों ने कहां महाराज महारानी ने स्वप्न में मंगलमय प्रतिको के दर्शन किए हैं।

विद्वानों ने रानी से कहा कि वह एक-एक कर अपने सारे स्वप्न बताएं, जिससे उसी प्रकार उसका फल बताते गए। तब महारानी त्रिशला ने अपने सारे स्वप्न उन्हें एक-एक कर विस्तार से सुनाएं जो इस प्रकार हैं..

1.

रानी को पहले स्वप्न में एक अति विशाल सफेद रंग का हाथी दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां उनके घर एक अद्भुत पुत्र रत्न उत्पन्न होगा।

2.

रानी को दूसरे स्वप्न में एक सफेद रंग का वृषभ दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र संसार का कल्याण करने
वाला होगा।

3.

रानी को तीसरे स्वप्न में सफेद रंग और लाल बालों वाला सिंह दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र सिंह के समान बलशाली होगा।

4.

रानी को चौथे स्वप्न में कमल आसन पर विराजमान लक्ष्मी का अभिषेक करते हुए दो हाथी दिखाई दिये थे।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां देवलोक से देवगण आकर उस पुत्र का अभिषेक करेंगे।

5.

रानी को पांचवें स्वप्न में दो सुगंधित पुष्पमालाएं दिखाई दी थी।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र धर्म प्रचारक होगा और जन-जन के लिए कल्याणकारी होगा।

6.

रानी को छठे स्वप्न में पूर्ण चंद्रमा दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां उसके जन्म से तीनों लोक आनंदित होंगे और वह चंद्रमा के समान शीतल व सौम्य होगा।

7.

रानी को सातवें स्वप्न में उदय होता सूर्य दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र सूर्य के समान तेजयुक्त चरौ और ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाला होगा।

8.

रानी को आठवें स्वप्न में कमल पत्रों से ढंके हुए दो स्वर्ण कलश दिखाई दिये थे।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र अनेक निधियों का स्वामी होगा।

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

9.

रानी को नौवें स्वप्न में सरोवर में क्रीड़ा करती दो मछलियां दिखाई दी थी।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र महाआनंद का दाता, दुखीका दुखहर्ता होगा।

10.

रानी को दसवें स्वप्न में कमलों से भरा सरोवर दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र शुभ लक्षणों से युक्त एवं कमलाकार सिंहासन विराजमान होगा।

11.

रानी को ग्यारहवें स्वप्न में लहरें उछालता समुद्र दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां पुत्र भूत-भविष्य-वर्तमान का ज्ञाता होगा।

12.

रानी को बारहवें स्वप्न में हीरे-मोती और रत्नज़डित स्वर्ण सिंहासन दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां पुत्र राज्य का स्वामी और प्रजा का हितचिंतक होगा।

13.

रानी को तेरहवें स्वप्न में देव विमान दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां इस जन्म से पूर्व वह पुत्र स्वर्ग का देवता होगा।

14.

रानी को चौदहवें स्वप्न में पृथ्वी को भेद कर निकलता नागों के राजा नागेन्द्र का विमान दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र जन्म से ही त्रिकालदर्शी होगा।

15.

रानी को पन्द्रहवें स्वप्न में रत्नों का ढेर दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र अनंत गुणों से संपन्न होगा।

16.

रानी को सोलहवें स्वप्न में धुआंरहित अग्नि दिखाई दी थी।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र सांसारिक कर्मो का अंत करके मोक्ष (निर्वाण) को प्राप्त होगा।

***

विवाह संबंधित समस्या

क्या आपके लडके-लडकी कि आपकी शादी में अनावश्यक रूप से विलम्ब हो रहा हैं या उनके वैवाहिक जीवन में खुशियां कम होती जारही हैं और समस्या अधिक बढती जारही हैं। एसी स्थिती होने पर अपने लडके-लडकी कि कुंडली का अध्ययन अवश्य करवाले और उनके वैवाहिक सुख को कम करने वाले दोषों के निवारण के उपायो के बार में विस्तार से जनकारी प्राप्त करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

विभिन्न चमत्कारी जैन मंत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

एका अक्षर का मंत्र :-

ॐ (ओम्)

ॐ शब्द की ध्वनि पांचो परमेष्ठी नामों के पहले अक्षर को मिलाने पर बनती हैं।

जैन मुनियों के मत से अरहन्त का पहला अक्षर 'अ' जो अशरीरी अर्थात सिद्ध का 'अ' हैं। ओम शब्द में आचार्य का 'आ', उपाध्याय का 'उ', तथा मुनि अर्थात साधु जनो का 'म्', इस प्रकार सभी शब्दो को जोडने ॐ बनता हैं।

दो अक्षरों का मंत्र :-

1. सिद्ध
2. ॐ ह्रीं

चार अक्षरों का मंत्र :-

1. अरहन्त
2. अ सि साहू

पंचाक्षरी मंत्र :-

अ सि आ उ सा

षष्टाक्षरी मंत्र :-

1. अरहन्त सिद्ध
2. अरहन्त सि सा
3. ॐ नमः सिद्धेभ्य
4. नमोर्हत्सिद्धेभ्यः

सप्ताक्षरी मंत्र:-

ॐ श्रीं ह्रीं अर्हं नमः।

अष्टाक्षरी मंत्र:-

ॐ नमो अरिहंताणं।

सोलह अक्षरों का मंत्र :-

अरहंत सिद्ध आइरिया उवज्झाया साहू

35 अक्षरों का मंत्र :-

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।।

लघु शान्ति मंत्र:-

ॐ ह्रीम् अर्हम् असिआउसा सर्वशान्तिम् कुरु कुरु स्वाहा।

मनोरथ सिद्धिदायक मंत्र :-

ॐ ह्रीम् श्रीम् अर्हम् नमः ।

रोगनाशक मंत्र :-

ॐ ऐम् ह्रीम् श्रीम् कलिकुण्डदण्डस्वामिने नमः आरोग्य-परमेश्वर्यम् कुरु कुरु स्वाहा ।

(रोग शांति हेतु उक्त मन्त्र को श्रीपार्श्वनाथ जी की प्रतिमा के सम्मुख शुद्धता व् नियम से 108 बार जप करना अति लाभदायक होता हैं।)

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकारों के जीवन का संक्षिप्त विवरण

संकलन गुरुत्व कार्यालय

क्र	तीर्थंकार	जन्म स्थान	जन्म नक्षत्र	माता का नाम	पिता का नाम	वैराग्य वृक्ष	प्रतिक चिह्न
१	ऋषभदेवजी	अयोध्या	उत्तराषाढ़ा	मरूदेवी	नाभिराजा	वट वृक्ष	बैल
२	अजितनाथजी	अयोध्या	रोहिणी	विजया	जितशत्रु	सर्पपर्ण वृक्ष	हाथी
३	सम्भवनाथजी	श्रावस्ती	पूर्वाषाढ़ा	सेना	जितारी	शाल वृक्ष	घोड़ा
४	अभिनन्दनजी	अयोध्या	पुनर्वसु	सिद्धार्था	संवर	देवदार वृक्ष	बन्दर
५	सुमतिनाथजी	अयोध्या	मघा	सुमंगला	मेधप्रय	प्रियंगु वृक्ष	चकवा
६	पद्मप्रभुजी	कौशाम्बीपुरी	चित्रा	सुसीमा	धरण	प्रियंगु वृक्ष	कमल
७	सुपार्श्वनाथजी	काशीनगरी	विशाखा	पृथ्वी	सुप्रतिष्ठ	शिरीष वृक्ष	साथिया
८	चन्द्रप्रभुजी	चंद्रपुरी	अनुराधा	लक्ष्मण	महासेन	नाग वृक्ष	चन्द्रमा
९	पुष्पदन्तजी	काकन्दी	मूल	रामा	सुग्रीव	साल वृक्ष	मगर
१०	शीतलनाथजी	भद्रिकापुरी	पूर्वाषाढ़ा	सुनन्दा	दृढ़रथ	प्लक्ष वृक्ष	कल्पवृक्ष
११	श्रेयान्सनाथजी	सिंहपुरी	वण	विष्णु	विष्णुराज	तेंदुका वृक्ष	गेंडा
१२	वासुपुज्यजी	चम्पापुरी	शतभिषा	जपा	वासुपुज्य	पाटला वृक्ष	भैंसा
१३	विमलनाथजी	काम्पिल्य	उत्तराभाद्रपद	शमी	कृतवर्मा	जम्बू वृक्ष	शूकर
१४	अनन्तनाथजी	विनीता	रेवती	सूर्वशया	सिंहसेन	पीपल वृक्ष	सेही
१५	धर्मनाथजी	रत्नपुरी	पुष्य	सुव्रता	भानुराजा	दधिपर्ण वृक्ष	वज्रदण्ड
१६	शांतिनाथजी	हस्तिनापुर	भरणी	ऐराणी	विश्वसेन	नन्द वृक्ष	हिरण
१७	कुन्थुनाथजी	हस्तिनापुर	कृत्तिका	श्रीदेवी	सूर्य	तिलक वृक्ष	बकरा
१८	अरहनाथजी	हस्तिनापुर	रोहिणी	मिया	सुदर्शन	आम्र वृक्ष	मछली
१९	मल्लिनाथजी	मिथिला	अश्विनी	रक्षिता	कुम्प	कुम्पअशोक वृक्ष	कलश
२०	मुनिसुव्रतनाथजी	कुशाक्रनगर	श्रवण	पद्मावती	सुमित्र	चम्पक वृक्ष	कछुवा
२१	नमिनाथजी	मिथिला	अश्विनी	वप्रा	विजय	वकुल वृक्ष	नीलकमल
२२	नेमिनाथजी	शोरिपुर	चित्रा	शिवा	समुद्रविजय	मेषश्रृंग वृक्ष	शंख
२३	पार्श्र्वनाथजी	वाराणसी	विशाखा	वामादेवी	अश्वसेन	घव वृक्ष	सर्प
२४	महावीरजी	कुंडलपुर	उत्तराफाल्गुनी	त्रिशाला (प्रियकारिणी)	सिद्धार्थ	साल वृक्ष	सिंह

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

॥ महावीराष्टक-स्तोत्रम् ॥

शिखरिणी छंद

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचित:
समं भान्ति ध्रौव्य व्यय-जनि-लसन्तोऽन्तरहिता:।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन परो भानुरिव यो
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु में॥1॥

अताम्रं यच्चक्षु: कमल-युगलं स्पन्द-रहितं
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥2॥

नमन्नाकेंद्राली-मुकुट-मणि-भा जाल जटिलं
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्?।
भवज्ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥3॥

यदर्च्चा-भावेन प्रमुदित-मना दर्दुर इह
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्ध: सुख-निधि:।
लभन्ते सद्भक्ता: शिव-सुख-समाजं किमुतदा
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥4॥

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत-तनुर्ज्ञान-निवहो
विचित्रात्माप्येको नृपति-वर-सिद्धार्थ-तनय:।
अजन्मापि श्रीमान्? विगत-भव-रागोद्भुत-गति?
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥5॥

यदीया वाग्गंगा विविध-नय-कल्लोल-विमला
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुध-जन-मरालै परिचिता
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥6॥

अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवन-जयी काम-सुभट:
कुमारावस्थायामपि निज-बलाद्येन विजित:
स्फुरन्नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिन:
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥7॥

महामोहातक-प्रशमन-पराकस्मिक-भिषक?
निरापेक्षो बंधु विदित-महिमा मंगलकर:।
शरण्य: साधूनां भव-भयभृतामुत्तमगुणो
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥8॥

महावीराष्टकं स्तोत्रं भक्त्या भागेन्दु ना कतम।
य: यठेच्छ्रणुयाच्चापि स यति परमां गतिम॥9॥

सरस्वती कवच एवं यंत्र

उत्तम शिक्षा एवं विद्या प्राप्ति के लिये **वंसत पंचमी** पर दुर्लभ तेजस्वी मंत्र शक्ति द्वारा पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त **सरस्वती कवच** और **सरस्वती यंत्र** के प्रयोग से सरलता एवं सहजता से मां सरस्वती की कृपा प्राप्त करें।

यंत्र मूल्य:325 से 1450 तक

कवच मूल्य:910 से 1050 तक

मंत्र सिद्ध धनवृद्धि सामग्री

मंत्र सिद्ध धन वृद्धि सामग्री

शास्त्रोक्त विधि-विधान से तेजस्वी मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित धनवृद्धि पाउडर को प्रति बुधवार के दिन अपने कैश बोक्स, मनीपर्स आदि में थोडा डालने से निरंतर धन संचय होता हैं।

मूल्य 1 Box Rs- 280

GURUTVA KARYALAY
Call Us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
or Shop Online @ www.gurutvakaryalay.com

॥ महावीर चालीसा ॥

दोहा

सिद्ध समूह नमों सदा,
अरु सुमरूं अरहन्त ।
निर आकुल निर्वांच्छ हो,
गए लोक के अंत ॥
मंगलमय मंगल करन,
वर्धमान महावीर ।
तुम चिंतत चिंता मिटे,
हरो सकल भव पीर ॥

चौपाई

जय महावीर दया के सागर,
जय श्री सन्मति ज्ञान उजागर ।
शांत छवि मूरत अति प्यारी,
वेष दिगम्बर के तुम धारी ।
कोटि भानु से अति छबि छाजे,
देखत तिमिर पाप सब भाजे ।
महाबली अरि कर्म विदारे,
जोधा मोह सुभट से मारे ।
काम क्रोध तजि छोड़ी माया,
क्षण में मान कषाय भगाया।
रागी नहीं नहीं तू द्वेषी,
वीतराग तू हित उपदेशी ।
प्रभु तुम नाम जगत में सांचा,
सुमरत भागत भूत पिशाचा।
राक्षस यक्ष डाकिनी भागे,
तुम चिंतत भय कोई न लागे ।
महा शूल को जो तन धारे,
होवे रोग असाध्य निवारे ।
व्याल कराल होय फणधारी,
विष को उगल क्रोध कर भारी ।
महाकाल सम करै डसन्ता,
निर्विष करो आप भगवन्ता ।
महामत्त गज मद को झारै,
भगै तुरत जब तुझे पुकारै ।
फार डाढ़ सिंहादिक आवै,
ताको हे प्रभु तुही भगावै ।
होकर प्रबल अग्नि जो जारै,
तुम प्रताप शीतलता धारै ।
शस्त्र धार अरि युद्ध लड़न्ता,
तुम प्रसाद हो विजय तुरन्ता ।
पवन प्रचण्ड चलै झकझोरा, प्र
भु तुम हरौ होय भय चोरा ।
झार खण्ड गिरि अटवी मांहीं,
तुम बिनशरण तहां कोउ नांहीं ।
वज्रपात करि घन गरजावै,
मूसलधार होय तड़कावै ।
होय अपुत्र दरिद्र संताना,
सुमिरत होत कुबेर समाना ।
बंदीगृह में बँधी जंजीरा,
कठ सुई अनि में सकल शरीरा ।
राजदण्ड करि शूल धरावै,
ताहि सिंहासन तुही बिठावै ।
न्यायाधीश राजदरबारी,
विजय करे होय कृपा तुम्हारी ।
जहर हलाहल दुष्ट पियन्ता,
अमृत सम प्रभु करो तुरन्ता ।
चढ़े जहर, जीवादि डसन्ता,
निर्विष क्षण में आप करन्ता ।
एक सहस वसु तुमरे नामा,
जन्म लियो कुण्डलपुर धामा ।
सिद्धारथ नृप सुत कहलाए,
त्रिशला मात उदर प्रगटाए ।
तुम जनमत भयो लोक अशोका,
अनहद शब्दभयो तिहुँलोका ।
इन्द्र ने नेत्र सहस्र करि देखा,
गिरी सुमेर कियो अभिषेखा ।
कामादिक तृष्णा संसारी,
तज तुम भए बाल ब्रह्मचारी ।
अथिर जान जग अनित बिसारी,
बालपने प्रभु दीक्षा धारी ।
शांत भाव धर कर्म विनाशे,
तुरतहि केवल ज्ञान प्रकाशे ।
जड़-चेतन त्रय जग के सारे,
हस्त रेखवत्? सम तू निहारे ।
लोक-अलोक द्रव्य षट जाना,
द्वादशांग का रहस्य बखाना ।
पशु यज्ञों का मिटा कलेशा,
दया धर्म देकर उपदेशा ।
अनेकांत अपरिग्रह द्वारा,
सर्वप्राणि समभाव प्रचारा ।
पंचम काल विषै जिनराई,
चांदनपुर प्रभुता प्रगटाई ।
क्षण में तोपनि बाढि-हटाई,
भक्तन के तुम सदा सहाई ।
मूरख नर नहिं अक्षर ज्ञाता,
सुमरत पंडित होय विख्याता ।

सोरठा

करे पाठ चालीस दिन
नित चालीसहिं बार ।
खेवै धूप सुगन्ध पढ़,
श्री महावीर अगार ॥
जनम दरिद्री होय अरु
जिसके नहिं सन्तान ।
नाम वंश जग में चले
होय कुबेर समान ॥

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

जब महावीर ने एक ज्योतिषी को कहां तुम्हारी विद्या सच्ची है?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

भगवान महावीर के समय में पुष्य नाम का एक बड़ा सुप्रसिद्ध ज्योतिषी था। उसका ज्योतिष ज्ञान इतना सटीक रहता था कि पुष्यको अपने ज्योतिष ज्ञान पर पूरा विश्वास था। दूरदेश से लोग उससे ज्योतिष विद्या के विषय में पूछने आते थे।

पुष्य ज्योतिषी जो कह देते, वस्तुतः सच्चा पड़ जाता। ज्योतिषी विद्या में वहं इतने तेज थे की लोगों के पदचिह्न की रेखाएँ देखकर भी वह लोगों की स्थिति बता सकते थे। ऐसे बढ़िया कुशाग्र ज्योतिषी थे।

उन दिनों में वर्धमान (भगवान महावीर) घर दिन में तो भ्रमभ करते और जैसे संध्या होती, अंधेरा होते ही एकान्त खोजकर बैठ जाते। थोड़ी देर आराम कर लेते फिर बैठकर चुपचाप, ध्यान में स्थिर हो जाते।

पुष्य ज्योतिषी ने देखा की रेत पर किसी के पदचिह्न हैं। पदचिह्नों को ध्यान से परखा ओर ज्योतिष विद्या से जाना की ये तो चक्रवर्ती के पदचिह्न हैं। चक्रवर्ती यदी यहाँ से गुजरे है तो उनके साथ में मंत्री होने चाहिए, सचिव होने चाहिए, अंगरक्षक होने चाहिए, सिपाही होने चाहिए। पदचिह्न चक्रवर्ती के और साथ में कोई और पदचिह्न नहीं यह सम्भव नहीं हो सकता।

परंतु पुष्य ज्योतिषी पहूंचा हुवा ज्योतिष था उसको अपनी ज्योतिष विद्या पर पूरा भरोसा था। उसकी नींद हराम हो गयी। चाँदनी रात थी इस लिये जहाँ तक चल सका पदचिह्न देखता हुआ चला, फिर कहीं रुक कर आराम कर लिये। फिर सुबह-सुबह जल्दी चलना चालू किया। उसेतो खोजना था, पदचिह्न कहाँ जा रहे हैं। देखा कि बिना कोई साधन के, एक व्यक्ति शांत भाव में बैठा हुआ है। पदचिह्न वहीं पूरे होते हैं। उसके इर्दगिर्द देखा, चेहरे पर देखता रहा। इतने में महावीर की आँख खुली। अबतक ज्योतिषी चिन्ता में डूबता जा रहा था।

पुष्य ज्योतिषी ने महावीर से पूछा "ये पदचिह्न तो आपके मालूम होते हैं?"

महावीर बोले: "हाँ।"

पुष्य कहने लगे "मुझे अपने ज्योतिष पर भरोसा हैं। आज तक मेरा ज्योतिष झूठा नहीं पड़ा। पदचिह्नों से लगता है कि आप चक्रवर्ती सम्राट हो। लेकिन आपको बेहाल देखकर दया आती है कि आप भिक्षुक हो। मेरी विद्या आज झूठी कैसे पड़ी?"

महावीर मुस्कराकर बोलेः "तुम्हारी विद्या झूठी नहीं है, सच्ची है।

एक बात बताओं चक्रवर्ती को क्या होता है?"

पुष्य बोले: "उसके पास ध्वजा होती है, कोष होता है, उसके पास सैन्य होता है। आप तो बेहाल हो"

महावीर फिर मुस्कराकर बोलेः "धर्म की ध्वजा मेरे पास है। कपड़े की ध्वजा ही सच्ची ध्वजा नहीं है। सच्ची ध्वजा तो धर्म की ध्वजा है। मेरे पास सदविचाररूपी सैन्य है जो कुविचारों को मार भगाता है। क्षमा मेरी रानी है। चक्रवर्ती के आगे चक्र होता है तो समता मेरा चक्र है, ज्ञान का प्रकाश मेरा चक्र है।

ज्योतिषी! क्या यह जरूरी है कि बाहर का चक्र ही चक्रवर्ती के पास हो? बाहर की ही ध्वजा हो? धर्म की भी ध्वजा हो सकती है। धर्म का भी कोष हो सकता है। ध्यान और पुण्यों का भी कोई खजाना होता है।

राजा वह जिसके पास भूमि हो, सत्ता हो। सुबह जो सोचे तो शाम को परिणाम आ जाय। ज्ञानराज्य में मेरी निष्ठा है। जो भी मेरे मार्ग में प्रवेश करता है, सुबह को ही चले तो शाम को शांति का एहसास हो जाता है, थोड़ा बहुत परिणाम आ जाता है।

यह मेरी ज्ञान की भूमि है।" जो ज्योतिषी हारा हुआ निराश होकर जा रहा था वह सन्तुष्ट होकर, समाधान पाकर प्रणाम करता हुआ बोलाः "हाँ महाराज! इस रहस्य का मुझे आज पता चला। मेरी विद्या भी सच्ची और आपका मार्ग भी सच्चा है।"

***

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

गौतम केवली महाविद्या (प्रश्नावली)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

111	112	113	121	122	123	131	132	133
211	212	213	221	222	223	231	232	233
311	312	313	321	322	323	331	332	333

ऊपर दर्शाएं गये अंक शकुनावली प्रश्नावली से उत्तर प्राप्त करने से पूर्व शुद्ध एवं पवित्र होकर अपने इष्ट देव का स्मरण करते हुवे ऊपर दर्शाएं गये अंक कोष्टको में से किसी एक कोष्टक पर अपनी अंगुली अथवा शलाका रखें। जिस कोष्टक पर आपने अंगुली अथवा शलाका रखी हैं उस कोष्टक में अंकित संख्या के अनुसार आपके अभीष्ट प्रश्न का हल नीचे क्रमशः अंको में दिया गया हैं।

111: आपने जो प्रश्न विचारा है वह सफल होगा। तुम्हारे खराब दिनों का नाश होकर अच्छे दिन आए हैं। मन की कामनाएँ पूर्ण होंगी। विविध प्रकार की चिंताएँ मन में रहती हैं, वे अब थोड़े दिनों में नाश हो जाएँगी। एक मित्र के धोखे को भोग रहे हो। धर्म कार्य की इच्छा है, परन्तु पापकर्म से विघ्न आता है। आमदनी से खर्च अधिक रहता है। कोई कार्य सिद्ध होने को आता है, तो शत्रु उसमें विघ्न डाल देते हैं। दान-पुण्य करो। जिससे मन की अभिलाषा पूर्ण होगी। विरोधी चाहे कितनी कोशिश करें, परन्तु तुम्हारी धारणा अवश्य फलीभूत होगी।

112: आपका अभीष्ट प्रश्न लाभदायक है। धन की प्राप्ति होगी। भाग्योदय के दिन अब नजदीक आ गए हैं। जिस कार्य को हाथ में लोगे, उसमें जय प्राप्त करोगे। प्रियजन का मिलाप होगा। धर्म के कार्य करते रहो, जिससे पुण्य की प्राप्ति होगी तथा सुख भी मिलेगा। मन चिन्तित रहता है। भाइयों से जुदाई होगी। मकान बनाने का इरादा करते हो वह पार पड़ेगा। जमीन से तुमको लाभ होगा। आमदनी से खर्च अधिक होता है। तीर्थों की यात्रा करने की अभिलाषा है, वह पूर्ण होगी। धार्मिक कार्य सम्पन्न होगा।

113: आपका अभीष्ट प्रश्न अच्छा है। तुम्हारे दिल को आराम मिलेगा। सुख-चैन प्राप्त करोगे। जो कार्य मन में सोचा है, उसमें विजय प्राप्त करोगे। प्रियजनों का मिलाप होगा। चिन्ता के दिन निकल चुके हैं तथा अब अच्छे दिन आए हैं। धर्म के प्रभाव से सुखी हुए हो तथा आगे भी सुख प्राप्त करोगे। कष्ट सहन करते हुए भी दूसरे का कार्य करते हो परन्तु अपने कार्य में सुस्ती रखते हो। बुद्धि तेज है, बिगड़े कार्य को भी सुधार लेते हो। भविष्य में लाभ मिलेगा।

121: आपका विचारा हुआ प्रश्न लाभदायक है। बहुत दिनों तक दुःख सहन करने से निराश हो गए हो, बुरे दिन निकल गए हैं और अब शुभ दिन आए हैं। मन की इच्छाएँ फलीभूत होंगी। जितनी लक्ष्मी गंवाई है उससे भी अधिक प्राप्त करोगे। जिस काम की चिन्ता करते हो वह चिन्ता मिट जायेगी, उसमें एक व्यक्ति विघ्न उपस्थित करने आयेगा, किन्तु अन्त में तुमको सफलता प्राप्त होगी। भाइयों तथा सम्बन्धियों का निभाव करते हो, जिससे तुम्हारी कीर्ति बढ़ी है। दिल के उदार हो, जहाँ जाते हो वहाँ सुख मिलता है।

122: आपने जो काम विचारा है, उसमें सफलता नहीं मिल पाएगी। आपने आज तक बहुतों का भला किया है। अशुभ कर्म के उदय से विघ्न उपस्थित होते हैं। जहाँ तक बन सके वहाँ तक धर्म करो। अपने इष्टदेव की यथाशक्ति आराधना तथा मन्त्र का जप करो, जिससे तकलीफ दूर होगी।

123: आपके अभीष्ट कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। इतने पापकर्म के थे तथा आपने महान संकट उठाये हैं। अब शुभ दिन आए हैं। बहुतों का भला किया, किन्तु उन्होंनें उपकार न माना। धर्म के निमित्त का निकाला हुआ पैसा घर में न रखो। तीर्थों की यात्रा करो, जिस

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

स्थान पर दुःखी हुए हो, उस स्थान का त्याग करो, दूसरे स्थान में जाकर रहो। परदेश में लाभ होगा। तुम्हारा दिल चिन्ता में डूबा रहता है। अब शुभ कर्म का उदय हुआ है। विचारे हुए कार्य में सफलता एवं धन प्राप्त होगा।

131: जो बात आपने सोची है वह अवश्य सिद्ध होगी, जिसका नुकसान हुआ है वह दूर होकर भविष्य में लाभ होगा। धन मिलेगा। तुम्हारे हाथ से धर्म के कार्य होंगे। जिस मनुष्य से मुलाकात चाहते हो वह होगी। चिन्ता के दिन अब गए हैं। धातु, धन, सम्पत्ति और कुटुम्ब की वृद्धि होगी।

132: आज तक तुम्हारे बड़े-बड़े दुश्मन हुए अब उनका जोर नहीं चलेगा। मन में विचारे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त करोगे। इज्जत में वृद्धि होगी। तुम्हारे हाथों से धर्म के कार्य होंगे, मन वांछित सुख की प्राप्ति होगी। भाइयों का मिलाप होगा। दान-पुण्य के प्रभाव से सुखी होंगे।

133: इतने दिन संकट रहा। चिंतित कार्य अच्छी तरह से पार न पड़ा, अब अच्छे दिनों की शुरुआत हुई है, जो कार्य विचारा है वह फलीभूत होगा, किसी भी प्रकार का विघ्न नहीं आयेगा। इष्टदेव के प्रभाव से लक्ष्मी प्राप्त होगी, प्रियजन से अचानक लाभ होगा।

211: तुमने मन में जिस कार्य का विचार किया है, वह सफल नहीं होगा। इसके सिवाय कोई दूसरा काम करो। तीर्थों की यात्रा करो, जिससे पुण्य का लाभ हो। दुश्मन लोग तुमको बाधाएँ डालते हैं।

212: विचारा हुआ कार्य होगा। प्रेमिका से लाभ होगा। कुटुम्ब की वृद्धि होगी। बहुत मुद्दत से विचारा हुआ कार्य होगा। दुश्मन तुम्हारे विरुद्ध कोशिश करेंगे, किन्तु तुम्हारे सद्भाग्य के आगे उनका जोर नहीं चलेगा। तीर्थों की यात्रा करने की इच्छा है वह हो सकेगी। मकान बनाने का तथा जमीन खरीदने का तुम्हारा इरादा सफल होगा। तुमको जमीन से लाभ है। भाग्यबल से कार्य सिद्ध होंगे।

213: दुःख के दिन अब दूर हो गए हैं। सुख के दिन शुरु हुए हैं। बहुत दिनों से कष्ट उठा रहे हो, परदेश गए तो भी सुख की प्राप्ति न हुई, किन्तु अब सुख भोगने के दिन प्राप्त हुए हैं। आबरु बढ़ेगी, संतान का सुख होगा। इतने दिनों मित्रों तथा कुटुम्बी जनों की तरफ से दुःख सहन किया। जहाँ तक बना दूसरों का भला किया, परन्तु उन लोगों ने गुण नहीं माना। शत्रु लोग पग-पग पर तैयार रहते हैं, किन्तु उनका जोर नहीं चलता क्योंकि तुम्हारा भाग्य बलवान् है। पास में धन थोड़ा है, किन्तु इज्जत अच्छी है, इसलिये जितना प्राप्त करने का विचार करोगे उतना प्राप्त कर सकोगे। मित्र लोगों से जैसा चाहिए वैसा सुख नहीं है। इज्जत आबरु के लिये खर्च बहुत करते हो। तुम्हारा धर्म सुधरा हुआ है, इसलिए धर्म पर श्रद्धा रखो।

221: इतने दिन गए वे अच्छे गए, जो जो कार्य किए वे भी पार पड़ गए, किन्तु अब जो कार्य दिल में विचारा है वह पाप कर्म के उदय से पूर्ण नहीं होगा। मित्र लोग भी शत्रु हो जाएँगे। कुटुम्ब में अनबन रहेगी, भाई जुदा होंगे। जो काम दिल में विचारा है, उसका त्याग करना ही श्रेष्ठ है। धर्म पर श्रद्धा रखो, इष्टदेव की सेवा करो, दान-पुण्य के प्रभाव से सुख मिलेगा।

222: जो काम मन में विचारा है, उसको छोड़कर दूसरा काम करो। यदि इस विचारे हुए कार्य को करोगे तो संकट उत्पन्न होगा, नुकसान होगा, शत्रु लोग विघ्न उपस्थित करेंगे। इष्टदेव की सेवा करो, तीर्थों पर जाओ, जिससे दूसरे कार्य भी सुधरेंगे। दिल में विविध प्रकार की चिन्ताओं ने वास किया है, वह विचारे हुए कार्य को छोड़ देने से दूर होगी।

223: यह सवाल अच्छा है, सुख के दिन नजदीक आए हैं। व्यापार से धन प्राप्त होगा, ऐशो-आराम प्राप्त करोगे। पत्नी का सुख प्राप्त करोगे तथा संतान की वृद्धिहोगी, जो कार्य करोगे उसमें लाभ प्राप्त करोगे। ईमानदारी से काम करते हो तो अन्त में भला ही होगा। धर्म के प्रभाव से सुखी होंगे, इसलिये धर्म को भूलना मत, धर्म के कार्यों में सुस्ती रखना ठीक नहीं।

231: जिस कार्य के लिए मन में विचार किया है, वह कार्य तीन मास में होगा। अपनी स्त्री की तरफ से लाभ होगा। आज तक कुटुम्बीजनों की तरफ से सुख नही मिला, किन्तु भविष्य में मिलेगा। संतानों की वृद्धि होगी। ससुराल के खर्च की चिन्ता है, सो मिट जाएगी। आबरु के लिए आमदनी से खर्च अधिक करना पड़ता है। तीर्थों की यात्रा करने का इरादा है, किन्तु विघ्न आता है।

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

भविष्य में धर्म कार्य कर सकोगे। हृदय में जिस कार्य की चिन्ता है, वह धर्म के प्रभाव से दूर हो जाएगी, इसलिए धर्म पर श्रद्धा रखो, जिससे सफलता प्राप्त कर सकोगे।

232: जो काम विचारा है, उसे छोड़कर कोई दूसरा काम करो। विचारे हुए कार्य को करने में लाभ नहीं है, यदि करोगे तो तुमको तुम्हारा स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर जाना पड़ेगा, कुटुम्बीजनों का वियोग होगा। इसलिए उचित है कि इस कार्य को छोड़ दो। धर्म में होशियार रहना तथा अपनी शक्ति के अनुसार दान-पुण्य करना जिससे सुख हो।

233: थोड़े दिनों में धन मिलेगा। जो काम विचारा है, वह पूर्ण होगा। प्रियजनों से मिलाप होगा। जमीन, जागीर अथवा मकान से लाभ होगा। आबरु बढ़ेगी। धर्म कार्यों में खर्च करो। उसके प्रताप से सुख-चैन रहेगा। राज्यपक्ष से लाभ होगा। मन की धारणा पूर्ण होगी। स्त्री की तरफ से सुख है। एक समय अकस्मात् लाभ मिलेगा।

311: यह सवाल बहुत ही गरम है। जिस कार्य का विचार किया है, वह पूर्ण होगा। मुकदमा जीत जाओगे, व्यापार रोजगार में लाभ होगा। कीर्ति बढ़ेगी, राज्य की तरफ से लाभ होगा। धर्म के प्रभाव से सुख मिला है तथा भविष्य में भी मिलेगा। दूसरों के कार्य परिश्रम से पूरा करते हो, किन्तु अशुभ कर्म उदित होने से अपने कर्म में उदासीन रहते हो, विदेश यात्रा होगी और वहाँ लाभ होगा। धर्म पर श्रद्धा रखो जिससे संकट दूर हों। अपने हाथ से लक्ष्मी प्राप्त करोगे।

312: जो कार्य विचारा है उसे छोड़कर कोई दूसरा काम करो अन्यथा शत्रु लोग विघ्न डालेंगे, दौलत की खराबी होगी, घर के मनुष्यों तथा पशुओं पर संकट आएगा, इसलिए विचारे हुए कार्य को छोड़ देना ही उचित है। धर्म के प्रभाव से सब कार्य सफल होते हैं। निराश्रितों को आश्रय दो तथा देवाधिदेव का स्मरण करो जिससे सुखी होंगे।

313: यह प्रश्न अच्छा है। धन तथा स्त्री से सहयोग एवं सुख मिलेगा। संतान से सुख मिलेगा। संतान होगी, प्रियजन का मिलाप होगा। अमुक मुद्दत की धारी हुई धारणा सफल होगी। चिन्ता के दिन अब दूर हुए हैं। देव गुरु तथा धर्म की सेवा करो। दुश्मन लोग सताते हैं, किन्तु अब तुम्हारा प्रारब्ध बलवान् बना है जिससे इन लोगों का जोर नहीं चलेगा। जमीन से लाभ होगा। कीर्ति के लिए खर्च अधिक करना पड़ता है। मित्रों से लाभ होगा।

321: जमीन, मकान अथवा बाग-बगीचे से लाभ होगा। धन प्राप्त करोगे, स्नेही जन से मिलाप होगा। किसी भी मनुष्य के साथ मित्रता होगी और उसके द्वारा धनादि की प्राप्ति होगी। पुण्य के उदय से इच्छाएँ परीपूर्ण होगी। धर्म का आराधन करो। दुश्मन लोग पग-पग पर तैयार रहेंगे, किन्तु सन्मुख होने से उनका जोर नहीं चलेगा। अपनी शक्ति के अनुसार खर्च करो। मकान बनाने के मनोरथ फलीभूत होंगे। धन पैदा करते हो, किन्तु खर्च अधिक होने से इकट्ठा नहीं होता है, पिता से धन थोड़ा मिलेगा। स्त्री की तरफ से लाभ होगा। वृद्धावस्था में धर्म के कार्य बन सकते हैं।

322: जो कार्य आपने मन में विचारा है, उसमे शत्रु लोग विघ्न डालेंगे, परिणाम अच्छा नहीं। राज्य की तरफ से नाराजगी होगी यदि सुखी होना चाहते हो, तो विचारा हुआ कार्य छोड़कर दूसरा कार्य करो, तुम्हारे सहयोगी बदल गए हैं, उनका विश्वास मत करना। भजन-पूजन, व्रत-नियम में ध्यान दो।

323: जिस कार्य का मन में विचार किया है, उसमें लाभ होगा, इच्छा पूर्ण होगी, स्नेही का मिलाप होगा, जो जो चिन्ताएँ उपस्थित हुई हैं, वे सब दूर होंगी। धर्म के कार्य बन सकेंगे। बहुत दिनों से परदेश में दुःख प्राप्त किया है, किन्तु अब दुःख के दिन गए। तीर्थयात्रा होगी। अब देश में जाकर आनन्द प्राप्त करोगे। धर्म के कार्यों में लक्ष्य रखो, जिससे सब सुख प्राप्त करोगे।

331: तुम्हारे मन की चिन्ता मिटेगी। बीमारी की फरियाद दूर होगी। मन की धारणा पूर्ण होगी। थोड़े दिनों में ही धन की प्राप्ति होगी। स्नेही का मिलाप होगा। धर्म-कर्म में पैसा खर्च करो, जिससे परिणाम में फायदा होगा। अच्छे दिन आए हैं, पापकर्म से इतने दिन दुःख प्राप्त किया है, परन्तु अब वे बीत गए हैं।

332: बुरे दिन गए अब अच्छे दिन आए हैं। जमीन

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

तथा धन-दौलत में जो हानि हुई है, वह मिट जाएगी तथा भविष्य में लाभ होगा। परमेश्वर का ध्यान करो। हृदय शुद्ध है, जिससे मन की चिन्ता जल्दी दूर होगी। परदेश में रहे मनुष्य की चिन्ता है सो उसका मिलाप होगा। धर्म के प्रभाव से सुखी होंगे।

333: इतने दिन निर्धन अवस्था में व्यतीत किए, किन्तु अब धन प्राप्त होगा तथा मन की धारणा फलीभूत होगी। जीवनसाथी से सुख प्राप्त होगा, तीन महिने बाद अच्छे दिन आएँगे। इष्टदेव की आराधना करो। आमदनी से खर्च अधिक है, धन इकट्ठा किया नहीं, मित्र की तरफ से धोखा मिला है, दुश्मन लोग पीछे से निन्दा करते हैं, किन्तु सामने आकर बोल नहीं सकते। जमीन से लाभ होगा। परमेश्वर का जप करो ।

Mantra Siddha

Parad Shivling

+

Free Rudraksha Mala

Size: 21, 27, 46, 55, 72, 100 Gram above
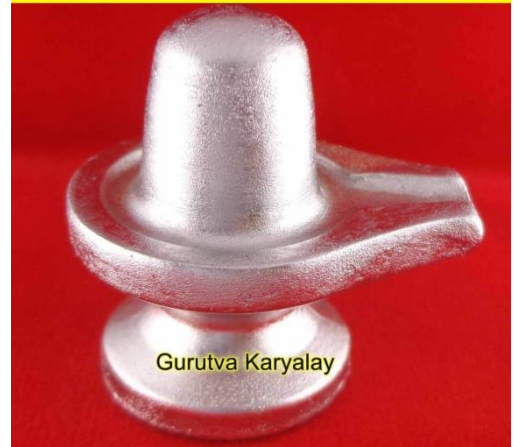
Natural

Shaligram Pair

Gandaki River Nepal

Price 1100 & Above

Natural

Chakra Shaligram

Gandaki River Nepal

Price 550 & Above

GURUTVA KARYALAY

BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY
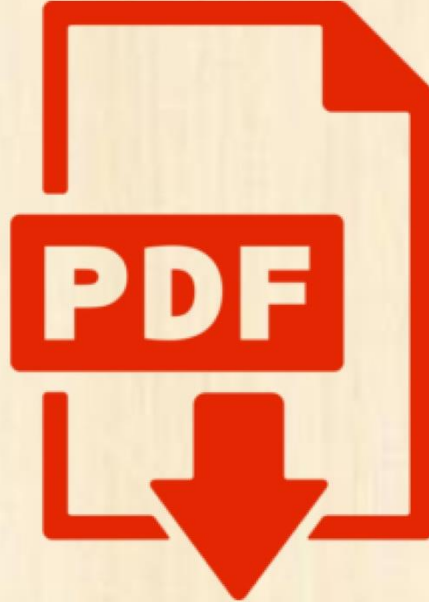
कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।

कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दुःखदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।

यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***
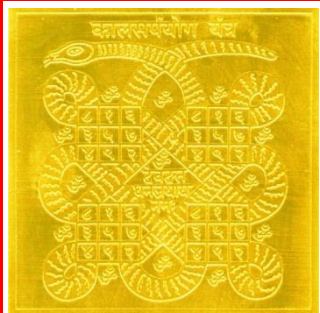
कालसर्प शांति हेतु अनुभूत एवं सरल उपाय

मंत्र सिद्ध कालसर्प शांति यंत्र

मंत्र सिद्ध कालसर्प शांति कचव

विस्तृत जानकारी हेतु संपर्क करें। GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

विद्या प्राप्ति हेतु सरस्वती कवच और यंत्र

आज के आधुनिक युग में शिक्षा प्राप्ति जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। हिन्दू धर्म में विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को माना जाता हैं। इस लिए देवी सरस्वती की पूजा-अर्चना से कृपा प्राप्त करने से बुद्धि कुशाग्र एवं तीव्र होती है।

आज के सुविकसित समाज में चारों ओर बदलते परिवेश एवं आधुनिकता की दौड में नये-नये खोज एवं संशोधन के आधारो पर बच्चो के बौधिक स्तर पर अच्छे विकास हेतु विभिन्न परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धाएं होती रहती हैं, जिस में बच्चे का बुद्धिमान होना अति आवश्यक हो जाता हैं। अन्यथा बच्चा परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा में पीछड जाता हैं, जिससे आजके पढेलिखे आधुनिक बुद्धि से सुसंपन्न लोग बच्चे को मूर्ख अथवा बुद्धिहीन या अल्पबुद्धि समझते हैं। एसे बच्चो को हीन भावना से देखने लोगो को हमने देखा हैं, आपने भी कई सैकडो बार अवश्य देखा होगा?

ऐसे बच्चो की बुद्धि को कुशाग्र एवं तीव्र हो, बच्चो की बौद्धिक क्षमता और स्मरण शक्ति का विकास हो इस लिए सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक हो सकता हैं।

सरस्वती कवच को देवी सरस्वती के परंम दूर्लभ तेजस्वी मंत्रो द्वारा पूर्ण मंत्रसिद्ध और पूर्ण चैतन्ययुक्त किया जाता हैं। जिस्से जो बच्चे मंत्र जप अथवा पूजा-अर्चना नहीं कर सकते वह विशेष लाभ प्राप्त कर सके और जो बच्चे पूजा-अर्चना करते हैं, उन्हें देवी सरस्वती की कृपा शीघ्र प्राप्त हो इस लिये सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक होता हैं।

सरस्वती कवच और यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

>> Order Now

सरस्वती कवच : मूल्य: 1050 और 910	सरस्वती यंत्र :मूल्य : 550 से 1450 तक

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- http://gk.yolasite.com/ and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

>> **Shop Online** | **Order Now**

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in
Shop Online: www.gurutvakaryalay.com

दस महाविद्या पूजन यंत्र
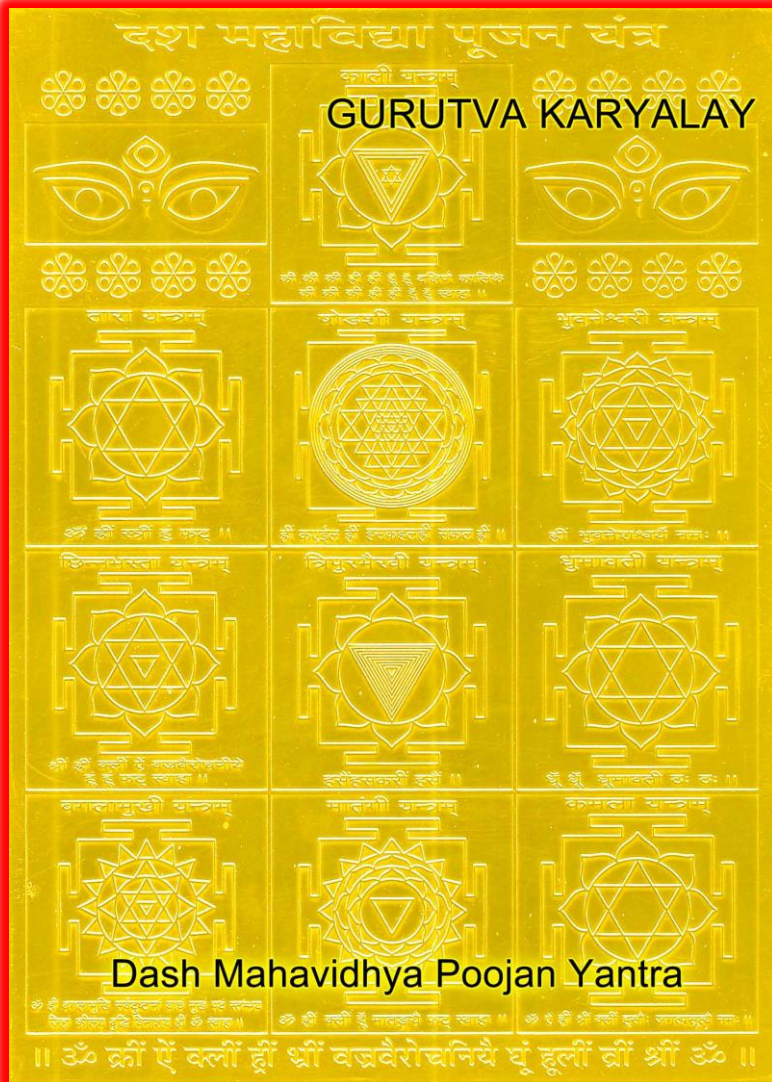
दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्ति संपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

>> Shop Online

GURUTVA KARYALAY
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
Shop Pnlone @ : www.gurutvakaryalay.com

अमोघ महामृत्युंजय कवच

अमोघ् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा **सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र** जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं।

अमोघ् महामृत्युंजय कवच

कवच बनवाने हेतु:

अपना नाम, पिता-माता का नाम, गोत्र, एक नया फोटो भेजे

कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। >> Order Now

GURUTVA KARYALAY

91+ 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Website: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |

श्री हनुमान यंत्र

शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुशार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं। श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 325 से 12700 तक** >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,

BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> Shop Online | Order Now

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY :Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(नोटः इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

>> Shop Online | Order Now

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित 22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

पुरुषाकार शनि यंत्र

पुरुषाकार शनि यंत्र (स्टील में) को तीव्र प्रभावशाली बनाने हेतु शनि की कारक धातु शुद्ध स्टील(लोहे) में बनाया गया हैं। जिस के प्रभाव से साधक को तत्काल लाभ प्राप्त होता हैं। यदि जन्म कुंडली में शनि प्रतिकूल होने पर व्यक्ति को अनेक कार्यों में असफलता प्राप्त होती है, कभी व्यवसाय में घटा, नौकरी में परेशानी, वाहन दुर्घटना, गृह क्लेश आदि परेशानीयां बढ़ती जाती है ऐसी स्थितियों में प्राणप्रतिष्ठित ग्रह पीड़ा निवारक शनि यंत्र की अपने को व्यपार स्थान या घर में स्थापना करने से अनेक लाभ मिलते हैं। यदि शनि की ढ़ैया या साढ़ेसाती का समय हो तो इसे अवश्य पूजना चाहिए। शनियंत्र के पूजन मात्र से व्यक्ति को मृत्यु, कर्ज, कोर्टकेश, जोडो का दर्द, बात रोग तथा लम्बे समय के सभी प्रकार के रोग से परेशान व्यक्ति के लिये शनि यंत्र अधिक लाभकारी होगा। नौकरी पेशा आदि के लोगों को पदौन्नति भी शनि द्वारा ही मिलती है अतः यह यंत्र अति उपयोगी यंत्र है जिसके द्वारा शीघ्र ही लाभ पाया जा सकता है।

मूल्य: 1225 से 8200 >> Shop Online | Order Now

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित

22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

शनि तैतिसा यंत्र

शनिग्रह से संबंधित पीडा के निवारण हेतु विशेष लाभकारी यंत्र।

मूल्य: 640 से 12700 >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं।

Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> Shop Online | Order Now

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in, >> Shop Online | Order Now

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र

मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रह्माण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	550	1" X 1"	370	1" X 1"	325
2" X 2"	910	2" X 2"	640	2" X 2"	550
3" X 3"	1450	3" X 3"	1050	3" X 3"	910
4" X 4"	2350	4" X 4"	1450	4" X 4"	1225
6" X 6"	3700	6" X 6"	2800	6" X 6"	2350
9" X 9"	9100	9" X 9"	4600	9" X 9"	4150
12" X12"	12700	12" X12"	9100	12" X12"	9100

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	Diamond (Special)	Green Emerald (Special)	Naturel Pearl (Special)	Ruby (Old Berma) (Special)	Green Emerald (Special)
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	Red Coral (Special)	Y.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	Y.Sapphire (Special)
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

>> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Shop Online @ : www.gurutvakaryalay.com

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‌भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राह्मणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 2350 >>Order Now

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‌भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

GURUTVA KARYALAY
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
Shop Online @ : www.gurutvakaryalay.com

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Shop Online @ : www.gurutvakaryalay.com

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र
(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

>> Shop Online | Order Now

संपर्क करें। GURUTVA KARYALAY
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

अमोघ महामृत्युंजय कवच

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा **सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र** जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित किया जाता हैं इसलिए कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं। >> Order Now

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच
कवच बनवाने हेतु:
अपना नाम, पिता-माता का नाम,
गोत्र, एक नया फोटो भेजे

राशी रत्न एवं उपरत्न

सभी साईज एवं मूल्य व क्वालिटि के असली नवरत्न एवं उपरत्न भी उपलब्ध हैं।

विशेष यंत्र

हमारें यहां सभी प्रकार के यंत्र सोने-चांदि-ताम्बे में आपकी आवश्यक्ता के अनुसार किसी भी भाषा/धर्म के यंत्रो को आपकी आवश्यक डिजाईन के अनुसार २२ गेज शुद्ध ताम्बे में अखंडित बनाने की विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के रत्न एवं उपरत्न व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं। ज्योतिष कार्य से जुड़े बधु/बहन व रत्न व्यवसाय से जुडे लोगो के लिये विशेष मूल्य पर रत्न व अन्य सामग्रीया व अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Shop Online:- www.gurutvakaryalay.com

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> **Shop Online | Order Now**

Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, preciouse and semi preciouse Gems stone deliver on your door step.

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है । अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach	3250	शनि साड़ेसाती और ढैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach	1050

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach ……..…………………..	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach ……..……………………….	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach ……..………………..	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach ……..…………………..	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach ……..………………………..	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ……..………………..	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..…………………..…...	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach ……..………………	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..………………..…………	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ……..…………………………...	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach ……..…………………………….	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach ……..…………………………….	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach ……..……………………….	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach ……..………………………….	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach ……..…………………………….	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..…………………..…...	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach ……..…………………………..	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..………………..…………	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach ……..…………………………….	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach ……..………………………	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ……..…………………………...	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach ………………………………..	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ……………………………...	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ………………………..	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………...	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach ……..………………………….	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ..……………………...	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach ……………………	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach …………………………………	820

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

वाणी पुष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640

उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and www.gurutvajyotish.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire **Bangkok**	**(बैंकोक** पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : **Bangkok** (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

>> **Shop Online** | **Order Now**

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका

अगस्त-2020 | अंक 1

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।

जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

© GURUTVA JYOTISH | © Articles Copyright Rights Reserved By GURUTVA KARYALAY

GURUTVA JYOTISH

Monthly
AUG-2020